R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में
विज्ञापन बुक कराने हेतु
सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni777@gmail.com

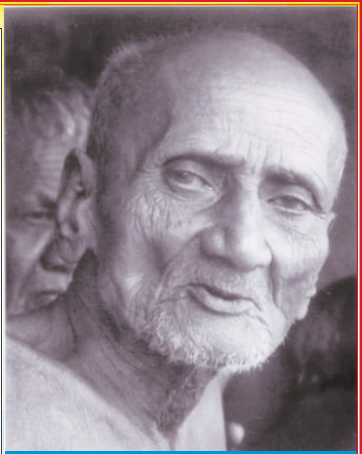
बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

क्षमावाणी पर्व विशेषांक
1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 48 कुल पृष्ठ 24 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 21 सितम्बर 2026, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

पर्युषण पर्व: मंदिर में नहीं, मन के भीतर उतरने का पर्व

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

जहाँ पूजा की थाली से अधिक महत्वपूर्ण है अपने भीतर झाँकने का साहस। संयम, त्याग, क्षमा और आत्मशुद्धि का ऐसा महापर्व, जो कैलेंडर पर समाप्त नहीं, हमारे व्यवहार में दिखाई देना चाहिए। पर्युषण पर्व जैन जीवन का केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, यह आत्मा के द्वार पर दस्तक देने वाला वह अवसर है, जब मनुष्य कुछ समय के लिए संसार की भागदौड़, प्रतिस्पर्धा, संग्रह, प्रतिष्ठा और बाहरी प्रदर्शन से हटकर स्वयं के भीतर झाँकता है। वर्ष भर हम दूसरों को देखते हैं, कौन आगे बढ़ गया, किसने क्या खरीदा, किसने कितना कमाया, किसे कितना सम्मान मिला, किसने क्या गलती की और समाज में क्या गलत हो रहा है। लेकिन पर्युषण हमसे **एक बिल्कुल अलग प्रश्न पूछता है-** ''तुमने दूसरों को बहुत देख लिया, अब एक बार स्वयं को देखो।'' मंदिरों में पूजा होगी, अभिषेक होंगे, सामायिक होगी, स्वाध्याय होगा, तप और उपवास होंगे, साधु-संतों के प्रवचन होंगे, घरों में सात्त्विक वातावरण बनेगा लेकिन इन सबके बीच यदि हमारे भीतर का क्रोध, अहंकार, लोभ, ईर्ष्या, कटुता और द्वेष ज्यों का त्यों बना रहा, तो हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि हमने पर्युषण को कितना समझा? मंदिर जाना आसान है, मन के भीतर जाना कठिन है। सामायिक करना आसान है, मन को साम्य में रखना कठिन है। उपवास करना कठिन है, लेकिन क्रोध का उपवास उससे भी कठिन है। क्षमा माँगना सरल है, लेकिन अहंकार छोड़कर क्षमा करना कहीं अधिक कठिन है। इसलिए पर्युषण को केवल पर्व की तरह नहीं, बल्कि ''आत्मा का वार्षिक ऑडिट'' समझना चाहिए। जैसे व्यापारी वर्ष के अंत में अपनी खाता-बही खोलता है और देखता है कि कहाँ लाभ हुआ, कहाँ हानि हुई, कहाँ गलती हुई और कहाँ सुधार करना है, वैसे ही पर्युषण हमें अपने जीवन की खाता-बही खोलने का अवसर देता है। इस ऑडिट में बैंक बैलेंस नहीं, मन का बैलेंस देखना है; संपत्ति नहीं, संस्कारों की संपत्ति देखनी है, बाहरी उपलब्धियाँ नहीं, आंतरिक शुद्धता देखनी है।

1. पर्युषण: धर्म का नहीं, स्वयं का उत्सव – हम सामान्यत: उत्सव बाहर मनाते हैं। घर सजाते हैं, नए कपड़े पहनते हैं, कार्यक्रम करते हैं, लोगों से मिलते हैं और अपनी खुशियाँ बाँटते हैं। लेकिन पर्युषण का सौंदर्य इस बात में है कि यह हमें बाहर सजने से अधिक अंदर सँवरने का निमंत्रण देता है। घर की सफाई झाड़ू से हो सकती है, शरीर की सफाई स्नान से हो सकती है, कपड़ों की सफाई पानी से हो सकती है, लेकिन मन में वर्षों से जमा क्रोध, ईर्ष्या, शिकायत, अपमान की स्मृतियाँ, बदले की भावना और अहंकार किससे साफ होंगे? इसके लिए चाहिए-स्वाध्याय, संयम, प्रायश्चित्त, क्षमा और आत्मचिंतन। हममें से अनेक लोग वर्षों पुरानी घटनाओं को अपने

शेष पृष्ठ 8 पर......

THAILAND
9 DAYS TOUR
थाईलैंड जैन मंदिर
PHUKET, KARABI
BANGKOK, PATTAYA
Date : 20 Nov, 16 Dec, 8 Jan, 23 Jan

AUSTRALIA
10 DAYS TOUR
आस्ट्रेलिया जैन मंदिर
MELBOURNE
SYDNEY, BRISBANE, GOLD COAST
Date : 1 Dec, 14 Dec, 18 Jan, 13 Feb

JAPAN
8 DAYS TOUR
जापान जैन मंदिर
TOKYO, OSAKA
MT FUJI, HIROSHIMA, BULLET TRAIN
Date : 14 Nov, 2 Dec, 20 Jan, 14 Feb

SRILANKA
7 DAYS TOUR
श्रीलंका जैन मंदिर
COLOMBO, KANDY
BENTOTA, NUWARAELIYA
Date : 28 Nov, 18 Dec, 5 Jan, 30 Jan

Vayudoot
World Travels India Pvt. Ltd.
100% Pure Vegetarian Jain Food
ला: नेमचन्द जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

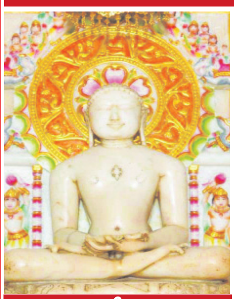
869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्र:
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री)
9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष)
095880-20330

JK MASALE
SINCE 1997

Buy online on
jkcart.com
– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

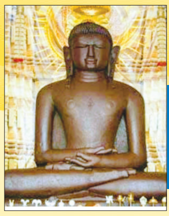

श्री श्री 1008
आदिनाथ भगवान

'क्षमा वीरस्य भूषणम'

क्षमावाणी के परम पुनीत पावन स्वर्णिम शुभ अवसर पर भारतवर्ष के समस्त श्रद्धालुओं से हृदय के गहन स्थल से हार्दिक क्षमा याचना व सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधुसन्तों के पावन चरणों में नमन शत् शत् अभिनंदन

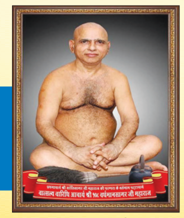

आचार्य
वर्धमान सागर जी
महाराज

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

निर्मल-पुष्पा, जेसिका बिन्दायका

बगरू (जयपुर) निवासी, कोलकाता प्रवासी

EVERGREEN HOSIERY INDUSTRIES PVT LTD

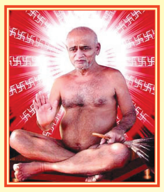

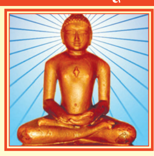

'क्षमा वीरस्य भूषणम'

बीते वर्ष में परोक्ष या अपरोक्ष रूप से मेरी वाणी या व्यवहार द्वारा आपके मन को कोई ठेस पहुँची हो तो कृपया क्षमा करें।।

उत्तम क्षमा

उत्तम क्षमा

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

परम मुनिभक्त एवं प्रसिद्ध समाजसेवी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रत्न व्यवसायी

विवेक काला-आशा काला

पुष्पलता काला-धर्म पत्नी स्व. श्री विद्याविनोद जी काला (माँ)
आलोक-रीटा, अजय-सुनिता, संजय-सरिता (भाई-बहू), अर्पित-रिद्धिमा, मानस-सोनम, अदित-श्रद्धा, नमन-उर्वशी (पुत्र-वधू), आस्था-धर्म पत्नी स्व. श्री पारस कुमार जी सेठी, नई दिल्ली, श्रद्धा-विकास जी पाटनी, मदनगंज-किशनगढ़, गरिमा-राहुल जी बाकलीवाल-दिल्ली, अस्मिता-आदित्य जी बैद (बेटी-दामाद), विवान पाटनी, चाहत जैन सेठी, वान्या पाटनी, आशना, आहाना बाकलीवाल-दिल्ली, आध्या बैद (दोहिती-दोहिता), अनाया, रियान, आरव, अव्यन, वेदान्त, आव्या, युवान, (पौत्र-पौत्रियां) सहित समस्त काला परिवार जयपुर

आवासः K-Mansion, C-138, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर, जयपुर-302004 (राजस्थान)

नेमीनाथ भगवान छोटा गिरनार जी बापू गांव

क्षमावाणी के परम पुनीत पावन स्वर्णिम शुभ अवसर पर भारतवर्ष के समस्त श्रद्धालुओं से हृदय के गहन स्थल से हार्दिक क्षमा याचना व सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन शत् शत् अभिनंदन

मुनिश्री 108 प्रज्ञासागर जी मुनिराज का मंगल आशीर्वाद

अनिल कुमार जी पाण्ड्या
(संरक्षकः प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र, छोटा गिरनार)

उत्तम क्षमा

श्रीमती उषा जी पाण्ड्या
बनेठा वाले

उत्तम क्षमा

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

नितिन-निशा जैन, विपिन-श्रीमती परमा जैन (पुत्र-पुत्रवधु), अदिति, जीविशा, इनायशा (पौत्रियां) एवं समस्त बनेठा वाला परिवार, सांगानेर, जयपुर (राज.)

-: प्रतिष्ठान :-

- USHA TEXTILES, Ashawala Sikarpura Road, Sanganer, Jaipur (Raj.)
- USHA DYEING WORKS, 2 - Prem Colony, Behind Hanuman Tube Well Co., Tonk Road, Sanganer, Jaipur (Raj.)
- Nemi Nath Petrol Pump
Kareda, Kothun Lalsot Road (Raj.)

Mo. 9829068263, 9829058263, 9928367143

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला
RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com
SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

आचार्य कुंदकुंद की कृति तिरुक्कुरल पहुंचा विश्व मंच पर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन को भेंट किया प्राचीन तमिल ग्रंथ का रूसी संस्करणः जैन समाज में गौरव और प्रसन्नता

1330 दोहों वाली महान कृति, पुतिन को मोदी ने दी भेंट

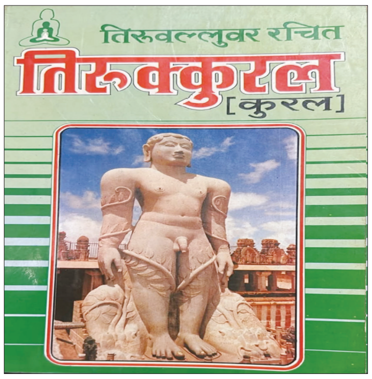

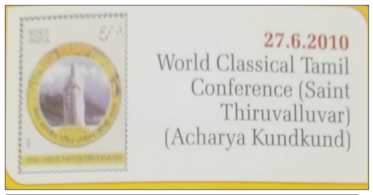

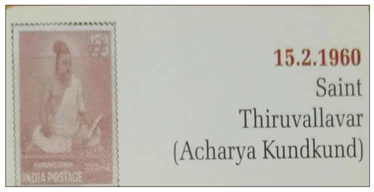

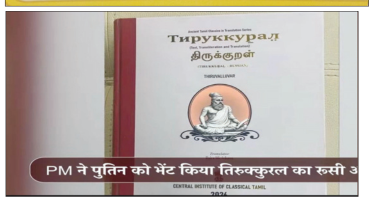

PM ने पुतिन को भेंट किया तिरुक्कुरल का रूसी अ

(राजेन्द्र जैन महावीर की रिपोर्ट)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिक्स सम्मेलन के अवसर पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन को प्राचीन तमिल ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' का रूसी अनुवाद भेंट किया। भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा से जुड़े इस महान ग्रंथ का विश्व के प्रमुख राष्ट्राध्यक्ष को भेंट किया जाना भारतीय संस्कृति और साहित्य के वैश्विक सम्मान का महत्वपूर्ण अवसर है। इस घटना को लेकर जैन समाज में विशेष प्रसन्नता और गौरव की अनुभूति है। जैन परंपरा के अनुसार तिरुवल्लुवर ही आचार्य कुंदकुंद थे और तिरुक्कुरल की रचना आचार्य कुंदकुंद ने ही की थी। इसलिए प्रधानमंत्री द्वारा तिरुक्कुरल को विश्व के शीर्ष नेतृत्व तक पहुंचाना जैन समाज के लिए विशेष महत्व रखता है।

लगभग दो हजार वर्ष प्राचीन माने जाने वाले तिरुक्कुरल में मानव कल्याण के अनेकों दोहे हैं। जीवन के नैतिक, सामाजिक और व्यावहारिक पक्षों को अत्यंत संक्षिप्त एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के कारण यह ग्रंथ तमिल साहित्य की अमूल्य धरोहर माना जाता है। तमिल परंपरा में इसे 'तमिल वेद' के रूप में भी सम्मानित किया जाता है।

तिरुक्कुरल का संदेश किसी एक समाज या संप्रदाय तक सीमित नहीं है। इसमें सत्य, अहिंसा, दया, संयम, तप, त्याग, परोपकार, शाकाहार, सदाचार और आत्मानुशासन जैसे अनेक जीवन-मूल्यों का प्रभावशाली प्रतिपादन मिलता है। यही कारण है कि यह ग्रंथ संपूर्ण मानवता के लिए उपयोगी जीवन-दर्शन प्रस्तुत करता है।

तिरुवल्लुवर ही आचार्य कुंदकुंदः जैन समाज में आचार्य कुंदकुंद का स्थान अत्यंत विशिष्ट और श्रद्धापूर्ण है। दिगंबर जैन परंपरा के महान आचार्य के रूप में उनका स्मरण प्रत्येक शुभ कार्य के मंगलाचरण में किया जाता है।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणि।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम।।

जैन विद्वत् परंपरा में तिरुवल्लुवर की पहचान आचार्य कुंदकुंद के रूप में की गई है। तिरुक्कुरल में अहिंसा, जीवदया, संयम, तप, त्याग और सदाचार जैसे जिन जीवन-मूल्यों का प्रभावशाली प्रतिपादन हुआ है, वे जैन दर्शन की मूल भावना से गहरे जुड़े हुए हैं।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री टी. के. वेद इन्दौर ने इस संदर्भ में बताया कि तिरुवल्लुवर और आचार्य कुंदकुंद की पहचान को लेकर जैन समाज में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं साहित्यिक संदर्भ उपलब्ध हैं। भारत सरकार ने वर्ष 1960 में तिरुवल्लुवर के सम्मान में डाक टिकट जारी किया था। जैन समाज में इस टिकट को तिरुवल्लुवर और आचार्य कुंदकुंद की पहचान से जुड़े महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में देखा जाता है। इसी प्रकार वर्ष 2010 में आयोजित विश्व शास्त्रीय तमिल सम्मेलन के लोगों में भी तिरुवल्लुवर की प्रतिमा को प्रमुख स्थान दिया जाकर आचार्य कुंद कुंद भी लिखा था। जैन समाज इस पूरे संदर्भ को आचार्य कुंदकुंद की महान ज्ञान-परंपरा से जोड़कर गौरव के साथ देखता है।

प्रोफेसर डॉ. वीर सागर शास्त्री ने बताए महत्वपूर्ण संदर्भः लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रोफेसर डॉ. वीर सागर शास्त्री, जो कुंदकुंद भारती दिल्ली से प्रकाशित प्राकृत विद्या के प्रधान संपादक भी हैं, ने तिरुक्कुरल के जैन परंपरा से संबंध को लेकर महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि तिरुक्कुरल के मंगलाचरण में भगवान आदिनाथ का वर्णन मिलता है। इसके अंग्रेजी अनुवाद में भी भगवान आदिनाथ का नाम है बल्कि उन्हें वीतराग, सर्वज्ञ, सिद्ध व अष्ट गुणों से सुशोभित कहा गया है। डॉ. वीर सागर शास्त्री के अनुसार तिरुक्कुरल में प्रयुक्त अनेक शब्द और अवधारणाएं जैन परंपरा में प्रचलित हैं। साथ ही नरक आदि लोकों का वर्णन भी जैन परंपरा के अनुरूप मिलता है। इन सभी संदर्भों को देखते हुए तिरुक्कुरल को जैन परंपरा से संबंधित ग्रंथ के रूप में देखने के महत्वपूर्ण आधार मिलते हैं। उन्होंने इसे एक उल्लेखनीय साहित्यिक एवं दार्शनिक तथ्य बताते हुए कहा कि इस विषय को गंभीरता से अध्ययन और लिपिबद्ध किए जाने की आवश्यकता है।

राष्ट्र संत आचार्य विद्यानंद जी की प्रेरणा से जैन समाज तक पहुंचा तिरुक्कुरलः तिरुक्कुरल के जैन समाज में अध्ययन और प्रचार-प्रसार की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य हुआ है। राष्ट्रसंत आचार्य विद्यानंद जी महाराज तिरुवल्लुवर के साहित्य का प्रमुखता से अध्ययन करते थे। उनकी प्रेरणा से कुंदकुंद भारती द्वारा वर्ष 1991 में तिरुक्कुरल का प्रकाशन किया गया। इस संस्करण का हिंदी अनुवाद पंडित गोविंद राय जैन शास्त्री ने किया था। ग्रंथ के प्रकाशन में भगवान बाहुबली स्वामी का चित्र भी विशेष रूप से अंकित है। कुंदकुंद भारती से तिरुक्कुरल के इस संस्करण के अब तक लगभग छह संस्करण में एक लाख प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। यह तथ्य इस बात को रेखांकित करता है कि जैन समाज में तिरुक्कुरल के अध्ययन और उसके संदेश को समझने की परंपरा काफी महत्वपूर्ण रही है। आचार्य विद्यानंद जी महाराज द्वारा इस ग्रंथ के अध्ययन और प्रकाशन को प्रोत्साहन दिया जाना इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है।

तिरुक्कुरल में जीवन के विविध पक्षों से जुड़े अनेक विषयों का विवेचन किया गया है। ये विषय व्यक्ति को अपने आचरण को श्रेष्ठ बनाने, परिवार और समाज के प्रति दायित्व समझने तथा सत्य, करुणा, संयम और सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

मानवता के लिए ग्रंथ, जैन समाज के लिए गौरवः जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेन्द्र जैन 'महावीर' ने बताया कि तिरुक्कुरल का मूल संदेश संपूर्ण मानवता के लिए है। इसकी शिक्षाएं देश, काल और भाषा की सीमाओं से परे मनुष्य को श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं। यही कारण है कि आज इसके रूसी अनुवाद को रूस के राष्ट्रपति को भेंट किया जाना भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा के वैश्विक सम्मान का प्रतीक माना जा रहा है।

जैन समाज के लिए इस अवसर का महत्व और भी बढ़ जाता है। जिस तिरुक्कुरल को आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी विश्व के शीर्ष नेतृत्व तक पहुंचा रहे हैं, जैन परंपरा उसे आचार्य कुंदकुंद की महान कृति के रूप में देखती है।

आचार्य कुंदकुंद दिगंबर जैन समाज की आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा के ऐसे महामनीषी हैं, जिनका नाम जैन धर्म के मंगलाचरण में श्रद्धापूर्वक लिया जाता है। ऐसे महान आचार्य की ज्ञान-परंपरा से जुड़े तिरुक्कुरल का विश्व मंच पर सम्मान होना निश्चित रूप से जैन समाज के लिए गौरव का विषय है।

श्री टी. के. वेद ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन को तिरुक्कुरल का रूसी संस्करण भेंट किए जाने से भारतीय ज्ञान-परंपरा का संदेश रूस तक पहुंचा है। साथ ही जैन समाज के लिए यह अवसर अपने महान आचार्य कुंदकुंद की साहित्यिक और दार्शनिक विरासत को स्मरण करने तथा उस पर गर्व करने का भी अवसर है।

तिरुक्कुरल मानवता की धरोहर है और तिरुवल्लुवर के रूप में आचार्य कुंदकुंद का यह महान चिंतन आज विश्व मंच पर सम्मान पा रहा है-यह जैन समाज के लिए निश्चित रूप से आनंद, गौरव और आत्मीय प्रसन्नता का विषय है।

संलग्न संदर्भ सामग्री –

1. वर्ष 1960 में भारत सरकार द्वारा जारी तिरुवल्लुवर के सम्मान में डाक टिकट।
2. वर्ष 2010 में आयोजित विश्व शास्त्रीय तमिल सम्मेलन का लोगो।
3. वर्ष 1991 में आचार्य विद्यानंद जी महाराज की प्रेरणा से कुंदकुंद भारती द्वारा प्रकाशित तिरुक्कुरल ग्रंथ।
4. तिरुक्कुरल के जैन परंपरा से संबंध के संदर्भ में प्रोफेसर डॉ. वीर सागर शास्त्री द्वारा बताए गए महत्वपूर्ण तथ्य।
5. कुंदकुंद भारती से प्रकाशित तिरुक्कुरल के विभिन्न संस्करणों का संदर्भ।

दस दिनों में बाहर नहीं, भीतर की यात्रा का संकल्प

दशलक्षण महापर्व

डॉ. सुनील जैन
'संचय', ललितपुर,
सह सम्पादक
जैन गजट

16 सितम्बर 2026 से जैन समाज का पावन दशलक्षण महापर्व प्रारंभ हो गया है। देशभर के जिनालयों में तैयारियां चल रही हैं, धार्मिक आयोजन, विधान, प्रवचन हो रहे हैं और श्रद्धा-भक्ति का वातावरण निर्मित है। पर्व का नाम आते ही सामान्यतः हमारे मन में उत्सव, सजावट, मिठाइयों, मेलों और धार्मिक आयोजनों की तस्वीर उभरती है, किंतु जैन परंपरा में दशलक्षण महापर्व का वास्तविक स्वरूप इससे कहीं अधिक गहन और आत्मस्पर्शी है।

यह पर्व बाहरी उल्लास से अधिक अंतर्मन के उल्लास का पर्व है। यह भोग का नहीं, योग और त्याग का पर्व है, प्रदर्शन का नहीं, परिष्कार का पर्व है, संसार की ओर बढ़ने का नहीं, स्वयं की ओर लौटने का अवसर है।

पर्युषण-अपने भीतर लौटने का आह्वान: 'पर्युषण' का भाव आत्मा के समीप आने से जुड़ा है। अर्थात् इन दिनों मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप के निकट पहुंचने का प्रयास करना चाहिए। बाहरी संसार की आपाधापी से कुछ समय विराम लेकर अपने भीतर झांकना, अपने दोषों को पहचानना और आत्मगुणों को विकसित करना ही इस पर्व का मूल प्रयोजन है।

जैन दर्शन में आत्मा का स्वभाव अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख और अनंत शक्ति से संपन्न माना गया है। किंतु कर्मों और कषायों के आवरण के कारण उसका प्रकाश ढका हुआ है। दशलक्षण महापर्व उन्हीं आवरणों को हटाने की साधना का अवसर प्रदान करता है। इसलिए यह पर्व केवल मंदिर जाने का नहीं, मन के मंदिर को निर्मल करने का पर्व है।

दस दिन, दस धर्म और आत्म-विकास की दस सीढ़ियां: दशलक्षण पर्व के दस दिन वास्तव में आत्मशुद्धि की दस सीढ़ियां हैं-उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य।

उत्तम क्षमा हमें क्रोध से मुक्त करती है। उत्तम मार्दव अहंकार को गलाता है व उत्तम आर्जव जीवन में सरलता और निष्कपटता लाता है। उत्तम शौच लोभ और आंतरिक मलिनता को दूर करता है। उत्तम सत्य वाणी और व्यवहार को पवित्र करता है। उत्तम संयम इंद्रियों और इच्छाओं पर अंकुश लगाता है।

उत्तम तप आत्मबल को जाग्रत करता है। उत्तम त्याग संग्रह की मानसिकता को कम करता है। उत्तम आकिंचन्य 'मेरा-मेरा' की भावना से मुक्ति का मार्ग दिखाता है और उत्तम ब्रह्मचर्य आत्मशक्ति को ऊर्ध्वगामी बनाता है अर्थात् दशलक्षण केवल दस शब्द नहीं, जीवन को बदलने वाली दस दिशाएं हैं।

पर्व की सफलता मंदिर की भीड़ से नहीं, कषायों की कमी से मापी जाए। आज एक प्रश्न स्वयं से पूछने की आवश्यकता है-क्या दशलक्षण पर्व वास्तव में हमारे जीवन को बदल रहा है?

हमारे मंदिरों में श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ रही है, धार्मिक आयोजन भव्य हो रहे हैं, पूजा-पाठ और विधान का विस्तार हो रहा है, लेकिन क्या उसी अनुपात में हमारे भीतर का क्रोध कम हुआ? अहंकार घटा? छल-कपट कम हुआ? लोभ पर अंकुश लगा?

यदि दस दिनों तक धर्म की चर्चा करने के बाद भी हमारा व्यवहार पहले जैसा ही है, यदि हम छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित हो जाते हैं, अपमान सहन नहीं कर पाते, दूसरों की सफलता से ईर्ष्या करते हैं, असत्य और छल को व्यवहार की चतुराई समझते हैं और संग्रह की दौड़ में निरंतर आगे बढ़ते जाते हैं, तो हमें दशलक्षण पर्व के मर्म पर पुनर्विचार करना होगा।

पर्व की सार्थकता इस बात में नहीं कि हमने कितनी पूजा की, कितने उपवास किए या कितने धार्मिक आयोजन किए, उसकी वास्तविक सार्थकता इस बात में है कि हमने अपने भीतर क्या बदला।

जब धर्म प्रदर्शन बन जाए तो आत्ममंथन जरूरी है: आज दशलक्षण महापर्व भी कहीं-कहीं बाह्य आडंबर की चकाचौंध में अपना मूल स्वरूप खोता दिखाई देता है। उत्साह है, श्रद्धालु हैं, आयोजन हैं, सजावट है, प्रचार है-लेकिन उस अनुपात में आत्मचिंतन और आत्मानुशासन दिखाई दे, यह सबसे बड़ी आवश्यकता है। यह कहना उचित नहीं होगा कि साधना करने वाले लोग नहीं हैं। समाज में आज भी बड़ी संख्या में ऐसे श्रावक-श्राविकाएं हैं जो निष्ठापूर्वक व्रत, उपवास, स्वाध्याय, संयम और आत्मचिंतन करते हैं। उनकी साधना निश्चय ही वंदनीय है। लेकिन किसी भी परंपरा की शक्ति उसके आदर्शों के साथ-साथ उसके आत्म निरीक्षण में भी होती है। इसलिए विसंगतियों पर बात करना धर्म की आलोचना नहीं, बल्कि धर्म के मर्म की रक्षा का प्रयास है।

क्षमा-सिर्फ मंच का आयोजन नहीं, मन का परिवर्तन बने: क्षमा पर्व दशलक्षण की साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है। किंतु कहीं-कहीं क्षमा भी औपचारिकता बनती जा रही है। संदेश भेज दिया, एक-दूसरे से क्षमा मांग ली और अगले ही दिन वही कटुता, वही शिकायत, वही अहंकार फिर लौट आया-तो क्षमा का वास्तविक उद्देश्य कहां पूरा हुआ?

क्षमा का अर्थ केवल शब्दों में 'मिच्छामि दुक्कडम' कहना नहीं, बल्कि मन से द्वेष को विसर्जित करना है। जिस व्यक्ति ने हमें चोट पहुंचाई, उसके प्रति हमारे भीतर की कटुता समाप्त हो जाएय और जिन लोगों को हमने दुख पहुंचाया, उनके प्रति अपने व्यवहार का ईमानदारी से परीक्षण करें-तभी क्षमा आत्मा का आभूषण बनती है।

व्रत और उपवास-शरीर के साथ मन का भी अनुशासन: दशलक्षण पर्व में व्रत और उपवास की विशेष महत्ता है। उपवास केवल भोजन से विरति का नाम नहीं है। यदि अन्न का त्याग हो गया लेकिन क्रोध का त्याग नहीं हुआ, भोजन कम हो गया लेकिन लोभ नहीं घटा, शरीर तप गया लेकिन अहंकार बढ़ गयाकृतो साधना अधूरी रह जाती है।

सच्चा उपवास वह है जिसमें केवल पेट नहीं, विकार भी खाली हों।

व्रत शरीर को कष्ट देने के लिए नहीं, आत्मबल को जाग्रत करने के लिए है। इसलिए उपवास के साथ विचारों की शुद्धि, वाणी का संयम, व्यवहार की सरलता और कषायों पर नियंत्रण भी आवश्यक है।

धर्म के नाम पर अर्थ-संग्रह-एक गंभीर प्रश्न: धार्मिक आयोजनों के लिए समाज से सहयोग लेना परंपरा का हिस्सा हो सकता है, लेकिन धर्म के नाम पर चंदा संग्रह, आर्थिक अपारदर्शिता अथवा कमीशन की प्रवृत्ति जैसी विसंगतियां चिंता का विषय हैं। दान का उद्देश्य धर्मकार्य में सहयोग है, न कि व्यक्तिगत लाभ अथवा आर्थिक व्यवस्था में अनैतिक हिस्सेदारी। जब धर्म के नाम पर अर्थ प्रमुख हो जाता है, तब धर्म की आत्मा कहीं पीछे छूटने लगती है।

इसलिए धार्मिक संस्थाओं और आयोजकों के लिए पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और नैतिकता उतनी ही आवश्यक है जितनी पूजा-पद्धति और आयोजन की भव्यता।

बाजार नहीं, आत्मा का उत्सव बने दशलक्षण: आज हमारा जीवन बाजारवादी संस्कृति से प्रभावित है। हर पर्व के साथ उपभोग बढ़ता जा रहा है। ऐसे समय में दशलक्षण महापर्व हमें एक वैकल्पिक जीवन-दृष्टि देता है-इच्छाओं को सीमित करो, संग्रह को घटाओ, संयम को अपनाओ और भीतर के सुख को पहचानो।

जैन दर्शन का 'अपरिग्रह' आज के तनावग्रस्त समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक संदेश है। जितना अधिक संग्रह, उतनी अधिक चिंताय जितनी अधिक इच्छाएं, उतनी अधिक बेचैनी। इसके विपरीत संयम मनुष्य को भीतर से हल्का करता है।

दशलक्षण इसलिए केवल धार्मिक कैलेंडर की दस तिथियां नहीं हैं, वे मानव जीवन को संतुलित और शांत बनाने का दर्शन हैं।

मंदिर में दीप के साथ मन में भी दीप जलाएं: आइए, इस दशलक्षण महापर्व पर हम कुछ संकल्प लें - मंदिर जाएंगे, लेकिन अपने भीतर भी जाएंगे।

पूजा करेंगे, लेकिन अपने दोषों की भी पूजा-अर्थात् पहचान और परिष्कार-करेंगे। व्रत रखेंगे, लेकिन कषायों को भी क्षीण करने का प्रयास करेंगे।

क्षमा मांगेंगे, लेकिन क्षमा करने का साहस भी रखेंगे। दान देंगे, लेकिन दान में पारदर्शिता और निस्वार्थता रखेंगे। धर्म सुनेंगे, लेकिन उसे अपने आचरण में उतारेंगे क्योंकि धर्म की पहचान हमारे शब्दों से नहीं, हमारे व्यवहार से होती है।

दशलक्षण का अंतिम संदेश-विकारों से विरक्ति, आत्मा से अनुरक्ति दशलक्षण महापर्व हमें संसार से भागने की नहीं, संसार में रहते हुए स्वयं को बदलने की प्रेरणा देता है। क्रोध के स्थान पर क्षमा, अहंकार के स्थान पर विनम्रता, कपट के स्थान पर सरलता, लोभ के स्थान पर संतोष, असंयम के स्थान पर संयम, भोग के स्थान पर तप, संग्रह के स्थान पर त्याग और अपरिग्रह-यही इस महापर्व की वास्तविक उपलब्धि है।

पर्व तब सफल होगा जब दस दिनों के बाद हमारे घरों की सजावट भले ही उतर जाए, लेकिन हमारे भीतर का संस्कार बना रहे। मंदिरों के ध्वज भले ही अपनी जगह स्थिर रहें, लेकिन हमारे जीवन की दिशा बदल जाए। पर्व समाप्त हो जाए, लेकिन दशलक्षण हमारे आचरण में निरंतर जीवित रहें।

आइए, इस बार दशलक्षण महापर्व को केवल मनाएं नहीं-जिएं। केवल धर्म की चर्चा न करें, धर्म को अपनी चर्या बनाएं। केवल मंदिर में दीप न जलाएं, अपने अंतर्मन में भी आत्मज्ञान का दीप प्रज्वलित करें। यही पर्युषण का सार है, यही दशलक्षण की साधना है और यही जिनवाणी का जीवन-संदेश है-''विकारों से विरक्ति, आत्मा से अनुरक्ति और जीवन में दशलक्षण धर्म की अभिव्यक्ति।''

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

सीकर में विराजमान
परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य वर्धमान सागर वचन - भाग 1

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री वर्धमान सागरजी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

किसी को गलत कहने के लिए तुम्हारा सही होना जरूरी है।

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

सुधान्शु कासलीवाल अध्यक्ष श्री महावीर जी
विवेक काला, (कालाजी ज्वैलर्स) जयपुर
श्रीपाल भागचन्द चूड़ीवाल, श्यामनगर जयपुर
राजेन्द्र कटारिया, अहमदाबाद

धर्मचंद पहाड़िया जयपुर राज. केन्द्रीय कार्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी
इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल, निखार, जयपुर
कैलाशचंद पाटनी किशनगढ़ (उरसेवा वाले)
Caption Tours And Travels Co. Kuwait (Mr. Rishabh Pachori, Mr.Mayur Pachori, Parsola)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

धर्म से रस पूरित आत्मा में स्थिरता लाकर धर्म को आत्मसात करने से आत्मा परमात्मा बनती है: आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

नगर के सभी जिनालयों में मना रहे दशलक्षण पर्व

सीकर। प्रातःकाल श्री जी के पंचामृत अभिषेक से दशलक्षण विधान की पूजन प्रारंभ हुई जिसमें 10 धर्म की हजारों नर नारियों ने दंग की नसिया पारस भवन में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी सानिध्य में पंडित कीर्तिश एवं अशोक पंडित पारसोला के निर्देशन में पूजन की। इस अवसर पर आचार्य वर्धमान सागर जी ने उत्तम क्षमा धर्म पर अपने उपदेश में बताया कि दशलक्षण पर्व वर्ष में माघ चैत्र और भाद्रपद तीन बार आते हैं किंतु भादों माह में समाज ज्यादा धार्मिक कार्य भक्ति पूर्वक करता है। डा. राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री ने आगे बताया कि पर्व कभी आते, नहीं जाते नहीं। पर्व को जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। यह शाश्वत पर्व है। पर्व में जीवन को अधर्म से धर्म की ओर निर्मल मन करके अपनाना चाहिए। जिस प्रकार वन में लगी दावानल अग्नि को तेज वर्षा का जल बुझाता

है उसी प्रकार आत्मा हृदय में विषय कषाय रूपी दावानल को धर्म पर्व बुझाने में सक्षम है। क्षमा पर्व पृथ्वी के समान सहनशीलता सिखाता है। धर्म मनोरंजन आमोद प्रमोद का नहीं है, धर्म आत्मा का स्वभाव है, धर्म से रसपूरित आत्मा में भक्ति से स्थिरता आत्मसात करने से आत्मा भी परमात्मा बन कर जीवन भी धन्य करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। आचार्य श्री के उपदेश के पूर्व मुनि श्री मुमुक्षु सागर जी ने भी उत्तम क्षमा धर्म की विवेचना की। धर्म सभा के पूर्व आचार्य धर्म सागर सभागृह में आचार्य शांति सागर जी के चित्र के समक्ष सौभाग्यशाली परिवार द्वारा चित्र दीप प्रवज्जलन कर आचार्य श्री के चरण प्रक्षालन कर जिनवाणी भेंट की। शाम को श्री जी और आचार्य श्री की महा आरती के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

प्रथमाचार्य श्री शांति सागर जी का 71 वां अंतर विलय समाधि वर्ष श्रद्धाभक्ति
धार्मिक अनुष्ठान पूर्वक मनाया

सीकर। आचार्य श्री अध्यात्मिक उद्योगपति होकर चारित्र के चक्रवर्ती रहे आचार्य श्री वर्धमान सागर 20वीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज का 71वां अंतर्विलय समाधि दिवस 12 सितंबर भाद्रपद सुदी 2 को वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के संघ सानिध्य में बड़े ही धूमधाम से पार्श्वनाथ भवन दंग की नसिया में मनाया गया। सुबह 6:30 बजे प्रभात फेरी 'पार्श्वनाथ भवन दंग की नसियां से नया मन्दिर कोतवाली रोड होते हुए दीवान जी की नसिया बावड़ी गेट होते हुए बड़ा मंदिर और बड़ा मंदिर से पार्श्वनाथ भवन दंग की नसियां में समापन हुआ। आचार्य वर्धमान सागर धर्म वात्सल्य वर्षायोग समिति, दिगंबर जैन बड़ा मंदिर बीसपंथ आमनाय प्रबंध समिति सीकर सकल दिगंबर जैन समाज सीकर के अनुभव सेठी, आशीष जयपुरिया ने बताया कि श्री धर्म सागर जी सभागृह में आचार्य शांति सागर जी की प्रतिमा का अभिषेक पश्चात् आचार्य शांति सागर विधान की पूजन भक्ति भावपूर्वक श्रद्धालुओं ने की। आचार्य श्री शांति सागर जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रवज्जलन अतिथियों ने किया। नृत्य मंगलाचरण के बाद भावांजलि में श्री धर्मचंद गुरु जी ने गुणानुवाद में अनेक संस्मरण आदर्श और धर्म प्रभावना के प्रतीक बताए। डॉ. राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने उपदेश में बताया कि आचार्य श्री शांति सागर जी का जीवन आदर्श जीवन रहा। वह वर्तमान श्रमण परंपरा के जनक एवं प्रथमाचार्य रहे उनके समय अनेक मुनि थे किंतु आचार्य नहीं थे। आचार्य शांति सागर जी अपने जीवन में समयसार से ज्यादा महत्वपूर्ण महाबंध स्वाध्याय को प्रतिपादित करते थे क्योंकि कर्मबंध से ही समाज ग्रसित है। आचार्य शांति सागर जी जीवन में कभी डरे, रुके, झुके नहीं। वह आध्यात्मिक उद्योगपति थे। चारित्र के चक्रवर्ती थे उनके समान तपस्वी, धर्म प्रभावक स्वाध्याय प्रेमी कोई संत नहीं हुआ। आचार्य श्री ने जीवन में 9938 उपवास किये। उनके ऊपर अनेक बार सर्प, सिंह, चींटी, मकोड़े के उपसर्ग हुए जिन्हें समता पूर्वक सहन किया। इस अवसर पर दंग की नसिया में आचार्य श्री के संयमी जीवन पर आधारित चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन आचार्य श्री वर्धमान सागर जी सानिध्य में हुआ। शाम को श्रीजी की आरती पश्चात आचार्य श्री की महाआरती और सांस्कृतिक कार्यक्रम में हजारों समाज जनों की उपस्थिति रही।

आचार्यश्री के समक्ष म. प्र. के उप मुख्यमंत्री

विद्योदय तीर्थ भोपाल में आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज जी के दर्शन करने हेतु मध्य प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ला जी पधारे एवं आचार्य श्री जी का उन्हें मार्ग निर्देशन एवं आशीर्वाद मिला।

जयपुर निवासी युवा समाजसेवी प्रसिद्ध समाजसेवी विनोद जैन कोटखावदा विमल कीर्ति राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार से हुए सम्मानित

गणाचार्य विरागसागर पुरस्कार 2026 समारोह संपन्न

गणाचार्य विरागसागर महाराज की साधना, त्याग एवं समाज के प्रति उनका योगदान अविस्मरणीय है: वाक्केशरी आचार्य विनिश्चय सागर महाराज

राजाबाबू गोधा, फागी, संवाददाता

6 सितम्बर, जयपुर। वाक्केसरी आचार्य 108 विनिश्चयसागर महाराज के ससंघ के पावन सान्निध्य में गणाचार्य 108 विरागसागर महाराज के द्वितीय समाधि दिवस के अवसर पर आयोजित 'गणाचार्य विरागसागर पुरस्कार-2026' समारोह में राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष, जयपुर निवासी प्रसिद्ध समाजसेवी विनोद जैन कोटखावदा को उनकी जैन धर्म, जैन संस्कृति, जिनवाणी के प्रचार प्रसार के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ एवं उल्लेखनीय कार्यों के लिए गणाचार्य विराग सागर राष्ट्रीय पुरस्कार - 2026 के अन्तर्गत ''विमल कीर्ति राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया, समारोह में समाजसेवा, विद्वत्ता, शोध-अनुसंधान, त्यागी-व्रतियों की सेवा तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले 6 व्यक्तित्वों को गणाचार्य विरागसागर पुरस्कार 2026 से सम्मानित किया गया। पुरस्कार समारोह हर्षोल्लास एवं गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन अखिल भारतीय विनिश्चय ग्रुप के तत्वावधान में श्री पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कविनगर गाजियाबाद द्वारा किया गया। समारोह में समाजसेवा, विद्वत्ता, शोध-अनुसंधान, त्यागी-व्रतियों की सेवा तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले 6 व्यक्तित्वों में जयपुर निवासी युवा समाजसेवी विनोद जैन कोटखावदा को विमल कीर्ति राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समारोह में भारत गौरव गणाचार्य पुरस्कार श्रीमती मंजू जैन पाटनी, कोलकाता को प्रदान किया गया। श्रीमती पाटनी ने वर्ष 2019 में आचार्य 108 विरागसागर महाराज के चातुर्मास के दौरान चार माह तक चौका लगाकर साधु-संतों की सेवा की तथा विरागोदय तीर्थ के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

विमल कीर्ति विद्वत पुरस्कार प्रतिष्ठाचार्य पवन जैन दीवान, सागर को प्रदान किया गया। वहीं विमल कीर्ति शोध-अनुसंधान पुरस्कार डॉ. अल्पना अशोक मोदी, ग्वालियर को प्रदान किया गया, जैन धर्म, जैन संस्कृति, जिनवाणी के प्रचार प्रसार के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों एवं उल्लेखनीय कार्यों के लिए विमल कीर्ति राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री युवा समाजसेवी विनोद जैन 'कोटखावदा' को प्रदान किया गया।

समाजसेवा पुरस्कार ब्रह्मचारिणी विनीता दीदी, डिप्टी कलेक्टर, निवाड़ी को प्रदान किया गया। इसी क्रम में विमल कीर्ति त्यागी-व्रती सेवा पुरस्कार ब्रह्मचारिणी शशी दीदी, गन्नौर, पन्ना को दिया गया। समारोह में अखिल भारतीय विनिश्चय ग्रुप के अध्यक्ष राजीव जैन सिर्स झांसी के पुत्र राही जैन सिर्स झांसी, कवित्री अंजू जैन दैनिक भास्कर से हिमांशु तथा उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री कैप्टन विकास गुप्ता के प्रतिनिधि भाजपा नेता अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में जयपुर, रामगंज मंडी, भीलवाड़ा, भिण्ड, कोलकाता, दिल्ली, सहित गाजियाबाद के जैन बंधु बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। उपस्थित श्रद्धालुओं ने गणाचार्य श्री 108 विरागसागर महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण करते हुए उनके आध्यात्मिक एवं सामाजिक अवदान को नमन किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशीष कुमार जैन बम्होरी ने किया। उन्होंने पुरस्कारों की गरिमा एवं गणाचार्य विरागसागर महाराज के जीवना दर्शो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसे सम्मान समाज में सेवा, साधना, विद्वत्ता और समर्पण की भावना को प्रेरित करते हैं।

समारोह के अंत में वाक्केसरी आचार्य 108 विनिश्चयसागर महाराज का मंगल प्रवचन हुआ। आचार्य श्री ने गणाचार्य विरागसागर महाराज की साधना, त्याग एवं समाज के प्रति उनके योगदान का स्मरण करते हुए उपस्थित जनसमुदाय को धर्म, संयम, सेवा और संस्कारों के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में मुनि प्रांजल सागर एवं मुनि प्रत्यक्ष सागर महाराज का निर्देशन प्राप्त हुआ, चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री सुभाष चन्द्र जैन, महामंत्री प्रदीप जैन, संयोजक निखिल जैन, आर सी जैन आदि समस्त पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त कर्ताओं का शाल, श्रीफल, माला, मोमेंटो, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान राशि देकर सम्मान करके गौरव का अनुभव किया। कार्यक्रम में विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि इस मौके पर आचार्य विनिश्चय सागर महाराज ससंघ के जयपुर प्रवास एवं चातुर्मास के लिए राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा के नेतृत्व में जयपुर वासियों द्वारा श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस मौके पर श्योपुर प्रतापनगर जैन समाज के पूर्व अध्यक्ष अशोक बाकलीवाल, मुनि भक्त सुरेन्द्र हल्दनिया, अंकित बाकलीवाल, मैना देवी कासलीवाल, मुन्ना देवी वैद, दीपिका जैन कोटखावदा, सुनिता हल्दनिया, अंजना बाकलीवाल, दिव्या बाकलीवाल, देवांश बाकलीवाल सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में गणाचार्य विराग सागर पुरस्कार-2026 के संयोजक डॉ. आशीष कुमार जैन बम्हौरी ने बताया कि गणाचार्य विराग सागर महाराज के आशीर्वाद एवं वाक्केशरी श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर महाराज की प्रेरणा से स्थापित अखिल भारतीय विनिश्चय ग्रुप द्वारा जिनवाणी के प्रचार प्रसार में अपने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ एवं श्रमण परम्परा के उन्नयन में योगदान करने वाले विद्वानों, पत्रकारों, जैन विद्या के अनुसंधान कर्ताओं, समाज सेवा, व्रती सेवा और विधिक इन पुरस्कारों के अन्तर्गत पुरस्कृत विनोद जैन कोटखावदा को 21000/- रुपये की नगद राशि, मेडल, शाल-श्रीफल, प्रतीक चिन्ह, प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

आगम-अनुयोग ग्रन्थ पर आधारित राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी सानंद संपन्न

आचार्य श्री आर्जव सागर जी महामुनिराज के पावन सान्निध्य में देशभर के विद्वानों ने किया आगम के विविध आयामों पर गहन शास्त्रीय मंथन

बड़ौत (उत्तर प्रदेश)। आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा रचित आगम-अनुयोग ग्रन्थ पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी 12 एवं 13 सितंबर 2026 को श्री अजितनाथ सभागार, मंडी-बड़ौत में विद्वत्समाज की गरिमामयी उपस्थिति के बीच सानंद संपन्न हुई।

एस. ए. यूनिवर्सिटी, नवादा (बिहार) के तत्त्वावधान में तथा आचार्य श्री आर्जवसागर जी महामुनिराज के पावन सान्निध्य में आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे विद्वानों ने आगम-अनुयोग ग्रन्थ के विविध विषयों पर शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत करते हुए जैन आगम, दर्शन, अध्यात्म, लोक-विज्ञान, कर्मसिद्धांत, ध्यान सहित अनेक महत्वपूर्ण विषयों का गहन शास्त्रीय विवेचन किया। आयोजक कमेटी श्री 1008 अजितनाथ दिगम्बर जैन प्राचीन मंदिर बड़ौत द्वारा सभी विद्वानों का स्वागत सम्मान किया गया एवं संगोष्ठी निर्देशक डॉ. श्रेयांसकुमार जी जैन, बड़ौत तथा संगोष्ठी संयोजक इंजी. बहन ऋषिका जैन, दमोह के विशेष योगदान से यह संगोष्ठी आयोजित की गई। **देशभर से पधारे विद्वानों ने प्रस्तुत किए शोधपूर्ण आलेख:** संगोष्ठी में डॉ. श्रेयांस कुमार जैन-बड़ौत, प्रो. नलिन के. शास्त्री-दिल्ली, प्रो. अशोक जैन-वाराणसी, ब्र. जय निशांत जैन-टीकमगढ़, डॉ. नरेन्द्र जैन-टीकमगढ़, पं. श्री विनोदकुमार जैन-रजवांस, डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती-बुरहानपुर, डॉ. अनिल जैन-जयपुर, डॉ. धर्मेंद्र जैन-जयपुर, प्रो. अनेकांत जैन-दिल्ली, डॉ. ज्योति बाबू शास्त्री-उदयपुर, डॉ. पंकज जैन-इंदौर, डॉ. सुनील जैन ''संचय''- ललितपुर, डॉ. आशीष जैन-शाहगढ़, डॉ. सोनल जैन-दिल्ली, डॉ. आनंद जैन- वाराणसी, डॉ. शैलेश जैन उदयपुर, डॉ. शिखर चन्द्र जैन-दिल्ली, डॉ. ज्योति जैन- खतौली, डॉ. समता मारोरा-इंदौर, डॉ. अल्पना मोदी-ग्वालियर, इंजी. बहिन ऋषिका जैन- दमोह, अरविंद तिवारी आदि विद्वानों सहित स्थानीय अनेक विद्वान, प्रोफेसर्स आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। विद्वानों ने अपने-अपने अध्ययन, शोध एवं विषयगत विशेषज्ञता के आधार पर आगम-अनुयोग ग्रन्थ के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया। शोध-पत्रों में शास्त्रीय प्रमाणों, आगमिक संदर्भों एवं तार्किक विवेचन के माध्यम से विषयों की सूक्ष्मताओं को स्पष्ट किया गया।

आचार्य श्री आर्जवसागर जी ने दिया समीक्षात्मक मार्गदर्शन: संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों पर आचार्य श्री आर्जवसागर जी महामुनिराज ने समीक्षात्मक एवं मार्गदर्शक उद्बोधन प्रदान किया। आचार्य श्री ने आगम-अनुयोग के अध्ययन की आवश्यकता बताते हुए कहा कि आगम के मर्म को समझने के लिए केवल शब्दों का अध्ययन पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके पीछे निहित आध्यात्मिक भावना एवं अभिप्राय को समझना भी आवश्यक है। अध्ययन, मनन एवं आचरण के माध्यम से ही शास्त्र-ज्ञान की वास्तविक सार्थकता होती है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
डायनामिक
इंजीनियर्स प्रा. लि.
28, बैरकपुर ट्रन्क रोड
कोलकाता- 700002 'प.बं.'
फोन : 25577534

दशलक्षण पर्व- वर्तमान स्वरूप, आध्यात्मिक प्रासंगिकता एवं भविष्य की दिशा

महावीर दीपचंद ठोले
छत्रपति संभाजी नगर

प्रस्तावना: भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में पर्व केवल उत्सव नहीं होते, वे आत्मजागरण के अवसर होते हैं। जैन धर्म में पर्वों की अवधारणा तो और भी गहरी है, क्योंकि जैन दर्शन का मूल उद्देश्य बाह्य सुख की प्राप्ति नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि, कर्मों की निर्जरा और मोक्षमार्ग की साधना है।

दशलक्षण पर्व इसी आध्यात्मिक दृष्टि का अनुपम उदाहरण है। यह पर्व आत्मा के दस उत्कृष्ट धर्मो-उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य-का स्मरण, चिंतन और आचरण कराता है।

दशलक्षण पर्व अपने भीतर स्थित अनन्त ज्ञान, दर्शन, सुख और शक्ति को प्रकट करने की साधना है। ''पर्युषणं आत्मविशुद्धिः''- आत्मा की ओर लौटना ही पर्व की वास्तविक सार्थकता है।

दशलक्षण धर्म का दार्शनिक आधार: दिगम्बर जैन दर्शन में दस धर्मो का विवेचन मुख्यतः तत्वार्थसूत्र, समयसार, मूलाचार तथा दिगम्बर आगमिक परम्परा के विभिन्न ग्रंथों में प्राप्त होता है। तत्वार्थसूत्र में कहा गया है - उत्तम क्षमा मार्दवार्जव शौच सत्य संयम तपस्त्या गाकिञ्चन्यब्रम्हचर्याणि धर्मः। अर्थात् उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य-ये धर्म हैं।

यहाँ ''उत्तम'' शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामान्य जीवन में भी क्षमा, विनय, सत्य या संयम दिखाई दे सकते हैं, परन्तु जैन दर्शन में इनका निर्मल, निष्काम और आत्मकेन्द्रित स्वरूप उत्तम धर्म कहलाता है।

दस धर्म - आत्मशुद्धि की दस सीढ़ियाँ उत्तम क्षमा केवल किसी अपराधी को क्षमा कर देना नहीं है! जैन आध्यात्मिकता में क्षमा का अर्थ है-क्रोध के कारण उत्पन्न आत्मिक विकार से स्वयं को मुक्त करना। क्रोध सबसे पहले दूसरे को नहीं, स्वयं को जलाता है। अतः क्षमा आत्मा को हल्का करती है। जिसने मुझे दुःख दिया, उसके प्रति द्वेष छोड़ना ही मेरी आत्मा के प्रति मेरी करुणा है।

उत्तममार्दव जाति, कुल, धन, पद, ज्ञान, रूप अथवा प्रतिष्ठा का अहंकार आत्मा की निर्मलता को ढक देता है। मार्दव हमें बताता है कि शरीर, पद और संपत्ति परिवर्तनशील हैं, वास्तविक गौरव तो आत्मस्वरूप की पहचान में है। उत्तम आर्जव मन, वचन और काय की एकरूपता आर्जव है। भीतर कुछ और बाहर कुछ और-यह जीवन की आध्यात्मिक विसंगति है। आर्जव का साधक अपने अंतर्मन के सामने भी ईमानदार होता है।

उत्तम शौच: केवल शरीर की स्वच्छता नहीं है। लोभ से रहित होना ही वास्तविक आंतरिक शौच है।

आज उप भोक्तावादी संस्कृति में इसकी प्रासंगिकता अत्यंत बढ़ गई है। आवश्यकता और लालसा के बीच अंतर समझना ही शौच धर्म का आधुनिक स्वरूप है।

उत्तम सत्य केवल तथ्य बोलना नहीं, बल्कि ऐसा सत्य बोलना है जो हितकारी, संयमित और अहिंसात्मक हो। सत्य धर्म वाणी को साधना का माध्यम बनाता है। आज सोशल मीडिया, अफवाह और असत्य सूचना के युग में उत्तम सत्य अत्यंत प्रासंगिक है।

उत्तम संयम जीवन को दबाना नहीं, बल्कि इन्द्रियों और इच्छाओं का स्वामी बनना है। जिस व्यक्ति को अपनी इच्छा नियंत्रित करने की शक्ति नहीं, वह बाहरी रूप से स्वतंत्र होकर भी भीतर से परतंत्र है।

उत्तम तप का महत्वपूर्ण साधन उपवास है, किंतु तप की चरम सार्थकता केवल भोजन छोड़ने में नहीं है। क्रोध, मान, माया और लोभ का क्षय भी तप की उच्च अवस्था है इसलिए कहा जा सकता है-''अन्न का त्याग उपवास है और कषायों का त्याग वास्तविक तप है।''

उत्तम त्याग केवल वस्तु छोड़ देना नहीं है। वस्तु छोड़कर भी यदि मन में उसका ममत्व बना रहे तो वास्तविक त्याग नहीं हुआ। सच्चा त्याग है वस्तु के साथ उससे जुड़े अहंकार और ममत्व का त्याग।

उत्तम आकिंचन्य: जैन दर्शन का अत्यंत गहन आध्यात्मिक सिद्धांत है। संसार में रहते हुए भी यह समझना कि धन, परिवार, शरीर और बाहरी पदार्थ आत्मा के वास्तविक स्वरूप नहीं हैं-आकिंचन्य की दिशा है। यह दृष्टि मनुष्य को परिग्रह से अपरिग्रह और ममत्व से आत्मत्व की ओर ले जाती है।

उत्तम ब्रह्मचर्य को केवल इन्द्रिय संयम के सीमित अर्थ में देखना इसके व्यापक आध्यात्मिक स्वरूप को सीमित करना है। जैन दर्शन में ब्रह्मचर्य का उच्चतम अर्थ है- ब्रह्म अर्थात् आत्मा मेंचर्या, आत्मस्वरूप में रमण।

यही साधक को बाह्य विषयों से हटाकर अंतरात्मा की ओर ले जाता है।

वर्तमान स्वरूप - उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ: आज दशलक्षण पर्व का स्वरूप व्यापक और जन सह भागिता पूर्ण हुआ है। मंदिरों में अभिषेक, शांतिधारा, विधान, पूजन, प्रवचन, स्वाध्याय, सामूहिक आरती, तपस्या, धार्मिक प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा क्षमावाणी जैसे आयोजन होते हैं।

यह निश्चित रूप से सकारात्मक परिवर्तन है कि नई पीढ़ी भी इस पर्व से जुड़ रही है परंतु इसके साथ एक गंभीर आत्ममंथन आवश्यक है की क्या पर्व की बाहरी भव्यता के साथ हमारी आंतरिक साधना भी बढ़ रही है? यदि दस दिनों तक मंदिर में पूजा हो और घर में क्रोध बना रहे, यदि क्षमावाणी हो और मन में पुराना द्वेष बना रहे, यदि तप हो और लोभ यथावत् रहे, यदि त्याग की चर्चा हो और संग्रह बढ़ता रहे, तो हमें पर्व के वास्तविक उद्देश्य पर पुनर्विचार करना होगा।

दशलक्षण पर्व का मूल्य कार्यक्रमों की संख्या से नहीं, जीवन में आए परिवर्तन से मापा जाना चाहिए।

आधुनिक युग में दशलक्षण पर्व की नई आवश्यकता - आज मनुष्य के सामने अनेक प्रकार के तनाव हैं-क्रोध, प्रतिस्पर्धा, उपभोगवाद, अहंकार, मानसिक अशांति, पारिवारिक तनाव और निरंतर बढ़ती इच्छाएँ। ऐसे समय में दशलक्षण धर्म केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मानव-व्यक्तित्व के आध्यात्मिक पुनर्निर्माण का दर्शन प्रस्तुत करता है। यदि आधुनिक मनुष्य-क्रोध के स्थान पर क्षमा, अहंकार के स्थान पर विनय, छल के स्थान पर सरलता, लोभ के स्थान पर संतोष, असत्य के स्थान पर सत्य, भोग के स्थान पर संयम, विलास के स्थान पर तप, संग्रह के स्थान पर त्याग, ममत्व के स्थान पर अपरिग्रह और विषयासक्ति के स्थान पर आत्मचिंतन को अपनाए, तो दशलक्षण पर्व का संदेश विश्वमानव के लिए भी उपयोगी बन सकता है।

वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि दशलक्षण पर्व को ''अनुष्ठान-प्रधान'' से ''आत्मानुशासन-प्रधान'' बनाया जाए। प्रत्येक दिन एक धर्म का अध्ययन हो, उसका दार्शनिक अर्थ समझाया जाए और उसके व्यवहारिक प्रयोग का संकल्प लिया जाए। दस दिन - क्रमशः मैं किसी के प्रति द्वेष नहीं रखूँगा। मैं अपने पद, धन और ज्ञान का अहंकार नहीं करूँगा। मेरे मन, वचन और व्यवहार में एकरूपता रहेगी। मैं अनावश्यक लोभ और संग्रह की समीक्षा करूँगा, मेरी वाणी सत्य, मधुर और अहिंसक होगी। मैं अपनी इन्द्रियों और इच्छाओं पर नियंत्रण का अभ्यास करूँगा! मैं शरीर के साथ-साथ कषायों की तपस्या करूँगा। मैं किसी वस्तु, समय या धन का परोपकार में उपयोग करूँगा। मैं ''मेरा-मेरा'' की भावना को कम करूँगा। मैं आत्म स्वरूप के चिंतन में समय दूँगा। दशलक्षण का आधुनिक विस्तार पर्यावरणीय चेतना तक भी किया जा सकता है। उत्तम संयम और अपरिग्रह का सिद्धांत मनुष्य को अनावश्यक उपभोग से रोकता है। कम उपभोग, सीमित संग्रह, जीवदया, जल-संरक्षण, वृक्षारोपण और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग-ये सब जैन अपरिग्रह की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ बन सकते हैं। इस दृष्टि से दशलक्षण पर्व केवल व्यक्तिगत मोक्षमार्ग का पर्व नहीं, बल्कि जीव और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का संदेश भी दे सकता है।

युवा पीढ़ी और दशलक्षण: नई पीढ़ी को केवल यह बताना पर्याप्त नहीं कि ''दशलक्षण पर्व मनाओ'' - उसे यह समझाना होगा कि ''दशलक्षण क्यों मनाएँ?'' युवाओं के लिए प्रवचन की भाषा के साथ संवाद, प्रश्नोत्तर, डिजिटल सामग्री, लघुवीडियो, अध्ययन-वर्ग, आगम परिचय तथा व्यवहारिक प्रयोगों को जोड़ा जा सकता है।

यदि युवा यह समझ पाए कि -
क्षमा = मानसिक स्वास्थ्य,
संयम = आत्मनियंत्रण,
अपरिग्रह = टिकाऊ जीवनशैली,
सत्य = नैतिकता,
तप = आत्म अनुशासन और ब्रह्मचर्य = ऊर्जा का संरक्षण, तो दशलक्षण उनके लिए केवल परम्परा नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन बन जाएगा।

क्षमावाणी - पर्व की आध्यात्मिक परिणतिदश लक्षण पर्व का अंतिम संदेश क्षमावाणी में विशेष रूप से अभिव्यक्त होता है। ''मिच्छामि दुक्कडम'' केवल एक औपचारिक वाक्य नहीं, बल्कि आत्मनिरीक्षण का अवसर है। हमें स्वयं से पूछना चाहिए -

मैंने किसे दुःख दिया? किसके प्रति मेरे मन में द्वेष है? किससे मुझे क्षमा माँगनी चाहिए? और सबसे महत्वपूर्ण-मैंने स्वयं को अपने क्रोध, अहंकार और लोभ से कितना दुःख दिया? जब क्षमावाणी इन प्रश्नों को जन्म देती है, तभी वह वास्तविक आत्मशुद्धि का माध्यम बनती है।

निष्कर्ष - दशलक्षण पर्व हजारों वर्षो से चली आ रही आध्यात्मिक साधना की महान परम्परा है। इसका मूल उद्देश्य बाह्य प्रदर्शन नहीं, बल्कि अंतरात्मा के दस धर्मो को जागृत करना है। आज आवश्यकता इस बात की है कि दशलक्षण पर्व की भव्यता के साथ उसकी गहराई भी बढ़े, पूजा के साथ स्वाध्याय, उपवास के साथ कषाय क्षय, क्षमावाणी के साथ हृदय परिवर्तन और त्याग के साथ अपरिग्रह का व्यवहार जुड़े।

पर्व समाप्त होने के बाद यदि हमारे जीवन में केवल दस दिनों की स्मृतियाँ बचती हैं तो साधना अधूरी है लेकिन यदि दस धर्म हमारे स्वभाव का हिस्सा बनने लगें, तो वही दशलक्षण पर्व की वास्तविक उपलब्धि है। अंततः दशलक्षण पर्व हमें बाहर किसी नई वस्तु को प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि भीतर छिपे शुद्ध आत्म स्वरूप को पहचानने के लिए बुलाता है। दस धर्म दस दीप हैं, जो अंतरतम में जलते हैं, कषायों के अंधकार में, आत्म ज्योति बनकर पलते हैं। पर्व तभी दशलक्षण है, जब जीवन धर्ममय हो जाए। मंदिर से निकला साधक, अपने भीतर जिनालय पाए। अतः दशलक्षण पर्व का वर्तमान स्वरूप केवल ''दस दिनों का धार्मिक आयोजन'' न होकर-''दस गुणों द्वारा आत्मा के पुनर्जागरण का महापर्व'' बनना चाहिए।

सिलचर में आचार्यश्री शांति सागरजी की पुण्य तिथि मनाई

12 सितम्बर, सिलचर असम। गणिनी आर्यिका 105 श्री गरिमामति माताजी, आर्यिका गंभीरमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में भाद्रपद शुक्ल द्वितीया 12 सितंबर शनिवार को बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महामुनिराज की 71 वीं पुण्यतिथि हर्षोल्लास पूर्वक मनाई गई, कार्यक्रम में संघस्थ दीदी ने बताया कि श्रावक श्राविका द्वारा महाराज श्री के रत्नमयी चरण चिन्ह का भव्य पंचामृत अभिषेक एवं पूजा पाठ के साथ श्री शान्तिसागर जी महाराज का विधान बड़ी भक्ति भाव एवं श्रद्धा के साथ संपन्न करा कर उनके जीवन चरित्र की महिमा पर प्रकाश डाला और श्रावक श्रेष्ठि श्री महावीर प्रसाद जी सेठी ने गुणानुवाद व विनयांजलि अर्पित की, विनियांजलि सभा में आर्यिका श्री ने कहा कि हमें आचार्य शांति सागर जी महाराज के बताए हुए संयम मार्ग पर चलने का संकल्प

लेना चाहिए, उन्होंने विश्व को सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह संदेश दिया था, ऐसे युगप्रवर्तक राष्ट्र संत के चरणों में हम शत-शत नमन वंदन करते हैं, कार्यक्रम में माता जी द्वारा रचित श्री शान्तिसागर जी के जीवनी पर आधारित तंबोला और प्रश्नमंच प्रतियोगिता भी कराई गई, जिसमें सभी विजेताओं को पारितोषिक देकर पुरष्कृत किया गया, कार्यक्रम में सभी आयोजनों में सिलचर निवासियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया और जैन धर्म व दिगम्बर मुनि धर्म की प्रभावना में अपना योगदान देकर पुण्य लाभ अर्जित किया।

सुखद, आनन्दमय, मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ है

- पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर

दिल्ली, ऋषभ विहार। पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी गुरुदेव ने धर्मसभा में कहा कि सुखद, आनन्दमय, मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ है। जीवन को शान्तिपूर्ण बनाना है, तो पाप का क्षय करो और पुण्य वर्धमान करो। जिसका प्रबल (विशाल) पुण्य होता है, उसकी सब व्यवस्था बन जाती है और जिसका पुण्यक्षीण होता है उसे घर में भी भूखा रहना पड़ता है। विवेकी सज्जनों को संकटों के आने पर भी धैर्य नहीं छोड़ना चाहिये। बड़े-बड़े महापुरूषों पर भी संकट आये हैं, पर प्रज्ञजन उपसर्गों में भी अपनी सूझबूझ से उत्कर्ष को प्राप्त कर लेते हैं। नीतिज्ञ की जीत, नीतिज्ञ उचित समय पर ही बोलते हैं। व्यर्थ में समय नहीं व्यय करते हैं, जो नीति शून्य होते हैं। जीवन में ऊंचाईयाँ प्राप्त करना है तो हमेशा विवेक पूर्वक निर्णय करें, क्योंकि विवेक शून्य कार्य दुःखद ही होता है। सोचो समझो, फिर कार्य करो। विवेक पूर्वक किया गया कार्य सुखद ही होता है। सच्चा ज्ञानी कौन शास्त्रों का ज्ञान भिन्न है और आत्म ज्ञान भिन्न है। शब्द ज्ञानी होना श्रेष्ठ नहीं है, परन्तु आत्म ज्ञान सर्व श्रेष्ठ है। सच्चा आत्म-शानी संयम के साथ जीवन जीता है। कोरे ज्ञान से क्या लाभ? जो हाथ में प्रज्वलित दीप लेकर भी खाई में गिर जाए, उसका ज्ञान किस काम का? जो नदी में खड़ा खड़ा प्यासा रहे, उसकी प्रज्ञा से क्या लाभ? ज्ञान नही श्रेष्ठ है, जिससे तत्व - बोध हो, पुण्यरूप प्रवृत्ति हो, संयमाचरण पर आस्था हो, आत्म-कल्याण की पवित्र दृष्टि हो, दया- करुणा, क्षमा एवं परोपकार की की कल्याणकारी भावना हो।

पुनीत जैन

शेष पृष्ठ 1 का....

...मन में सँजोकर रखते हैं। किसी ने दस वर्ष पहले कुछ कह दिया था, किसी ने व्यापार में साथ नहीं दिया, किसी रिश्तेदार ने सम्मान नहीं दिया, किसी ने हमारी बात नहीं मानी और हम उन घटनाओं को आज भी अपने भीतर ढो रहे हैं। पर्युषण कहता है-''इतना बोझ लेकर आत्मा की यात्रा मत करो।'' जो बीत गया, उसे समझो, उससे सीखो और जहाँ संभव हो, उसे छोड़ दो। क्योंकि मन में द्वेष रखना ऐसा है जैसे किसी दूसरे को चोट पहुँचाने के लिए अपने हाथ में जलता हुआ अंगारा पकड़े रहना।

2. इस पर्युषण में दूसरों को नहीं, स्वयं को बदलने का संकल्प लें - धार्मिक सभाओं में हम अक्सर समाज की समस्याओं पर चर्चा करते हैं-आज की पीढ़ी धर्म से दूर हो रही है, बच्चों में संस्कार कम हो रहे हैं, समाज में एकता नहीं है, धार्मिक आयोजनों में दिखावा बढ़ रहा है, दान में प्रतिष्ठा जुड़ रही है, युवा समाज से कट रहे हैं। इन चिंताओं पर चर्चा आवश्यक है, लेकिन पर्युषण हमें एक कदम आगे ले जाता है। वह पूछता है-''समस्या में मेरा योगदान कितना है?'' हम हमेशा कहते हैं कि दूसरा बदल जाए तो परिवार अच्छा हो जाएगा, समाज अच्छा हो जाएगा, संस्था अच्छी हो जाएगी। लेकिन वास्तविक परिवर्तन वहीं से शुरू होता है जहाँ हम कहते हैं-''मैं पहले स्वयं को बदलूँगा।'' यदि एक व्यक्ति अपने क्रोध को नियंत्रित कर ले, एक व्यापारी अपने व्यवहार में पूर्ण ईमानदारी ले आए, एक पिता बच्चों पर अपनी इच्छाएँ थोपना बंद कर दे, एक बेटा वृद्ध माता-पिता को समय देने लगे, एक परिवार बहू को बेटी के समान सम्मान देने लगे, एक व्यक्ति निंदा से बचने लगे और एक समाज अपनी छोटी-छोटी संकीर्णताओं से ऊपर उठ जाए-तो पर्युषण वास्तव में सफल हुआ। समाज को बदलने का सबसे छोटा और सबसे प्रभावी रास्ता स्वयं को बदलना है।

3. उपवास केवल पेट का नहीं, विकारों का भी होना चाहिए - उपवास जैन धर्म की महान तप परंपरा है। यह शरीर को कष्ट देने का साधन मात्र नहीं, बल्कि इच्छाओं पर नियंत्रण और आत्मचिंतन का माध्यम है। लेकिन हमें यह भी देखना होगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारा पेट तो उपवास कर रहा है, लेकिन मन अपनी पुरानी आदतों का भोजन लगातार कर रहा है। हम अन्न छोड़ देते हैं, पर क्रोध नहीं छोड़ते; भोजन छोड़ देते हैं, पर निंदा नहीं छोड़ते; मिठाई छोड़ देते हैं, पर अहंकार नहीं छोड़ते; बाजार नहीं जाते, लेकिन मोबाइल पर घंटों लगे रहते हैं। इसलिए इस पर्युषण में उपवास की एक नई परिभाषा अपने जीवन में जोड़िए; एक दिन भोजन का उपवास, एक दिन क्रोध का उपवास, एक दिन निंदा का उपवास, एक दिन अनावश्यक सोशल मीडिया का उपवास, एक दिन अनावश्यक खरीदारी का उपवास और एक दिन अहंकार का उपवास। स्वयं से पूछिए-''आज मैंने क्या नहीं खाया?'' से अधिक महत्वपूर्ण है-''आज मैंने क्या नहीं कहा, क्या नहीं सोचा और किस प्रतिक्रिया को रोक लिया?'' क्योंकि आत्मसंयम का वास्तविक परीक्षण वहीं होता है जहाँ इच्छा मौजूद हो और फिर भी हम उसके गुलाम न बनें।

4. सबसे कठिन तप - वाणी का संयम - आज के समय में शायद सबसे कठिन तपों में से एक है-वाणी का संयम। हम भोजन पर नियंत्रण कर लेते हैं, लेकिन शब्दों पर नियंत्रण खो देते हैं। एक कटु वाक्य वर्षों का रिश्ता बिगाड़ सकता है। एक व्यंग्य किसी के आत्मविश्वास को चोट पहुँचा सकता है। एक अपमान किसी व्यक्ति के मन में जीवन भर रह सकता है। इसलिए पर्युषण में यह संकल्प लिया जा सकता है-''मैं सत्य बोलूँगा, लेकिन सत्य को हथियार बनाकर नहीं।'' सत्य के साथ करुणा हो, असहमति के साथ सम्मान हो, आलोचना के साथ मर्यादा हो और संवाद में संवेदनशीलता हो। यह समझना जरूरी है कि हर सही बात हर समय और हर तरीके से कहना आवश्यक नहीं। सत्य बोलना धर्म है, लेकिन सत्य को मधुरता और करुणा के साथ बोलना धर्म की परिपक्वता है। बोलने से पहले तीन प्रश्न पूछें-क्या यह सत्य है? क्या यह आवश्यक है? क्या इसे कहने का मेरा तरीका उचित है? यदि तीनों का उत्तर हाँ है, तभी बोलें। शायद हमारी आधी पारिवारिक और सामाजिक समस्याएँ इसी छोटे से अभ्यास से कम हो सकती हैं।

5. क्षमावाणी - व्हाट्सऐप संदेश नहीं, हृदय का परिवर्तन पर्युषण के अंतिम चरण में क्षमावाणी का भाव आता है और हम कहते हैं-''मिच्छामि दुक्कडम।'' यह जैन संस्कृति की अत्यंत सुंदर और गहरी परंपरा है। लेकिन हमें इसे केवल एक औपचारिक संदेश बनने से बचाना होगा। आज मोबाइल पर एक साथ सैकड़ों लोगों को संदेश भेजना बहुत आसान है-''मेरे मन, वचन या कर्म से आपको कोई दुःख हुआ हो तो मिच्छामि दुक्कडम।'' लेकिन जिनसे वर्षों से मनमुटाव है, उन्हें व्यक्तिगत रूप से फोन करना कठिन लगता है। जिस व्यक्ति से बात बंद है, उससे पहला कदम बढ़ाना कठिन लगता है। जिस व्यक्ति ने हमें चोट पहुँचाई है, उसे मन से क्षमा करना उससे भी कठिन लगता है। यही वास्तविक परीक्षा है। क्षमा का अर्थ यह नहीं कि सामने वाले की गलती सही हो गई। क्षमा का अर्थ है-''मैं तुम्हारी गलती का बोझ अपने हृदय में लेकर आगे नहीं चलना चाहता।'' क्षमा कमजोरी नहीं, आंतरिक शक्ति है। जो व्यक्ति बदला लेने की क्षमता होते हुए भी क्षमा कर सके, वही वास्तव में भीतर से शक्तिशाली है। इस पर्युषण में कम-से-कम एक ऐसे व्यक्ति से संवाद की पहल कीजिए जिससे लंबे समय से दूरी है। हो सकता है सामने वाला तुरंत न बदले, लेकिन आपके भीतर का बोझ अवश्य हल्का हो जाएगा।

6. धर्म की पहली परीक्षा मंदिर में नहीं, परिवार में होती है - हम मंदिर में जाकर विनम्र हो जाते हैं। भगवान के सामने सिर झुका देते हैं। साधु-संतों के चरणों में बैठकर संयम और क्षमा की बातें सुनते हैं। लेकिन घर लौटते ही यदि वही क्रोध, वही कटुता और वही अहंकार शुरू हो जाए तो हमें अपने धर्म की दिशा पर विचार करना चाहिए। हमारा घर ही हमारे धर्म की पहली प्रयोगशाला है। क्या हम अपने माता-पिता को समय देते हैं? क्या हम जीवनसाथी की भावनाओं को समझते हैं? क्या हम बच्चों को केवल आदेश देते हैं या उनकी बात भी सुनते हैं? क्या हम बहू को केवल परिवार की जिम्मेदारियों से जोड़ते हैं या उसे सम्मान और स्वतंत्रता भी देते हैं? क्या भाई के साथ संपत्ति के विवाद से ऊपर उठ सकते हैं? क्या हम वृद्ध व्यक्ति की धीमी गति पर झुंझलाने के बजाय उसके जीवन के संघर्षों को समझ सकते हैं? यदि मंदिर में हमारा व्यवहार विनम्र है लेकिन घर में हमारा स्वभाव कठोर है, तो हमें समझना होगा कि धर्म अभी हमारे भीतर पूरी तरह नहीं उतरा है। पर्युषण में एक संकल्प लें-''मैं अपने परिवार को अपने धर्म का पहला लाभ दूँगा।''

7. नई पीढ़ी को धर्म से जोड़ना है तो धर्म को जीवन से जोड़िए - हम अक्सर कहते हैं कि आज की युवा पीढ़ी धर्म से दूर हो रही है। लेकिन क्या हमने कभी यह विचार किया कि युवा धर्म से क्यों जुड़ना चाहेगा? यदि उसे केवल कहा जाए-मंदिर जाओ, पूजा करो, प्रवचन सुनो लेकिन उसके जीवन की वास्तविक समस्याओं पर धर्म कोई दिशा न दे, तो स्वाभाविक है कि वह प्रश्न पूछेगा-''इसका मेरे जीवन से संबंध क्या है?'' हमें उसे समझाना होगा कि अहिंसा केवल किसी जीव को न मारने का नाम नहीं; किसी के मन को अनावश्यक पीड़ा न देना भी अहिंसा का व्यापक भाव है। अपरिग्रह केवल वस्तुओं की संख्या कम करना नहीं; वस्तुओं और इच्छाओं को अपने जीवन का स्वामी न बनने देना है। अनेकांत केवल दर्शन का सिद्धांत नहीं; दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता है। संयम केवल उपवास नहीं; अपनी इच्छाओं का स्वामी बनना है। यदि हम धर्म को जीवन की कला बनाकर नई पीढ़ी के सामने रखेंगे, तो युवा धर्म से दूर नहीं जाएगा। हमें बच्चों को केवल धार्मिक बातें सुनानी नहीं हैं, बल्कि उन्हें अपने जीवन में करके दिखानी हैं। बच्चे हमारे शब्दों से कम और हमारे व्यवहार से अधिक सीखते हैं।

8. पर्युषण बनाम धार्मिक प्रदर्शन - धर्म की यात्रा में एक सूक्ष्म खतरा है-प्रदर्शन। किसने कितनी बड़ी पूजा कराई? किसने कितना दान दिया? किसका नाम कहाँ लिखा गया? किसका सम्मान किस मंच पर हुआ? किस आयोजन में कितनी भीड़ आई? इन प्रश्नों ने यदि धर्म से अधिक महत्व प्राप्त कर लिया, तो हमें रुककर सोचना चाहिए। धर्म का उद्देश्य प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं, आत्मा को प्रतिष्ठित करना है। दान की सुंदरता तब बढ़ती है जब दान देने वाले का अहंकार घटता है। सेवा तब महान बनती है जब उसका प्रचार कम और उसका प्रभाव अधिक हो। हमें यह विचार करना चाहिए कि पर्युषण के अवसर पर यदि बड़ी राशि खर्च करनी ही है, तो क्या उसका कुछ हिस्सा किसी विद्यार्थी की शिक्षा, किसी जरूरतमंद परिवार, चिकित्सा, वृद्ध सेवा, साधर्मी सहायता, पशु-पक्षी संरक्षण, तीर्थ संरक्षण या युवाओं के कौशल विकास में नहीं लगाया जा सकता? धर्म की पहचान केवल मंदिरों की ऊँचाई से नहीं, समाज के मनुष्यों के जीवन की ऊँचाई से भी होनी चाहिए।

9. इस पर्युषण में एक ''धर्म-बजट'' बनाइए - हम आर्थिक बजट बनाते हैं। आय कितनी है, खर्च कितना है, बचत कितनी है-सबका हिसाब रखते हैं। लेकिन एक बार धर्म-बजट भी बनाकर देखिए। इस वर्ष मैं कितनी राशि शिक्षा के लिए दूँगा? कितनी राशि चिकित्सा सहायता के लिए? कितनी राशि साधर्मी परिवार की सहायता के लिए? कितनी राशि तीर्थ संरक्षण के लिए? कितनी राशि जरूरतमंद युवाओं को रोजगार या कौशल प्रशिक्षण के लिए? कितनी राशि जीवदया के लिए? यदि धर्म का धन किसी के जीवन में आशा बन जाए, तो उससे सुंदर धार्मिक निवेश क्या हो सकता है? दान का सर्वोच्च रूप वह है जो किसी व्यक्ति को बार-बार सहायता लेने के बजाय अपने पैरों पर खड़ा कर दे। किसी बच्चे को शिक्षा देना, किसी युवा को कौशल देना, किसी परिवार को रोजगार का अवसर देना-यह सेवा आने वाली पीढ़ियों तक प्रभाव छोड़ सकती है।

10. पर्युषण का अनोखा संकल्प - ''मैं पहले स्वयं को बदलूँगा'' - हम चाहते हैं कि पति बदले, पत्नी बदले, बच्चे बदलें, भाई बदले, समाज बदले, संस्था बदले। लेकिन स्वयं को बदलना सबसे कठिन लगता है। इस पर्युषण में एक प्रयोग कीजिए-''मैं किसी को बदलने से पहले स्वयं को बदलने का प्रयास करूँगा।'' जब हम बदलते हैं तो हमारी प्रतिक्रिया बदलती है; प्रतिक्रिया बदलती है तो संबंध बदलते हैं; संबंध बदलते हैं तो परिवार बदलता है; परिवार बदलता है तो समाज बदलता है। परिवर्तन का सबसे छोटा केंद्र व्यक्ति है, लेकिन उसका प्रभाव सबसे बड़ा हो सकता है। इसलिए समाज सुधार की शुरुआत भाषण से नहीं, आत्म सुधार से होनी चाहिए।

11. आत्मशुद्धिः मन का कचरा निकालना भी आवश्यक है - हम अपने घर में कचरा जमा नहीं होने देते, लेकिन मन में वर्षों का कचरा जमा करते रहते हैं। ''उसने मेरे साथ ऐसा किया था'', ''उसने मुझे सम्मान नहीं दिया'', ''उसने मेरा नुकसान किया'', ''उसने मेरी बात नहीं मानी''-इन वाक्यों को हम बार-बार दोहराते रहते हैं। परिणाम यह होता है कि घटना समाप्त हो जाती है, लेकिन उसकी पीड़ा हमारे भीतर जीवित रहती है। पर्युषण कहता है-अपने मन की अलमारी खोलो। जो आवश्यक नहीं है, उसे बाहर निकालो। कुछ शिकायतें छोड़नी होंगी। कुछ अपेक्षाएँ कम करनी होंगी। कुछ लोगों को क्षमा करना होगा। कुछ जगह अपनी गलती स्वीकार करनी होगी। और कभी-कभी स्वयं को भी क्षमा करना होगा। हर गलती जीवनभर की सजा नहीं होती; कुछ गलतियाँ जीवनभर की सीख बन सकती हैं।

12. पर्युषण के बाद क्या बदलेगा? यही असली परीक्षा है - पर्युषण समाप्त होगा। मंदिरों की भीड़ कम होगी। धर्मसभाएँ समाप्त होंगी। उपवास और तपस्या का क्रम सामान्य होगा। क्षमावाणी के संदेश कम हो जाएंगे। लेकिन उसी दिन से पर्युषण की असली परीक्षा शुरू होगी। यदि पहले हम छोटी बात पर क्रोधित होते थे और अब उत्तर देने से पहले कुछ क्षण रुकते हैं-पर्युषण सफल। यदि पहले हम निंदा करते थे और अब किसी की अनुपस्थिति में भी उसके सम्मान की रक्षा करते हैं-पर्युषण सफल। यदि पहले अनावश्यक खरीदारी करते थे और अब आवश्यकता तथा इच्छा का अंतर समझते हैं-पर्युषण सफल। यदि पहले वृद्ध माता-पिता के लिए समय नहीं था और अब उनके पास बैठने लगे हैं-पर्युषण सफल। यदि पहले मतभेद होते ही संबंध तोड़ देते थे और अब अनेकांत के भाव से दूसरे का पक्ष समझने का प्रयास करते हैं-पर्युषण सफल। पर्युषण कैलेंडर पर समाप्त हो सकता है, लेकिन उसके संस्कार हमारे व्यवहार में समाप्त नहीं होने चाहिए।

13. पर्युषण में भगवान से क्या माँगें? - हम प्रार्थना में स्वास्थ्य माँगते हैं, समृद्धि माँगते हैं, परिवार का सुख माँगते हैं। इस बार प्रार्थना का स्वर थोड़ा बदलकर देखिए-''हे प्रभु! मुझे परिस्थितियाँ बदलने से पहले स्वयं को बदलने की बुद्धि देना। मुझे दूसरों की गलतियाँ देखने से पहले अपनी गलतियाँ देखने की दृष्टि देना। मुझे क्षमा माँगने का साहस और क्षमा करने का हृदय देना। मुझे धन कमाने की क्षमता के साथ उसके सदुपयोग की विवेक-बुद्धि देना। मुझे धर्म का प्रदर्शन नहीं, धर्म का आचरण करने की शक्ति देना।'' शायद यही प्रार्थना हमारे जीवन का सबसे बड़ा परिवर्तन बन जाए।

14. आठ दिन या दस दिन नहीं-आठ-दस जीवन-संकल्प - पर्युषण को केवल दिनों में मत गिनिए, उसे परिवर्तनों में गिनिए। पहला संकल्प-क्रोध पर संयम; उत्तर देने से पहले रुकूँगा। दूसरा-वाणी पर संयम; ऐसा शब्द नहीं बोलूँगा जिसे बाद में वापस लेना पड़े। तीसरा-भोजन पर संयम; स्वाद से अधिक आवश्यकता और स्वास्थ्य को महत्व दूँगा। चौथा-धन पर संयम; अनावश्यक खर्च और दिखावे को कम करूँगा। पाँचवाँ-मोबाइल पर संयम; प्रतिदिन कुछ समय स्वयं और परिवार के लिए रखूँगा। छठा-निंदा पर संयम; जिसकी अनुपस्थिति में बोलता हूँ, उसके सामने भी वही बात कहने का साहस रखूँगा। सातवाँ-अहंकार पर संयम; गलती होने पर ''मैं गलत था'' कहने में संकोच नहीं करूँगा। आठवाँ-क्षमा; कम-से-कम एक पुराने मनमुटाव को समाप्त करने की पहल करूँगा। और यदि संभव हो तो नौवाँ संकल्प-सेवा तथा दसवाँ- स्वाध्याय। इन संकल्पों में से कुछ भी यदि सचमुच जीवन में उतर गया, तो पर्युषण केवल धार्मिक कार्यक्रम नहीं रहेगा, व्यक्तित्व-परिवर्तन का पर्व बन जाएगा।

15. एक बार भगवान की प्रतिमा नहीं, अपना प्रतिबिंब देखिए - पर्युषण में मंदिर जाएँ। भगवान की शांत मुद्रा को देखिए। उनकी वीतरागता को देखिए। फिर कुछ क्षण अपने भीतर भी देखिए। स्वयं से पूछिए-क्या मैं वास्तव में अहिंसक हूँ? क्या मैं वास्तव में अपरिग्रही हूँ? क्या मैं वास्तव में संयमी हूँ? क्या मैं वास्तव में क्षमाशील हूँ? अहिंसा केवल हाथ से हिंसा न करना नहीं, वाणी और व्यवहार से अनावश्यक पीड़ा न देना भी है। अपरिग्रह केवल वस्तुएँ कम करना नहीं, वस्तुओं और प्रतिष्ठा की आसक्ति कम करना भी है। संयम केवल भोजन रोकना नहींय इच्छाओं को नियंत्रित करना भी है। क्षमा केवल ''मिच्छामि दुक्कडम'' कहना नहीं, मन से पुरानी गाँठ खोलना भी है। यही वह क्षण है जहाँ धार्मिकता धीरे-धीरे आध्यात्मिकता में बदलती है।

16. पर्युषणः समाज को भी एक नई दिशा देने का अवसर - पर्युषण केवल व्यक्तिगत आत्मशुद्धि का पर्व नहीं, सामाजिक आत्ममंथन का भी अवसर है। यदि समाज वास्तव में जैन मूल्यों को जीवित रखना चाहता है, तो हमें अपनी प्राथमिकताओं पर विचार करना होगा। क्या हमारी धार्मिक ऊर्जा केवल आयोजन और प्रतिष्ठा तक सीमित है, या वह शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार, साधर्मी सहायता, महिला सशक्तीकरण, युवा मार्गदर्शन, वृद्ध सेवा और तीर्थ संरक्षण तक भी पहुँच रही है? क्या हमारी संस्थाएँ युवाओं को जिम्मेदारी दे रही हैं? क्या हमारी बेटियों को केवल संस्कार दिए जा रहे हैं या उनके सपनों को भी पंख दिए जा रहे हैं? क्या हमारे धार्मिक संस्थान समाज की अगली पीढ़ी के लिए स्थायी कार्य कर रहे हैं? यदि पर्युषण आत्मशुद्धि का पर्व है, तो समाज की प्राथमिकताओं की शुद्धि भी इसी का हिस्सा होनी चाहिए।

17. पर्युषण की सबसे बड़ी उपलब्धिः मन हल्का हो जाए - जीवन में हम बहुत कुछ जमा करते हैं-धन, मकान, वस्तुएँ, प्रमाणपत्र, उपलब्धियाँ, रिश्ते, प्रतिष्ठा और स्मृतियाँ लेकिन इनके साथ-साथ हम अनजाने में शिकायतें, अपेक्षाएँ और दुख भी जमा करते जाते हैं। पर्युषण हमें संग्रह से विसर्जन की ओर ले जाता है। थोड़ा क्रोध विसर्जित कीजिए। थोड़ा अहंकार विसर्जित कीजिए। थोड़ा लोभ विसर्जित कीजिए। पुरानी शिकायतों का कुछ भार नीचे रख दीजिए। शायद तब हमें अनुभव होगा कि आत्मा को हल्का होने के लिए बहुत कुछ पाने की नहीं,

शेष पृष्ठ 09 पर...

शेष पृष्ठ 08 का...

हुत कुछ छोड़ने की आवश्यकता है। यही त्याग का सौंदर्य है।

समापन – पर्युषण आए और चला न जाए-हममें रह जाए पर्युषण हमें जीवन की दौड़ से कुछ समय के लिए बाहर निकालकर स्वयं से मिलने का अवसर देता है। दुनिया को बदलने की हमारी कोशिश बहुत पुरानी है। हमने वर्षों दूसरों की कमियाँ गिनी हैं। अब एक बार अपनी कमियों की सूची बनाकर देखें। मंदिर की घंटी बजे, लेकिन उसके साथ हमारे भीतर भी चेतना जागे। पूजा की थाली सजे, लेकिन उसके साथ हमारा चरित्र भी सजे। उपवास हो, लेकिन साथ में विकारों का भी उपवास हो। स्वाध्याय हो, लेकिन साथ में आत्म-अध्ययन भी हो। क्षमावाणी हो, लेकिन साथ में अहंकार का विसर्जन भी हो। दान हो, लेकिन किसी का जीवन बदलने के उद्देश्य से हो। धर्मसभा हो, लेकिन उसके बाद घर में हमारा व्यवहार भी बदले। क्योंकि पर्युषण वह नहीं जो कुछ दिनों तक हमारे घर में रहता है, पर्युषण वह है जो पर्व समाप्त होने के बाद भी हमारे व्यवहार में दिखाई देता है। इसलिए इस बार पर्युषण में मंदिर अवश्य जाएँ-लेकिन अपने भीतर भी जाएँ। पूजा अवश्य करें-लेकिन अपने व्यवहार की भी पूजा करें। उपवास अवश्य करें-लेकिन विकारों का भी उपवास करें। क्षमा अवश्य माँगें-लेकिन अहंकार छोड़कर माँगें। दान अवश्य दें-लेकिन ऐसी जगह दें जहाँ उससे किसी का जीवन बेहतर हो और जब पर्युषण समाप्त हो, तो केवल कैलेंडर की तारीख न बदले-हमारा स्वभाव बदले, हमारी वाणी बदले, हमारी दृष्टि बदले, हमारे संबंध बदलें और हमारी प्राथमिकताएँ बदलें। यही संयम है। यही त्याग है। यही आत्मशुद्धि है। और शायद यही पर्युषण का सबसे सुंदर संदेश है- ''कुछ दिनों के लिए धर्म को जीवन में मत लाइए, इस बार धर्म को जीवन बना लीजिए।'' अंततः हमें अपने आप से केवल एक प्रश्न पूछना है-''इस पर्युषण के बाद मेरे भीतर ऐसा क्या बदला, जिसे मेरे परिवार, मेरे मित्र, मेरे सहकर्मी और मेरे समाज के लोग मेरे व्यवहार में महसूस कर सकें?'' यदि इस प्रश्न का उत्तर हमारे पास है, तो हमारा पर्युषण सार्थक है। यदि उत्तर नहीं है, तो अभी यात्रा बाकी है। पर्युषण आत्मा से एक मुलाकात है-क्योंकि दुनिया से मिलने का समय तो हम जीवनभर निकालते रहे, अब थोड़ा समय स्वयं से मिलने के लिए भी निकालिए। जय जिनेन्द्र

देते चलिए, लेकिन 'मेरा' मत बनाइए

अपरिग्रह संग्रह से विरक्ति, आकिंचन्य ममत्व से मुक्ति और अनेकांत एकांत आग्रह से ऊपर उठने की दृष्टि देता है

संपादकीय

मनुष्य के हाथ में जितना कुछ है, उससे कहीं अधिक उसके मन में बंधा हुआ है। धन, संपत्ति, पद और प्रतिष्ठा परिग्रह के स्थूल रूप हैं, लेकिन सबसे सूक्ष्म परिग्रह है 'यह मेरा है' का भाव। वस्तु हाथ में हो और मन उससे निर्लिप्त हो तो वह साधन है लेकिन वस्तु दूर हो जाए और मन उसके पीछे भागता रहे तो समझना चाहिए कि परिग्रह वस्तु में नहीं, भीतर है।

जैन दर्शन का त्याग केवल वस्तुओं को छोड़ना नहीं, बल्कि ममत्व को छोड़ने की साधना है। हम किसी की सहायता करते हैं और फिर मन में उसका हिसाब रखने लगते हैं-'मैंने इतना किया, अब उसे भी मेरे लिए कुछ करना चाहिए।' यहीं परोपकार अपेक्षा में बदल जाता है। सच्चा देना वह है जिसमें वस्तु के साथ उसका हिसाब भी मन से निकल जाए। सच्चा त्याग वह है जिसमें 'मैंने त्याग किया' का अहंकार भी शेष न रहे।

रहीम का दोहा इस भाव को बहुत गहराई देता है -

''देनहार कोई और है,
भेजत है दिन रैन।
लोग भरम हम पर करें,
ताते नीचे नैन''

अर्थात् देने वाला कोई और है, हम तो केवल निमित्त हैं। फिर 'मैंने दिया' का अभिमान किस बात का?

यहीं से अपरिग्रह और आकिंचन्य का वास्तविक अर्थ समझ में आता है। अपरिग्रह केवल कम वस्तुएँ रखना नहीं, बल्कि वस्तुओं के प्रति आसक्ति कम करना है। आकिंचन्य का भाव है-'मेरा कुछ भी नहीं' के बोध की ओर बढ़ना। घर मेरा, धन मेरा, पद मेरा, सम्मान मेरा-यह 'मेरा' जितना बढ़ता है, उतना ही मन बंधता जाता है। बाहरी वस्तु का त्याग एक बात है, उसके प्रति ममत्व का त्याग दूसरी।

इसी क्रम में अनेकांत हमें अपने विचारों के परिग्रह से भी सावधान करता है। 'मैं ही सही हूँ', 'मेरी बात ही अंतिम है'-यह आग्रह भी एकांत है। अनेकांत वस्तु के अनेक पक्षों को उनकी उचित अपेक्षा से समझने की दृष्टि देता है। नय और स्याद्वाद इसी अनेकांत-दृष्टि को समझने के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इसलिए कहा जा सकता है -

अपरिग्रह वस्तुओं की पकड़ ढीली करता है।
आकिंचन्य 'मेरा' की पकड़ ढीली करता है।
अनेकांत 'मेरी ही दृष्टि पूर्ण सत्य है'-इस आग्रह की पकड़ ढीली करता है।

जीवन में धन रखिए, लेकिन धन को मन का स्वामी मत बनने दीजिए। संबंध निभाइए, लेकिन उनमें स्वामित्व मत खोजिए। परोपकार कीजिए, लेकिन उसका अहंकार मत पालिए। अपने मत पर दृढ़ रहिए, लेकिन उसे सम्पूर्ण सत्य मानकर दूसरे पक्षों के प्रति अंधे मत हो जाइए। अंततः प्रश्न यह नहीं कि कितना संग्रह किया, कितनों पर उपकार किया या कितनों को अपने विचार से सहमत कराया।

प्रश्न यह है - भीतर से कितना 'मेरा' कम हुआ? कितना 'मैं' कम हुआ? और सत्य को देखने की दृष्टि कितनी व्यापक हुई?

यही अपरिग्रह की दिशा है, यही आकिंचन्य की साधना है और यही अनेकांत की विनम्र दृष्टि है।

गुरु-मंत्र -
जो मिला है, उसका सदुपयोग करो।
जो दे सकते हो, देते चलो।
दिए हुए का हिसाब मत रखो।
'मेरा' का ममत्व मत पालो।
'मैं ही सही हूँ' के आग्रह से बचो।
और प्रत्येक शुभ कर्म को अहंकार नहीं, आत्मशुद्धि का अवसर मानो।

– राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
सह संपादक-जैन गजट

वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय राजकीय अतिथि, आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् शत् नमन् आचार्य श्री शशांक सागर जी महाराज साधु सेवा तीर्थ बाड़ा पद्मपुरा में विराजमान है

आचार्य शशांक सागर वचन भाग - 01

**जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्यश्री शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन**

वास्तविकता जीवन को सरल बनाती है, दिखावे में जीने वाले लोग अक्सर उलझे रहते हैं।

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपुर)
श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर जयपुर)
श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
अनिल कुमार पाण्ड्या (बनेठा वाले)
गजेन्द्र बड़जात्या, (कामा वाले) जयपुर

श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोल्या (मारूजी का चौक, जयपुर)
पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
अशोक चांदवाड (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
मधु जैन अध्यक्षा-श्री दिग. जैन मंदिर प्रतापनगर सेक्टर-3
कमल चंद छाबड़ा अध्यक्ष 1008 श्री शांतिनाथ दिग. जैन मंदिर मान्यवास, मानसरोवर जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

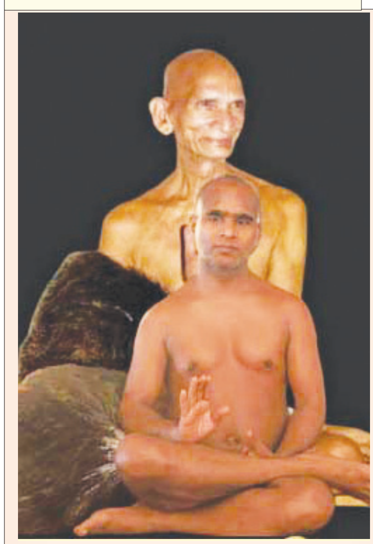

सन्मतिसुनीलम् – भाग 01

बीसवीं सदी के मुनिकुंजर ज्येष्ठाचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) के चतुर्थ पट्टाधीश, प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चरित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्वारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन, वंदन।

न कल में था, न कल में है, जीवन मात्र इस पल में है

-: नमनकर्ता :-

सुरेश कुमार संघवी बांसवाड़ा
अशोक कुमार जैन बड़ोदरा
श्रीमती कमलेश जैन बड़ोदरा
अल्पेश शाह बड़ोदरा
स्वेतान्ग भाई शाह बड़ोदरा

श्रीमती अलका बडजात्या बड़ोदरा
पारस विपुल शाह ईडर
श्री भैरूनाथ पेन्टस एकलिंगपुरा उदयपुर
अशोक चान्दवाड़ कीर्ती नगर जयपुर
मणिवेन साकलचन्द शाह भयन्दर मुम्बई

अनिल जैन IRS (R) अरविन्द जैन श्याम नगर जयपुर
सन्मतिसुनीलम् महिला मण्डल धवास जयपुर
पवन कुमार बड़जात्या निवासी मरवा प्रवासी किशनगढ़
श्रीमती मंजू जयकुमार बड़जात्या सीकर वाले जयपुर
धर्मचंद राकेश लुहाड़िया धवास जयपुर

विनय कुमार सिंघल जयपुर
मदन जैन हुमड बड़ोदरा
प्रमिल वेन जय कुमार शाह मुम्बई
रमेश कुमार यशवन्त कुमार जैन मुम्बई
प्रमेश मीना रांवका सांभरवाले डीसीएम जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

सुख और शांति का आधार - पर्यूषण महापर्व

डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद

भारतवर्ष के प्रमुख धार्मिक पर्वों में भाद्रपद मास में मनाया जाने वाला पर्यूषण अपरनाम दशलक्षण महापर्व अपना प्रमुख स्थान रखता है। यह आत्म चिंतन का महापर्व है। जिसमें श्रद्धालु जन अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति के साथ भगवान वीतराग देव के दर्शन, पूजन वंदन, मुनियों और विद्वानों से धर्म श्रवण कर परिणामों को निर्मल बनाने तथा कषायों के शमन हेतु तत्पर दिखाई देते हैं। जैन मन्दिरों में अभिषेक, पूजा पाठ, तत्त्वार्थ सूत्र के वाचन तथा उत्तम क्षमादि दश धर्मों पर प्रवचनों के विशेष आयोजन होते हैं। इन सब कार्यों का उद्देश्य सच्चे सुख तथा मोक्ष प्राप्त करना होता है।

यह पर्व हमें मोह की गाँठ खोलने, कषायों से दूर रहने तथा आत्मा के सन्निकट रहने की शिक्षा देते हैं। संसार के दमन करने का साधन पर्यूषण महापर्व है। उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य के दश लक्षणों पर विशेष प्रवचनों के कारण यह दिगम्बर जैन समाज में दशलक्षण धर्म महापर्व के रूप में विशेष पहचान बनाये हुए है।

लोक में यह प्रसिद्ध है कि आत्मा का अहित करने वाले विषय भोग और कषायें हैं। पर्यूषण पर्व में आत्मा के हित के लिए कौन से धार्मिक कार्य हैं, जिनका सम्यक् दिशा निर्देशन हमें मिलता है, पर्यूषण पर्व इसके लिए दिशा निर्देशन का कार्य करता है। कहा गया है -

सिद्धिः प्रसाद निः श्रेणी पंक्तिवत् भव्यदेहिनाम्। दश लक्षण धर्मोऽयं नित्यं चित्तं पुनातु नः।।

अर्थात् सिद्धि (मोक्ष) महल पर भव्य जीवों के चढ़ने के लिए सीढ़ियों की पंक्ति के समान यह दशलक्षण महापर्व नित्य ही हम लोगों के चित्त को पवित्र करे, यह भावना भाता है।

यह पर्व वर्ष में भाद्रपद, माघ और चैत्र मास में प्रत्येक माह में पंचमी से लेकर अनन्त चतुर्दशी तक शुक्ल पक्ष में मनाया जाता है। इन पर्वों के साथ हम षोडस कारण, श्रुतस्कंध, जिनमुखावलोकन, मेघमाला, रत्नत्रय, पुष्पांजली, आकाश पंचमी, सुगन्ध दसवीं, अनन्त चतुर्दशी के व्रत भी करते हैं। पर्यूषण पर्व में आत्मा के हित के लिए परिणामों की शुद्धि हेतु सबसे पहले आत्मा को विकारी अवस्था में ले जाने वाली चार कषायों क्रोध, मान, माया और लोभ के त्यागने की शिक्षा देते हुए कमशः उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव और शौच धर्म के अंगीकार करने पर बल दिया गया है। इसके सम्बन्ध में ज्ञानार्णव में कहा गया है -

शमाम्बुभिः क्रोध शिखी निवार्यताम, नियम्यतां मान मुदार मार्दवं।

इयं च मायाऽऽर्जवतः प्रतिक्षणं निरीहतां चाश्रय लोभ शांतये।

अर्थात् क्षमा रूपी जल से क्रोध रूपी अग्नि को बुझाओ, उदार मार्दव भावों से अहंकार का मर्दन करो, आर्जव से माया तथा लोभ का त्याग कर निर्लोभता का आश्रय लो।

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज दशलक्षण धर्म की महिमा को उद्घाटित करते हुए कहते हैं - जीवन का एक - एक क्षण उत्तम क्षमा के साथ निकले, एक एक क्षण मार्दव और विनय के साथ निकले, एक - एक श्वास हमारी वक्रता के अभाव में चले, ऋजुता और शुचिता के साथ चले तो पूरा जीवन ही दशधर्म मय हो जाये। ऋषि मुनियों और विद्वानों द्वारा जो आगम सम्मत प्रशस्त वचन बोले जाते हैं। हित, मित और प्रिय वचन जो निष्पाप और निष्कषाय युक्त होते हैं वे सत्य वचन कहलाते हैं। सत्य वचन बोलने वाला सत्यवादी कहलाता है, उसके पास सत्य तभी तक रहता है जब तक धर्म रहता है। कहा गया है -

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यप्रियम।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्म सनातनः।

सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए परन्तु अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए और प्रिय असत्य भी नहीं बोलना चाहिए यही सनातन धर्म है। सत्य धर्म आत्मा का स्वभाव है।

भोग विलासों में फँसा जीव संयम के द्वारा अपने को नियन्त्रित रखता है। सम् और यम इन दो शब्दों से मिलकर बना संयम धर्म मन के सभी संकल्प और विकल्पों को दबाकर इन्द्रियों और पर नियन्त्रण रखने और प्राणी रक्षा हेतु तत्पर करता है। आत्मा को पर पदार्थों से समेटकर आत्म सम्मुख रखता है विषयासक्त चित्त को भोगों से हटाकर धर्म में स्थिर करता है। कहा गया है -

विषयासक्त चित्तानां गुणा को वा न नश्यति। न वैदुष्यं न मानुष्यं नामि जात्यं न सत्यवाक।।

अर्थात् जिन पुरुषों के चित्त विषयों में आसक्त हैं उनके कौन से गुण नष्ट नहीं होते? अर्थात् उनके सारे गुण नष्ट हो जाते हैं अर्थात् न उसमें विद्वत्ता रहती है और न मनुष्यता और न सत्यता। इसके लिए संयम ही ऐसी शक्ति है जो स्वसन्मुखता और स्वालीनता की ओर ले जाता है। उपवास, मन के प्रसार, जीवों की रक्षा तथा संयम के पालन से ही होती है। कर्मों का क्षय करने के लिए जीव उत्तम तप करता है। तप से कर्मों की निर्जरा होती है। यह तप आभ्यन्तर रूप में प्रायश्चित, विनय वैयावृत्ति, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान तथा बाह्य रूप में अनशन, अवमौदर्य, वृत्ति परिसंख्यान, रस परित्याग, विविक्त शय्यासन और कायक्लेश इस तरह बारह प्रकार का तप करने से व्यक्ति सभी तरह के विघ्नों का नाश कर आत्म सम्मुख रखता है।

अपने से भिन्न सम्पूर्ण परभावों से मोह छोड़कर संसार, शरीर और भोगों से उदासीन परिणाम रखना त्याग धर्म है इसमें व्यक्ति चेतन और अचेतन परिग्रह की निवृत्ति करता है। दान, धर्म का छोटा रूप है जो गृहस्थ पर के उपकार के लिए देता है। औषधि, शास्त्र, अभय और आहार दान परोपकार के लिए दिया जाता है और राग-द्वेष का त्याग स्व उपकार के लिए किया जाता है।

ममत्व भाव को छोड़ने के लिए मेरा कुछ भी नहीं हैं, इस तरह का भाव आकिंचन्य है। इसमें अन्तरंग के ममत्व भाव का त्याग होता है। गृहस्थ का व्यक्ति अल्प परिग्रह का नियम लेकर आंशिक आकिंचन्य धर्म का पालन करता है। आकिंचन्य धर्म का धारक यह दृढ़ श्रद्धान रखता है कि -

ऐगो मे सासगो आदा, णाण दंसण लक्खणो। सेसा मे बहिराभावा सव्वे संजोग लक्खणो।।

अर्थात् एक मात्र आत्मा मेरी है जो ज्ञान और दर्शन से युक्त है। शेष सभी बाह्य भाव हैं जो सभी संयोग से मिलते हैं।

अपनी आत्मा में ही स्थिर हो जाना उत्तम ब्रह्मचर्य है। जिसकी रक्षा करने के लिए व्यक्ति शील के 18000 भेदों पर ध्यान रखते हुए स्त्री आदि का त्याग करता है। वह उत्तम ब्रह्मचर्य का पालन करता है। एक ब्रह्मचर्य व्रत ही तीनों लोकों में पूजनीय होता है जो विशुद्धि को प्राप्त हुए पूज्य पुरुषों के द्वारा भी पूजा जाता है।

ये उत्तम क्षमादि दस धर्मों का सम्बन्ध किसी विशेष धर्म पन्थ या सम्प्रदाय से नहीं है बल्कि आत्मा का हित चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए हृदयंगम करने योग्य हैं। प्रत्येक पंचेन्द्रिय जीवों के लिए ये उपयोगी हैं। धर्म की उत्तम साधना में तत्पर लोगों के लिए ये श्रेष्ठ भावों या विचारों का निर्माण करते हैं। व्रत और उपवास रखकर आत्मा के निकट रहना इस पर्व की महत्ता को जग - जाहिर करता है। उत्तम व्रती के लिए यह पर्व धर्म साधना का श्रेष्ठ साधन है क्योंकि इसके पालन से धर्म का विकास कषायों और कर्मों का विनाश तथा कालुष्य भाव की समापन होता है। संसार, शरीर और भोगों के प्रति व्यक्ति उदासीन रहता है तथा मोक्ष का रास्ता पकड़कर आगे बढ़ता है। यह पर्व मानव समाज के लिए सुख शांति का आधार है। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है -

काया पाकर तप नहिं कीना, आगम पढ़ नहिं मिटी कषाय, धन को जोड़ दान नहिं कीना, कौन काम कीना तुम आय।
लीना जनम - मरण की खातिर रतन अमोलक दियो गंवाय
फिर यह दुर्लभ देह कठिन है, शास्त्र ज्ञान और नर पर्याय।।

इसलिए मनुष्य जीवन को सार्थक बनाये रखने के लिए पर्यूषण पर्व में निर्मल परिणामों को लाकर अपनी आत्मा को भव - बन्धनों से मुक्त करने का सार्थक प्रयास करें तभी धर्म पुरुषार्थ सार्थक बनेगा।

श्री दिगंबर जैन दातव्य औषधालय
नि:शुल्क चिकित्सालय

दानदाताओं से विनम्र अपील: सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है, पीड़ित मानव की सेवा ही सच्ची करुणा और पुण्य का मार्ग है

श्री दिगंबर जैन दातव्य औषधालय विगत 92 वर्षों से समाज एवं जनसामान्य की नि:शुल्क चिकित्सा एवं औषधि सेवा में निरंतर समर्पित है। यह संस्था आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमंद रोगियों के लिए आशा और विश्वास का केंद्र बनी हुई है।

साधु-संतों, आर्यिका माताजी तथा त्यागी व्रतियों का उपचार हमारे वैद्यराज स्वयम् जा कर करते हैं व वैया वृत्ती करते हैं तथा दवाईयां उपलब्ध कराई जाती है।

औषधालय के अंतर्गत विभिन्न चिकित्सा सेवाएँ निरंतर संचालित हैं, जिनमें -

➲ आयुर्वेदिक चिकित्सा विभाग ➲ होम्योपैथिक चिकित्सा विभाग ➲ हड्डी एवं अस्थि चिकित्सा विभाग ➲ फिजियोथेरेपी विभाग ➲ एक्यूप्रेशर चिकित्सा विभाग प्रमुख हैं। इन विभागों के माध्यम से प्रतिदिन अनेक जरूरतमंद रोगियों को नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श एवं आवश्यक औषधियाँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इस पुनीत सेवा-कार्य को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए औषधालय को समाज के सहयोग एवं दानदाताओं के उदार योगदान की आवश्यकता रहती है। हम समाज के सभी सम्माननीय दानदाताओं एवं सेवाभावी बंधुओं से विनम्र अपील करते हैं कि वे इस मानवसेवा के महान कार्य में यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करें। आपका छोटा-सा योगदान भी किसी जरूरतमंद रोगी के लिए उपचार, राहत और आशा का माध्यम बन सकता है। आइए, हम सभी मिलकर इस 92 वर्षों से चली आ रही नि:स्वार्थ सेवा-परंपरा को और अधिक सुदृढ़ करें तथा अधिक से अधिक जरूरतमंद लोगों तक चिकित्सा सेवा पहुँचाने में अपना योगदान दें। आपका सहयोग केवल दान नहीं, बल्कि मानव सेवा के इस पवित्र यज्ञ में आपकी आहुति है। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपको एवं आपके परिवार को स्वस्थ, सुखी एवं समृद्ध रखें और इस पुनीत सेवा में सहयोग करने का सौभाग्य प्रदान करें।

सादर आभार एवं विनम्र निवेदन

श्री दिगंबर जैन दातव्य औषधालय निम्नलिखित बैंक एकाउन्ट में आप अपनी राशि जमा करा सकते हैं। जमा करा कर अपना पूरा नाम पता निम्न लिखित मोबाइल नं. पर भेज देवें ताकि आपकी रशीद बना कर भेजा जा सकें।

2100/- से अधिक की राशि बैंक में जमा करने से आपका पूरा नाम, पता तथा Pan card no.भी भेजना होगा।

Sri Digamber Jain Datavya Aushdhalya, Punjab National Bank A/c -0089000100147817, NEFT - PUNB 0008900

- भागचन्द काला, मंत्री
मो. 9830145751

जीवन में अहंकार नहीं सरलता जरूरी: मुनि विशद सागर

जैन मंदिरों में गूजे जयकारें, पर्यूषण पर्व पर धार्मिक प्रतियोगिताओं को लेकर उत्साह

ललितपुर। दूसरों की बुराई नहीं अपने को देखने में ही धर्म है। जिसको मन को समझने की इच्छा आ गई तो समझो धर्म समझने की बुद्धि आ गई यही मार्दव धर्म है। अपने जीवन को ऐसा बनाए कि कोई दो बाते कहकर हल्का हो जाए।

जैन पार्श्वनाथ जैन अटा मंदिर में पर्यूषण पर्व के दूसरे दिन मार्दव धर्म पर आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज के प्रभावक शिष्य मुनि श्री विशद सागर महाराज ने धर्म सभा मे उक्त विचार व्यक्त किए। धर्मसभा का शुभारम्भ आचार्य श्री के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्जवलन श्रेष्ठीजनों एवं मंगलाचरण अनीता मोदी द्वारा किया गया। धर्मसभा में अनीता जैन, श्रुति जैन, वरिष्ठि जैन, अर्चित जैन ने तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन किया जबकि अर्घ समर्पण करने का पुण्यार्जन शीलचंद अभिषेक जैन अनौरा परिवार द्वारा किया गया गया। धर्मसभा का संचालन महामंत्री आकाश जैन द्वारा किया गया।

सायंकाल नगर के जैन मंदिरों में सामूहिक आरती के उपरान्त अतिशय क्षेत्र अभिनंदनोदय तीर्थ में जितेन्द्र शास्त्री, जैन अटा मंदिर में अमित जैन शास्त्री, इलाइट जैन मंदिर में प्रिंस शास्त्री, शान्तिनाथ जिनालय में बहन रिया जैन, अंशिका जैन, आदिनाथ जैन मंदिर नई वस्ती में रेशु जैन, सिमी जैन बाहुबलि नगर में इशिता जैन द्वारा शास्त्र सभा के माध्यम से पर्यूषण पर्व में धर्म की महत्ता को बताया जा रहा है। अभिनंदनोदय तीर्थ में सुधा कलश भक्तामर महिला मण्डल के तत्वावधान में एक मिनट प्रतियोगिता सुषमा जैन सीमा मोटर्स के संयोजन में हुई जिसमें विजेता प्रतियोगियों को पुरूष्कृत किया गया। गौरतलब रहे इन दिनों आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज प्रभावक शिष्य मुनि श्री विशद सागर महराज एवं शिव सागर महाराज के ससंघ चातुर्मास से नगर के जैन मंदिरों में प्रवचनों के माध्यम से दस धर्मों की अपूर्व प्रभावना हो रही है जिनको सम्पन्न कराने में नगर की स्वयंसेवी संस्थाओं के अतिरिक्त दिगम्बर जैन पंचायत के पदाधिकारी सक्रिय भूमिका निर्वाहन कर रहे हैं।

आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज को 4-5-6 दिसम्बर को गंगासागर में होने वाले पंचकल्याणक हेतु नारियल भेंट

गंगासागर 13 सितम्बर 2026। परम पूज्य आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज के सानिध्य में होने वाले पंचकल्याणक हेतु प्रातः 10.30 बजे पोन्ड्रा जैन समाज के 35 बुद्धिजीवी प्रतिनिधि हावड़ा क्लब हाउस में महाराज श्री के दर्शन एवं नारियल चढ़ाने हेतु पधारे। मंगलाचरण के पश्चात् पोन्ड्रा जैन समाज के अध्यक्ष डॉ. निर्मल कुमार मंडल एवं अन्य पोन्ड्रा जैन समाज के प्रतिनिधियों ने महाराज श्री के चरणों में अर्घ्य बोलकर नारियल चढ़ाया एवं 3 से 6 तारीख तक संघ सहित गंगासागर विहार के लिये निवेदन किया। तीर्थ संरक्षिणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजकुमार जैन सेठी ने मात्र सात दिन में गंगासागर में वेदी प्रतिष्ठा, चैत्यालय निर्माण एवं मूर्ति स्थापना की जानकारी दी। विद्याधर नगर मंदिर बाजार में जिनालय एवं आचार्य भद्रबाहु दिगम्बर जैन अहिंसा निःशुल्क प्राथमिक विद्यालय के निर्माण हेतु जमीन के कागज महाराजश्री के समक्ष पोन्ड्रा जैन समाज के प्रतिनिधि द्वारा महासभा के प्रतिनिधियों को प्रदान किये गये। इस अवसर पर श्री प्रेमचंद जैन बगड़ा द्वारा 2 लाख रूपये की राशि एवं श्री अमरचंद जैन - पूरणमल-पवन कुमार - विजय - अनिल - संजय- आयुष - कलश - अंकुर - मानव - मोहित - पीयूष एवं समस्त सेठी परिवार (बाय निवासी कोलकाता रांची भीलवाड़ा बंगलौर प्रवासी) द्वारा जिनालय निर्माण हेतु स्वीकृति प्रदान की गयी। रांची जैन समाज द्वारा 7 फुट की खड्गासन प्रतिमा प्रदान की गयी। पोन्ड्रा जैन समाज के अध्यक्ष डॉ. निर्मल कुमार मंडल, जमीन प्रदाता पंकज ताती एवं अनूप हलदर का सम्मान किया गया। परम पूज्य 108 वसुनंदी जी महाराज ने अपना आशीर्वचन देते हुये कहा कि जो भी कार्य करें संकल्प के साथ करें। इस अवसर पर विजय कुमार सरावगी, विकास कासलीवाल, पवन पाटोदी के साथ हावड़ा के काफी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित थे। अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्री विजय कुमार सरावगी द्वारा किया गया।

निवेदक: निर्मल बिंदायका-अध्यक्ष, सुनील पहाड़िया-कार्याध्यक्ष, मनीष गंगवाल-महामंत्री, सनत छाबड़ा-मंत्री, मनोज कासलीवाल-कोषाध्यक्ष, दिनेश गंगवाल-पुरातत्व संयोजक, विजय सरावगी-प्रचार मंत्री, अमित सेठी-सह मंत्री श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा (पश्चिम बंगाल)

आचार्यश्री सुनील सागरजी महाराज ने बंदी भाइयों को दिया व्यसन एवं अपराध मुक्त जीवन का संकल्प

शेखर चंद पाटनी,राष्ट्रीय संवाददाता

13 सितंबर, इंदौर। आचार्य श्री 108 सुनील सागर जी महाराज ससंघ ने विशेष आमंत्रण पर दोपहर 3 बजे जेल परिसर में पहुंचकर बंदी भाइयों को जीवन में सकारात्मक परिवर्तन एवं आत्म-सुधार का प्रेरणादायी संदेश दिया। आचार्य श्री के ओजस्वी एवं मोटिवेशनल प्रवचनों से बंदी, जेल अधिकारी एवं उपस्थित समाजजन गहराई से प्रभावित हुए।

आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि मनुष्य का जीवन परिस्थितियों से नहीं, बल्कि अपने विचारों और कर्मों से बदलता है। यदि व्यक्ति दृढ़ संकल्प कर लें तो वह अपने जीवन की दिशा बदल सकता है। आज भले ही कोई व्यक्ति जेल में हो, लेकिन आत्म सुधार के संकल्प के साथ जब वह बाहर निकले तो समाज और परिवार उसे एक बदले हुए इंसान के रूप में स्वीकार करे। प्रवचन के दौरान बंदी भाइयों ने अत्यंत एकाग्रता एवं श्रद्धा के साथ आचार्य श्री के विचारों को सुना। उन्होंने अपनी जिज्ञासाएं भी रखीं तथा संकल्प लिया कि अब जीवन में किसी भी प्रकार का व्यसन नहीं करेंगे और अपराध से दूर रहकर अपने जीवन को नई दिशा देंगे। इस अवसर पर जेल अधिकारियों ने आचार्य श्री एवं ससंघ का भव्य स्वागत किया। अधिकारियों ने कहा कि आचार्य श्री के प्रवचनों से बंदियों के व्यवहार एवं जीवनचर्या में सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा मिली है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि जब ये बंदी जेल से बाहर जाएंगे तो समाज इन्हें ''सुधार गृह से सुधरकर आए व्यक्ति'' के रूप में देखेगा और इनके परिवारजन भी गर्व के साथ इनका स्वागत करेंगे।

जेल परिसर को इस विशेष आयोजन के लिए सुंदर रंगोली, वंदनवार एवं अन्य सजावट से सजाया गया था। आचार्य श्री के प्रवेश पर पाद प्रक्षालन की मांगलिक क्रिया सपना गोधा, हिना गोधा एवं अनुज गोधा द्वारा संपन्न की गई। कार्यक्रम में चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्वलन जेल अधिकारियों के साथ सुनील गोधा, कमल अग्रवाल, इन्द्र कुमार जी सेठी एवं प्रदीप जैन बड़जात्या द्वारा किया गया।

यह आयोजन पुलकमंच के श्री सुनील जी गोधा एवं चातुर्मास कमेटी के मुख्य संयोजक श्री इन्द्र कुमार जी सेठी के संयुक्त प्रयासों से अल्प समय में आयोजित किया गया। आयोजन को लेकर समाजजनों एवं जेल प्रशासन में विशेष उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर पुलकमंच के प्रदीप जैन बड़जात्या, कमल अग्रवाल, सपना गोधा, हिना गोधा, आशय गोधा (लड्डू), अनुज गोधा, चिराग गोधा, एडवोकेट रोहित जैन, श्री अभिषेक अजमेरा एवं अभिषेक पाटौदी सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में श्रीमान् आलोक अभिसक्ता जैन द्वारा बंदी भाइयों के लिए एक राशि की घोषणा भी की गई, जिसके लिए उपस्थितजनों ने उनका साधुवाद एवं आभार व्यक्त किया।

पद्मावती पोरवाल क्षेत्र समिति के अध्यक्ष सुरेश जैन समरदा भोपाल विधायक प्रतिनिधि राजेश जैन मुस्कान दीपेश जैन भविष्य जैन उज्जवल जैन प्रयास जैन आदि ने

आचार्यश्री सुनील सागरजी को श्रीफल समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

मुनि सविज्ञ सागर महाराज की तप साधना जारी, 186 दिवस में 33 पारणा 153 उपवास की साधना। धन्य हैं गुरु। पद्मावती पोरवाल महासभा क्षेत्रय समिति के प्रवक्ता भविष्य जैन ने बताया कि आदि सागर अंकलीकर परंपरा के चतुर्थ पट्टाचार्य, रत्नत्रयधारी, तपोधन श्रेष्ठ एवं प्राकृताचार्य सुनील सागर महाराज के प्रभावक शिष्य मुनि सविज्ञ सागर महाराज का जीवन संयम, तप एवं साधना की प्रेरणादायी यात्रा का उदाहरण बना हुआ है।

गृहस्थ जीवन में उनका नाम मनीष जैन था। उनका जन्म 7 मार्च 1985 को इंदौर में हुआ। उनके पिता श्री रविकिरण एवं माता श्रीमती रानी शहा हैं। मुनि सविज्ञ सागर महाराज ने आचार्य सुनील सागर महाराज के सानिध्य में ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया तथा दो वर्ष तक वडोदरा में ब्रह्मचर्य जीवन का पालन किया। तप एवं साधना में बनाए अनेक कीर्तिमान - मुनि सविज्ञ सागर महाराज ने अपने संयम जीवन में अनेक कठिन तपस्याएं की हैं। वर्ष 2022 में अजमेर में उन्होंने चार माह तक एकांतर उपवास की साधना की। वर्ष 2023 में भोपाल में 16 कारणजी के अंतर्गत 32 निर्जल उपवास किए। वर्ष 2024 में नैनवां - बूंदी में 48 निर्जल उपवास की कठोर तपस्या की। वर्ष 2025 में अहमदाबाद में उन्होंने 60 उपवास एवं 20 पारणा किए। वहीं वर्ष 2026 में इंदौर में मध्यम तप के अंतर्गत 153 उपवास एवं 33 पारणा की कठिन साधना चल रही है। उनकी तपस्या त्याग, आत्मसंयम और आत्मशुद्धि की दिशा में निरंतर आगे बढ़ने का संदेश दे रही है।

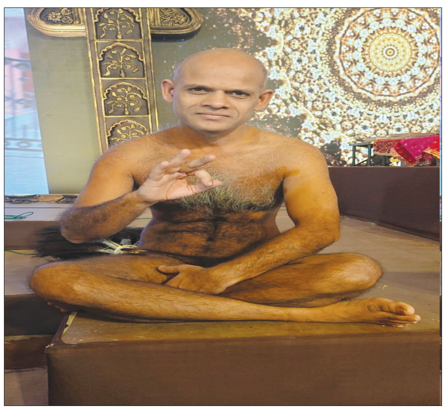

वर्ष 2020 में प्रतापगढ़ स्थित शांतिनाथ मंदिर में आचार्य सुनील सागर महाराज से दो प्रतिमा व्रत ग्रहण किया। इसके बाद 26 जुलाई 2020 को उन्होंने क्षुल्लक दीक्षा धारण की। क्षुल्लक अवस्था में वर्ष 2020 में अंदेश्वर पार्श्वनाथ में 16 उपवास की कठोर तपस्या की। संयम एवं साधना की इसी यात्रा को आगे बढ़ते हुए 15 अक्टूबर 2021 को अश्विन शुक्ला दशमी के पावन अवसर पर अंदेश्वर पार्श्वनाथ में आचार्य सुनील सागर महाराज से मुनि दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान में वे आचार्य सुनील सागर महाराज के संघस्थ मुनि के रूप में धर्म साधना में निरंतर संलग्न हैं। इसी धार्मिक यात्रा के दौरान किशनगढ़ से इंदौर पहुंचे श्रद्धालुओं ने आचार्य सुनील सागर महाराज के दर्शन कर उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद श्रद्धालुओं ने मुनि सुधासागर महाराज के भी दर्शन किए। संतों के दर्शन एवं आशीर्वाद से श्रद्धालुओं ने स्वयं को धन्य माना। किशनगढ़ के भक्तों ने नवग्रह जैन मंदिर, ढाई द्वीप मंदिर, गोम्मटगिरी, सुमति धाम, कांच मंदिर सहित विभिन्न जिनालयों में पहुंचकर जिनेन्द्र देव के दर्शन एवं पूजन अर्चन कर धर्म लाभ लिया।

'क्षमा वीरस्य भूषणम'

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन

उत्तम क्षमा

उत्तम क्षमा

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

श्रीमति कमला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री रतन लाल जी सौगानी के परिवारजन

कैलाश चंद - राजेश देवी (पुत्र-पुत्रवधू), प्रतीक-रिचा, (पौत्र पौत्रवधू) लोकित, द्रव्य (प्रपौत्र) सहित समस्त सौगानी परिवार (चनानी वाले)

-: प्रतिष्ठान :-

The Growing Kids Pre School
Mo. 8003458999

आवास: 1, दिनेश कॉलोनी, सांगानेर, जयपुर-302029
मो. 9829062289/9829018441

'क्षमा वीरस्य भूषणम'

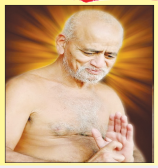

आचार्य विद्यासागर जी महाराज

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

आचार्य विद्यासागर जी महाराज

परवेश जैन-मीनाक्षी जैन

प्रांशु जैन-श्वेता जैन, सुशील जी-प्रीति जैन (बेटी-दामाद), परितेश, प्रिशा, आद्या जैन, लब्धी जैन, दिविषा जैन सहित सभी परिवारजन, सहारनपुर वाले, जयपुर

आवास: 31, गायत्री नगर, चित्रकूट कॉलोनी, सांगानेर, थाना जयपुर-302015 (राज.) मो. 9024074666

'क्षमा वीरस्य भूषणम'

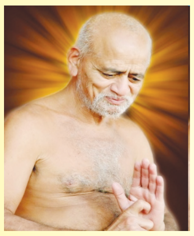

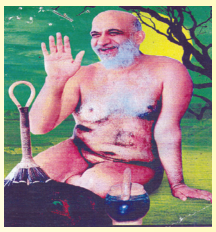

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काय से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

मुनिपुंगव श्री सुधा सागर बालिका छात्रावास

पुण्योदय तीर्थक्षेत्र नसियां जी दादाबाड़ी, कोटा (राजस्थान)

-: प्रवेश प्रारम्भ :-

वातानुकूलित (AC) रूम, अटैच लेटबाथ, सिंगल एवं डबल रूम, कोचिंग तक आने जाने की सुविधा, 24 घन्टे महिला सुरक्षा गार्ड, पूर्ण सुरक्षित परिसर में स्थित शुद्ध सात्विक भोजन।

सम्पर्क:- 9829038906, 7597478711, 6376531154

अध्यक्ष व शिरोमणी संरक्षक	निर्देशक	कोषाध्यक्ष
श्रीमती अर्चना जैन (रानी) दुगेरिया सर्राफ परम संरक्षक डॉ. संतोष जैन	श्रीमती उषा जैन बाकलीवाल सचिव श्रीमती निशा जैन वेद	श्रीमती छाया जैन हरसोरा एवं समस्त छात्रावास परिवार

- मोहि का लक्षण निर्विचारीपना है

- हितैषी का मिलना और हित में लगना ये महाभाग्य से होता है

- उदारता ही आपको बड़े दिल का बनाती है

-संघर्ष से व्यक्ति मजबूत होता है

अपने आत्महित से ज्यादा जरूरी कोई काम नहीं है

- परिणमन से जुड़कर सुखी दुखी होना ही पुण्य पापोदय है

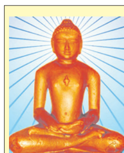

'क्षमा वीरस्य भूषणम'

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काय से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

उत्तम क्षमा

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर प्रबन्धकारिणी समिति, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर

अध्यक्ष	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
प्रेम कुमार जैन रांवका मो. 9413335026	जगदीश चन्द्र जैन मो. 9462863273	सुरेन्द्र कुमार जैन गोधा मो. 9351715386

मंत्री- राजकुमार जैन छाबड़ा, प्रचार-प्रसार मंत्री- आशीष वेद, सांस्कृतिक मंत्री- राजेन्द्र कुमार पाटनी

कार्यकारिणी सदस्य: भागचन्द बाकलीवाल, देवेन्द्र कुमार जैन (भौंच), मनीष जैन (साह), नवनीत सौगाणी, राजेन्द्र कुमार बजाज, उम्मेद मल जैन (पाण्ड्या), अखिलेश गंगवाल, कमल चन्द पहाड़िया, प्रकाश चन्द गंगवाल, प्रेम चन्द्र गंगवाल, रविन्द्र बिलाला सहित सभी सदस्यगण

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काय से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

-: नमनकर्ता/शुभाकांक्षी :-

अशोक कुमार जैन-शकुंतला देवी जैन, अंकित जैन, प्रियंका जैन, आदिश जैन, जेनिशा जैन (चांदवाड़)

-: प्रतिष्ठान :-

ओम राज राजेश्वरी जेम्स एण्ड ज्वलेर्स
मो. 9829058041, 9829581000

1813, बिलाला भवन, ठाकुर पचेवर का रास्ता, तृतीय क्रासिंग, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302018

- मनमर्जी वाला जीव बहुत ऊंचाई तक नहीं पहुंच पाता

- मोह धैर्य नहीं रखने देता है

सभी को उत्तम क्षमा
मिच्छामी-दुक्कड़म्

उत्तम क्षमा

तन-मन की साफ-सफाई का पर्व है
क्षमावाणी...

क्रोध हमें छोटा बनाता है, वहीं क्षमा हमें उन्नति के पथ पर चलते हुए बड़ा बनाती है।

गत वर्ष में हुए ज्ञात अज्ञात अविनय, राग-द्वेष, मनोमालिन्य के लिए क्षमा याचना...

एडवोकेट विकास जैन (दिल्ली)
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थ) संरक्षिणी महासभा
ट्रस्टी-श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चैरिटेबल ट्रस्ट

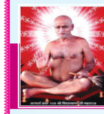

'क्षमा वीरस्य भूषणम्'

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काया से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :

उत्तम क्षमा

उत्तम क्षमा

शिरोमणि संरक्षक श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर, संरक्षक सदस्य: तीर्थ संरक्षिणी महासभा
अश्विनी गोधा-श्रीमती मधु गोधा
अंशुल-श्रीमती पूर्वा, रोहन-सलोनी (पुत्र-पुत्रवधू), रुचिर एवं अद्विक (पौत्र) सहित समस्त गोधा परिवार नेमीसागर वैशाली नगर, जयपुर
आवास: 113, नेमी सागर कॉलोनी, वैशाली नगर, जयपुर-302021 (राजस्थान)

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काया से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

क्षमा प्रार्थी एवं शुभाकांक्षी
राजकुमार जैन
राज मेटल्स
मोती के चवर, गोटा के चवर, छत्र, भामण्डल, मंगल कलश पंचमेरू, शिखर कलश, पाण्डुक शिला, अष्ट प्रातिहार, अष्ट मंगल, सिंघासन, जिनवाणी कवर, ध्वजा, अक्षार, चंदोवा, पटके, मुकुट हार, बैच एवं मंदिर आईटम के निर्माता एवं विक्रेता
9993034735
राजकुमार जैन, फूटाताल स्कूल के पास, 702, हनुमानताल, जबलपुर (म.प्र.) 482002

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काया से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

-: शुभाकांक्षी :-

गुणमाला देवी-धर्मपत्नी स्व. श्री प्रकाश चंद जी काला एवं परिवारजन

सतीश-नीलिमा, एडवोकेट राजेश काला-संगीता काला (एडवोकेट: राजेश काला राजस्थान हाई कोर्ट जयपुर) ➲ डायरेक्टर राजस्थान फाइनेंस कॉरपोरेशन उद्योग भवन जयपुर ➲ कार्यकारिणी सदस्य: राजस्थान जैन सभा ➲ कार्यकारिणी सदस्य: श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, मीरामार्ग जयपुर पंकज-मधु (पुत्र-पुत्रवधु), मधु-पवन, सरिता-युगल किशोर (बेटी-दामाद), रोनिल-उमा, एडवोकेट भव्य-विधि, जिनेंद्र, दक्षा, यशस्वी, खुशबू (पौत्र, पौत्रियां) सहित समस्त काला परिवार जयपुर (राजस्थान)

आवास: 104/102, कबीर मार्ग, मानसरोवर जयपुर-302020 (राजस्थान) मो. 9829637400

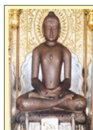

आत्म शुद्धि के महान दशलक्षण पर्व के समापन एवं क्षमा पर्व मन वचन काय से प्राणी मात्र से क्षमायाचना

क्षमा प्रार्थी
नीरज शर्मा 9829139519, 9829021639, 9414250091
ओम प्रकाश शर्मा-श्रीमती विमला देवी शर्मा, नीरज शर्मा-श्रीमती स्वेता शर्मा (पुत्रवधु), नीलम (पुत्री), गोरांग व तनिष्क (पौत्र)
वन्दना आर्ट पैलेस
(निर्माता एवं विशेषज्ञ)
संगमरमर एवं धातु की जैन मूर्ति, वैष्णव मूर्ति, स्टेच्यू, वेदी एवं छतरी
निवास - 260, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड, जयपुर-18 फोन- 0141-2711615
E-mail- info@vandanaartpalace.com
Web : www.vandanaartpalace.com
कार्यालय: 3279, भिण्डो का रास्ता, राजाराम धर्मशाला के पास, दूसरा चौराहा, चांदपोल बाजार, जयपुर- 01

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

मुनिभक्त दानवीर स्व. श्री हंसराज जी जैन अग्रवाल व स्व. श्रीमती चांददेवी जैन एवं स्व. श्री प्रकाशचन्द जी जैन मारूजी लाम्बा वाले परिवार

श्रीमती गायत्री जैन-ध.प.स्व. श्री प्रकाश चन्द जी जैन, गोविन्द जैन-श्रीमती राज जैन (जर्मनी वाले), जगदीश चंद जैन-श्रीमती रेखा रानी जैन, कमल जैन-श्रीमती सुनीता जैन (पुत्र-पुत्रवधु), जितेन्द्र जैन-श्रीमती नियती जैन, विकास जैन-श्रीमती प्रियंका जैन (जर्मनी वाले), अंकित जैन-श्रीमती याशिका जैन, विशाल-श्रीमती अतिका जैन (पौत्र-पौत्रवधु) अमन, प्रांजल एवं डेलिशा (ईशान व विवान जर्मनी वाले) (प्रपौत्र, प्रपौत्री)

प्रतिष्ठान: ➲ हंसराज एण्ड कम्पनी, 75, जौहरी बाजार, जयपुर फोन 0141-2577150, ➲ एच.आर.पैलेस: राज-विकास जैन (जर्मनी वाले), 48-49, चौड़ा रास्ता (नियर साईबाबा मंदिर), जयपुर (राज.) ➲ Jainas Import Export Co. Bangkok (Thailand) ➲ J.V. Diamonds Bombay

आवास: 39, प्रताप नगर, स्कीम-3, ग्लास फैक्ट्री के पास, टोंक रोड, जयपुर (राज.) 0141-2702814

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

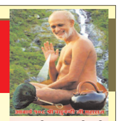

आ. श्री वसुनंदी जी महामुनिराज

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

: शुभाकांक्षी:-
समाज गौरव पदम जैन बिलाला-पुष्पा जैन बिलाला
पारस जैन बिलाला (CA)- दीपिका जैन, पद्दुम जैन बिलाला (ER)- रूचिका जैन, आदिश्री, आदिश, आदित, आदिवा एवं समस्त बिलाला परिवार

-: फर्म :-
जैन पारस बिलाला एण्ड कम्पनी (CA),
कार्यालय: 50 क 2, ज्योति नगर, जयपुर-05
शाखाएं - नई दिल्ली, मुम्बई, नोएडा, कोटा, उदयपुर, जोधपुर

निवास: 21, शिवा कॉलोनी, इमली फाटक, जयपुर-15

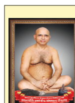

'क्षमा वीरस्य भूषणम्'
श्री पर्यूषण पर्व की भारतवर्ष के समस्त श्रद्धालुओं को हार्दिक शुभकामना व गत्वर्ष जाने अनजाने में हुई गल्तियों के लिए क्षमा याचना

क्षमा प्रार्थी एवं शुभाकांक्षी

राजाबाबू गोधा जैन
जैन गजट संवाददाता- राज.
फागी, जिला जयपुर (राज.)
मो. 9460554501

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

इंजी. पी. सी. छाबड़ा एवं तिलकमती जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जैन इंजीनियर्स सोसायटी फाउंडेशन, प्रदेश का. सदस्य इन्स्टीट्यूशन आफ इंजीनियरिंस (india), अध्यक्ष प्रयास PWD राजस्थान, शिरोमणि संरक्षक दि. जैन महासमिति, मु. संरक्षक अणुव्रत समिति, सदस्य पदमपुरा प्रबंध का. समिति, कनविनियर दि. जै. शि. परिषद, प.संरक्षक सांखना, निमोला, ट्रस्टी ज्ञा.भा. मथुरा चौरासी

डॉ. विपिन-अहिंसा जैन, विनीत-डॉ. संजोली जैन (पुत्र-बहु), डॉ. वन्दना-मोनिल (पुत्री-दामाद), लगन, आदि, निहार (पौत्र), परी एवं यूवी (दोहती-दोहते) सहित समस्त छाबड़ा परिवार, जयपुर (राज.)

निवास: बी-53, जनता कॉलोनी, जयपुर-302004 मो. 9414052412

उत्तम कुमार जैन (पांड्या) उत्कृष्ट योगदान के लिए रॉयल कंज्यूमर क्लब द्वारा विशिष्ट अवार्ड से सम्मानित

10 सितम्बर। प्रसिद्ध समाजसेवी देश के जाने-माने समाज श्रेष्ठी श्री उत्तम कुमार जैन (पांड्या) जयपुर मालवीय नगर निवासी को विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए रॉयल कंज्यूमर क्लब द्वारा 5 सितम्बर, 2026 को विशिष्ट अवार्ड देकर सम्मानित किया गया, कार्यक्रम में जैन गजट के राजाबाबू गोधा को जानकारी पर ज्ञात हुआ कि श्री उत्तम कुमार जी पांड्या को प्रोफेशनल एक्सीलेंस अवार्ड 2026 रॉयल कंज्यूमर क्लब के द्वारा होटल विस्टा मयूरा में उक्त अवार्ड से सम्मानित किया गया। आप विशिष्ट पेशेवर, उद्यमी, समाजसेवी, सामाजिक कार्यकर्ता और विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए पूरे देश में विशिष्ट पहचान रखते हैं।

प्रवचन केसरी विश्रांत सागर महाराज ने दिया धर्म का शत उपदेश

महावीर कुमार सरावगी,
संवाददाता नैनवां, जिला-बूंदी

टूंडला (उत्तर प्रदेश)। 14 सितंबर सोमवार को शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में चातुर्मास के दौरान धर्म सभा में बताया कि आज जो भी साधु के साथ युवा ब्रह्मचारी बनते हैं, रहते हैं उनको गाड़ियों में नहीं पैदल बिहार करना चाहिए। दोनों समय आहार न करके एक समय शुद्ध आहार करना चाहिए। बाजारों की सभी वस्तुओं का त्याग करना चाहिए। सर्दी-गर्मी, बरसात में साधु के साथ नंगे पैर बिहार करें, अपने संपूर्ण इंद्रियों पर मन पर पूरा-पूरा कंट्रोल करें।

उन्होंने यह भी बताया कि सफेद वस्त्र पहनने से, गाड़ी में भ्रमण करने से, अच्छे पकवान माल खाने से ब्रह्मचारी नहीं कहलाते। तप की साधना करने पर ही वह ब्रह्मचारी कहलाते हैं। आज साधु के पास ब्रह्मचारी बनने की होड़ाहोड़ लग रही है। वही ब्रह्मचारी दीक्षा लेकर दिगंबर संत बन जाते हैं। साधना के पहले दीक्षा देना गलत हैं। संतों को और समाज को ऐसे ही लोग बदनाम कर देते हैं।

अपने पति को मारकर महिलाएं दीक्षा ले रही हैं – आज की पत्नी अपने पति को अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए मारकर सती सावित्री का ढोंग कर रही है।

महाराज श्री ने बताया कि आज के युग में मनुष्य सबसे बड़ा विश्वास केवल अपनी पत्नी पर करता है वही एक विश्वास का रिश्ता है। महिलाएं मोबाइल से इतने गलत कार्य कर रही हैं कि अपने सुंदर शरीर को भोगों के लिए अपने पति तक को मरवा देती हैं। ऐसी पत्नी जीवन में कभी सुखी नहीं रह सकती और दीक्षा लेना चाहती है, जब जांच पड़ताल होती है पुलिस आती है पकड़कर ले जाती है तब वह पत्नी दोनों परिवारों का नाम खराब कर देती है। वह पत्नी इतनी नीचे गिर जाती है कि किसी को मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहती। सभी महिलाओं को मुनिश्री ने उपदेश में यह भी कहा कि केवल मात्र पत्नी अपने पति से रिश्ता रखें अन्य को पिता, भाई, पुत्र के समान ही समझें। जिला बूंदी से नैनवां गांव के भक्तों ने सुनील कुमार जैन मारवाड़ा परिवार सहित टूंडला पहुंचकर मुनिश्री का आशीष प्राप्त किया। पांचवीं बार नैनवां के भक्त टूंडला पहुंचे - धर्म सभा में पुरुषों महिलाओं ने मुनिश्री का जय-जयकार किया।

अपने को कुछ समझने वाले से दूर रहना ही समझदारी है।

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

नवरत्न जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन

फागी वाले जयपुर, चण्डीगढ़
● श्रमण संस्कृति संरक्षक ●
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री दिगम्बर जैन महासभा
वर्तमान अध्यक्षः श्री दिगम्बर जैन समाज, चण्डीगढ़
विनोद कुमार-श्रीमती सुलोचना जैन,
प्रमोद कुमार-श्रीमती विनिता जैन,
राजेश कुमार-श्रीमती स्नेहलता जैन,
दीपक कुमार-श्रीमती चेतना जैन सहित सभी
(चौधरी) जैन परिवार फागी, जयपुर वाले (चण्डीगढ़)

फर्मः पी. के. एजेन्सीज, आर्टिफिशियल ज्वैलरी (चण्डीगढ़) एवं जैन एजेन्सीज, वैशाली बिन्दी के विक्रेता, सदर बाजार, नई दिल्ली

पताः 1467, सेक्टर-40 बी, चण्डीगढ़ (यू. टी.)
मो. 09417112412, 9646902295

क्षमावाणी के परम पुनीत स्वर्णिम सुअवसर पर हृदय के गहन स्थल से अन्तर्मन मन से हार्दिक क्षमा याचना

क्षमाप्रार्थी/शुभाकांक्षी

अमरचंद दीवान
उषा दीवान

अध्यक्ष-जैन सोश्यल ग्रुप अरिहन्त,
महामंत्री-श्री पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, खोरा बीसल,
मंत्री-श्री चन्द्रप्रभु अतिशय क्षेत्र चन्द्रगिरी बैनाड़,
कोषाध्यक्ष-राजस्थान जैन सभा, संयोजक-श्री दि. जैन पदयात्रा संघ 2011, कार्यकारिणी सदस्य-श्री दि. जैन एकता मंच जयपुर, सदस्य-वीर सेवक मंडल, जयपुर
स्व. श्रीमती विमला देवी जैन
धर्मपत्नी श्री निहालचंद जी जैन के परिवारजन

अमरचंद दीवान-उषा दीवान, नेमीचन्द-ज्योति (पुत्र-वधु), शुभम-सुधा (पौत्र-पौत्रवधु) अंशुल, नैतिक, रचित (पौत्र) दिव्या-मयूर जी जैन (पौत्री-दामाद) सहित समस्त पाण्ड्या परिवार खोरा बीसल, झोटवाड़ा, जयपुर-302012 मो. 9928852440

गरिमामति माताजी

1008 श्री शान्तिनाथ भगवान

गंभीरमति माताजी

क्षमावाणी के परम पुनीत स्वर्णिम सुअवसर पर हृदय के गहन स्थल से अन्तर्मन मन से हार्दिक क्षमा याचना

श्री श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर समिति मेहरपुर (सिलचर) असम पिन-788015

संरक्षकः महावीर कुमार सेठी
अध्यक्षः पवन कुमार पांड्या मो. 9435072660/9435070640
महामंत्रीः दिलीप विनायक्या
कोषाध्यक्षः पंकज बाकलीवाल
वर्षायोग संयोजकः मनोज कुमार पाटनी
सह-संयोजकः आकाश गंगवाल
सहित समस्त कार्यकारिणी
श्री 1008 शांतिनाथ जिनालय मेहरपुर सिलचर (असम)

क्षमावाणी पर्व पर विगत् वर्ष में हुई भूलों के लियेआप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

क्षमाप्रार्थी/शुभाकांक्षी

श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सेक्टर-6 हीरा पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020

संरक्षक	अध्यक्ष	मंत्री
हंसराज लुहाड़िया	धनकुमार कासलीवाल	सुरेन्द्र कुमार जैन
60/162 मो. 7427863719	69/418 मो. 9414359660	63/36 मो. 9829087096

उपाध्यक्ष-विमल जैन (वाटिका), संयुक्त मंत्री-महेन्द्र कुमार बड़जात्या, कोषाध्यक्ष-सुरेश कुमार छाबड़ा, सह-कोषाध्यक्ष-ताराचन्द पाण्ड्या, संगठन मंत्री-प्रकाश पाटनी, सांस्कृतिक मंत्री-पारसमल जैन, मुनिसंघ व्यवस्था मंत्री-राजेन्द्र कुमार सोनी, भंडार मंत्री-देवेन्द्र कुमार वैद, प्रचार प्रसार मंत्री-सुभाष चन्द गोधा, भवन निर्माण मंत्री-अशोक जैन, कार्यकारिणी सदस्य-हीरालाल सेठी, पारस जैन (पार्षद), राजेन्द्र कुमार सोगानी, राजेन्द्र प्रसाद गोधा, पंकज जैन बोहरा, सुनील पाण्ड्या, वीरेन्द्र कुमार जैन (लदाना), विशाल ठोलिया

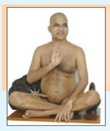

क्षमावाणी के परम पुनीत स्वर्णिम सुअवसर पर हृदय के गहन स्थल से अन्तर्मन मन से हार्दिक क्षमा याचना

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

देव प्रकाश खंडाका-श्रीमती कल्पना खण्डाका एवं सतीश खंडाका, आदर्श खण्डाका, तृप्ति खण्डाका एवं समस्त खण्डाका परिवार, जयपुर (राज.)

प्रतिष्ठान- देव प्रकाश खण्डाका सर्राफ एण्ड कम्पनी ज्वैलर्स
गोल्ड एवं सिल्वर ज्वैलर्स

179-किशनपोल बाजार, जयपुर-302001 (राज.)
फोनः 0141-2313635, 2205822

हुकुमचंद धन कुमार पाटनी परिवार द्वारा मंदारगिरी, चंपापुर व भागलपुर की ऐतिहासिक यात्रा

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

कोलकाता प्रवासी लाडनूं निवासी हुकमचंद धनकुमार पाटनी परिवार द्वारा महेंद्र पिंकी पाटनी की 40वीं वैवाहिक वर्षगांठ पर मंदारगिरी, चंपापुर व भागलपुर की यात्रा 150 साधर्मी बंधु बांधवों के साथ कराई गई।

कोलकाता से वंदे भारत द्वारा रवाना होकर मंदारगिरी में प्रथम पड़ाव था व वहां पर मंदार पहाड़ी व नीचे मंदिर के दर्शन करने के उपरांत भोजन करके गाड़ियों द्वारा चंपापुर की ओर यात्रा अग्रसर हुई। करीबन डेढ़ घंटे बाद चंपापुर सभी यात्री पहुंचे और वहां जाकर भोजन करके मंदिरों के दर्शन किया व रात्रि में रामकुमार द्वारा आरती व भजनों का कार्यक्रम किया गया। सुबह उठकर मंदिर में अभिषेक प्रछाल के बाद पंचपरमेष्ठी विधान, विधानाचार्य संदीप जी शास्त्री द्वारा व संगीतकार रामकुमार जी के सानिध्य में संपन्न हुआ। दो दिवसीय यात्रा बड़ी धूम धाम के साथ संपन्न हुई और सभी तीर्थयात्रियों ने बहुत आनंद लिया।

धर्मगुणामृत ट्रस्ट गुणस्थली चकवाड़ा में 48 दिवसीय भक्तामर महामंडल विधान का हुआ समापन

राजाबाबू गोधा, फागी, संवाददाता (राजस्थान)

13 सितम्बर। धर्मगुणामृत ट्रस्ट गुणस्थली चकवाडा में गणाचार्य कुन्थूसागर जी महाराज की सुयोग्य शिष्या गणिनी आर्यिका सम्मेद शिखर माताजी एवं आर्यिका केवल श्री माताजी ससंघ चकवाडा के धर्मगुणामृत ट्रस्ट गुणस्थली पर वर्धमान निलय में पावन चातुर्मास 2026 का 42 वां चातुर्मास कर रही हैं, कार्यक्रम में राजस्थान जैन महासभा शाखा फागी के महामंत्री राजाबाबू गोधा ने बताया कि उक्त संघ के सानिध्य में शांतिनाथ जिनालय में 27 जुलाई से चल रहे 48 दिवसीय भक्तामर महामंडल विधान का आज विश्व शांति महायज्ञ के साथ भव्य समापन हुआ। कार्यक्रम में जानकारी पर बताया कि उक्त आर्यिका संघ पावन चातुर्मास वाचना में गुण स्थली चकवाड़ के वर्धमान निलय में धर्म की भव्य प्रभावना बढ़ रही है, जहां पर काफी श्रृद्धालुओं का तांता लगा रहता है, कार्यक्रम में आर्यिका सम्मेद शिखर माताजी ने बताया कि भक्तामर महामंडल विधान जैन धर्म का एक अत्यंत प्रभावशाली पवित्र और चमत्कारिक अनुष्ठान है जो आचार्य मानतुंग स्वामी द्वारा रचित है तथा जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान की भक्ति पर आधारित है, इस विधान से सभी प्रकार के भय, रोग, मानसिक संताप, नष्ट हो जाते हैं, इससे मन में शांति, आत्म बल, आत्मविश्वास और सात्विकता का संचार होता है, उन्होंने कहा कि जब कोई भक्त पूरी श्रद्धा और संयम के साथ इस विधान पर अर्घ्य समर्पित करता है तो असाता वेदनीय और पाप कर्मों की निर्जरा होती है और पुण्य का संचय होता है। कार्यक्रम में परम पूज्य वाणीसिद्ध मुनि श्री गुण सागर जी महाराज के आशीर्वाद से परम पूज्य आर्यिका श्री सम्मेदशिखर माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में विधानाचार्य मनीष गोधा लदाना वालों के दिशा निर्देश में इस विधान का समापन हुआ, कार्यक्रम में गुणस्थली के प्रबन्धन मैनेजर जयकुमार बड़जात्या चोरू ने बताया कि इस अवसर पर धर्मगुणामृत ट्रस्ट के अध्यक्ष विमल बड़जात्या मदनगंज किशनगढ़, ट्रस्ट के संयोजक डा. अशोक जैन अनोपडा, महामंत्री जय कुमार गंगवाल, नवीन गंगवाल, हरक चंद गंगवाल, महेंद्र कासलीवाल, विनोद कलवाड़ा, विमल कुमार - विमला देवी जैन मालपुरा, अनिल कुमार गंगवाल - सीमा देवी जैन, जयकुमार जैन, ममता जैन, मंजू गंगवाल, चंचल गंगवाल, ममता, अनीता, हर्ष जैन मध्य प्रदेश तथा विमल कुमार जैन सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

आचार्य शांति सागर महाराज का समाधि दिवस महती धर्म प्रभावना से मनाया

दिगंबर संतों में प्रथमाचार्य आचार्य शांति सागर महाराज थे: आर्यिका संस्कृति श्री माताजी

महावीर कुमार सरावगी, संवाददाता जैन गजट

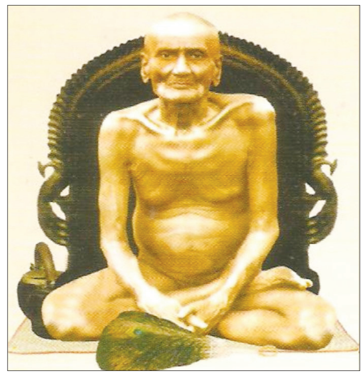

नैनवां जिला-बूंदी 12 सितंबर 2026। शांति वीर धर्म स्थल संस्कृति श्री माताजी के सानिध्य में महान संत आचार्य शांतिसागर महाराज का समाधि दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर बाबूलाल जैन बरमुंडा, शैलेंद्र जैन मारवाड़ा, सतीश सेठी, विनोद जैन उपस्थित रहे।

आपका बचपन का नाम सात गोड़ा पाटिल था। 25 जुलाई 1872 आषाढ़ शुक्ल विक्रम संवत 1929 जन्म भोज ग्राम जिला कर्नाटक के नाना के घर पर आपका जन्म हुआ था। आपके पिता भीमगोडा पाटिल माता सत्य देवी थीं। घर पर माता-पिता को देखकर बचपन से ही आप में धर्म के संस्कार कूट-कूट कर भरे हुए थे। नव वर्ष की अल्पायु में आपकी शादी 6 वर्ष की बालिका से हुई 6 माह बाद बीमारी से पत्नी मृत्यु होने पर इन्हें संसार असार लगा और वैराग्य हो गया।

दक्षिण भारत में जैन धर्म को कोई नहीं जानता था। अपने धर्म का ज्ञान देकर जैन धर्म का बीजारोपण किया। अपने क्षुल्लक ऐलक दीक्षा के बाद देवेंद्र कीर्ति महाराज से मुनि दीक्षा धरण की। गुरु माता ने बताया कि शांति सागर महाराज ने पूरे भारत में भ्रमण कर जैन धर्म व महावीर के सिद्धांतों को बताया। आज उनकी बदौलत से यह दिगंबर साधु देखने को मिल रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि पहले जिनालय में हरिजन जाना चाहते थे, शांति सागर महाराज ने उन्हें रोकने के लिए बहुत प्रयास किए थे। जब सफलता न मिली तो उन्होंने 1105 दिन तक अन्न आहार त्याग किया। उनके त्याग बलिदान से सरकार द्वारा यह आदेश प्रसारित किया गया कि जैन मंदिरों में हरिजन का प्रवेश नहीं होगा। धर्म की सुरक्षा के लिए यह जैन संत ने सत्याग्रह किया था।यह भी बताया कि आज दिगंबर साधु जो दिखाई दे रहे हैं यह सब उनकी बदौलत हैं। उनकी तप साधना की कोई कीमत नहीं चुका सकता। सभी भक्तों ने अवतरण दिवस पर श्रद्धांजलि देकर उनके बताए हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा ली।

अखिल भारतीय विद्वत संगोष्ठी का आयोजन

क्षपणासार ग्रंथ के कर्मसिद्धांत पर देशभर के विद्वान करेंगे चिंतन-मंथन

महावीर ठोले

छत्रपति संभाजीनगर। वर्तमान युग में ज्ञान के विकास तथा श्रुतज्ञान के प्रकाश को जन-जन तक पहुँचाने में विद्वत संगोष्ठियों का विशेष महत्व है। ऐसी संगोष्ठियों में देशभर के विद्वान विभिन्न शास्त्रों का गहन अध्ययन एवं मनन कर उनके सार को आचार्य एवं साधु-संतों के सन्निकट प्रस्तुत करते हैं। इससे शास्त्रीय ज्ञान का आदान-प्रदान होता है तथा नवीन चिंतन और शोध को दिशा मिलती है। इसी उद्देश्य को लेकर आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के सुशिष्य परम पूज्य उच्चारणाचार्य विनम्र सागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय विद्वत संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। यह संगोष्ठी वर्षायोग समिति, श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, राजा बाजार, छत्रपति संभाजीनगर, महाराष्ट्र द्वारा 5, 6 एवं 7 अक्टूबर को आयोजित होगी। संगोष्ठी का मुख्य विषय आचार्य नेमीचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती द्वारा रचित कर्मसिद्धांत के महत्वपूर्ण ग्रंथ 'क्षपणासार' पर केंद्रित रहेगा। इस विषय पर देशभर से आए लगभग 40 मूर्धन्य एवं जाने-माने विद्वान अपने गहन अध्ययन, चिंतन एवं शोधपरक विचार प्रस्तुत करेंगे। 'क्षपणासार' में प्रतिपादित कर्मसिद्धांत के विभिन्न पक्षों को सरल, शास्त्रीय एवं आध्यात्मिक दृष्टि से समझने का यह महत्वपूर्ण अवसर होगा।

यह संगोष्ठी संघस्थ श्रमण विज्ञसागर जी महाराज के प्रमुख निर्देशन, इंदौर के डॉ. अनुपम जैन के नेतृत्व तथा डॉ. आशीष कुमार जैन, ब्रह्मोरी के संयोजन में संपन्न होगी। संगोष्ठी में अखिल भारतीय शास्त्री परिषद के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांश कुमार जैन, बड़ौत, डॉ. सुदर्शन लाल जैन, भोपाल, डॉ. नीलम जैन, ललितपुर, डॉ. सनत जैन, जयपुर, डॉ. हरिश्चंद्र जैन, मुरैना, डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली सहित देश के अनेक विद्वान अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

छत्रपति संभाजीनगर से महावीर ठोले एवं उज्वला शाह भी इस विद्वत संगोष्ठी में सहभागी रहेंगे। 'क्षपणासार' जैसे महत्वपूर्ण कर्मसिद्धांत ग्रंथ पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से विद्वानों का एकत्र होकर चिंतन करना जैन आगम, दर्शन एवं कर्मसिद्धांत के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण अवसर है। इससे समाज में शास्त्र-अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा नई पीढ़ी को जैन दर्शन की गहन एवं वैज्ञानिक परंपरा से परिचित होने का अवसर मिलेगा। आयोजकों ने धर्मप्रेमी बंधुओं, शास्त्र प्रेमी समाजजनों एवं जिज्ञासु विद्यार्थियों से आग्रह किया है कि वे संगोष्ठी में उपस्थित होकर विद्वानों के विचारों का श्रवण करें तथा अपने ज्ञान में वृद्धि करें। उक्त जानकारी श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा, महाराष्ट्र प्रांत के महामंत्री महावीर ठोले ने दी।

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

महान क्षमावाणी पर्व पर हम सभी देशवासियों, जैन बंधुओं से जाने-अनजाने में प्रमादवश हमारी वाणी द्वारा आपके कोमल हृदय को आघात पहुंचा हो तो उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं

"आर्यिका संस्कृति श्री माताजी को त्रिकाल नमोस्तु"

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

श्रीमती कमला जैन हरसौला, श्री नरेंद्र कुमार जैन, श्रीमती मंजू जैन, पुत्रः रोहित-श्रीमती श्वेता जैन, निखिल, पारुल, क्रिनय, अग्रिम, अर्हम, हितार्थ जैन हरसोला परिवार, नैनवां जिला बूंदी-323801 (राजस्थान) मो. 9460865371

धार्मिक उल्लास और प्रेरणा का केंद्रः "समवशरण" क्विज प्रतियोगिता

शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

दशलक्षण पर्व के पावन अवसर पर भगवान महावीर दिगंबर जैन मंदिर (8।, चौरंगी टेरेस, कोलकाता) में 13 सितंबर 2026 को एक विशेष धार्मिक क्विज प्रतियोगिता 'समवशरण' का भव्य आयोजन किया गया। आर्यिका वर्धस्वनंदिनी माताजी के पावन सानिध्य में संपन्न इस आयोजन ने सभी उपस्थित श्रद्धालुओं के मन में धर्म और अध्यात्म की गहरी छाप छोड़ी। इस अद्वितीय आयोजन की संचालिका थीं श्रीमती रिंकू काला, श्रीमती रश्मि झांझरी, श्रीमती नीलू छाबड़ा एवं श्रीमती अनुभा छाबड़ा, घंटी संचालिका थी श्रीमती नवीना गदिया एवं श्रीमति रश्मि पांड्या और अंक पट्ट पर थीं श्रीमती रजनी पांड्या।

प्रतियोगिता के परिणाम – इस ज्ञान वर्धक प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया, जिसके परिणाम इस प्रकार रहेः प्रथम स्थान (संयुक्त रूप से) - विनीता अजमेरा एवं श्वेता जैन, द्वितीय स्थान (संयुक्त रूप से) - प्रीति पाटनी, निकुंज जैन एवं मानसी जैन, तृतीय स्थान - प्रेरणा पाटनी।

सफलता के मुख्य बिंदु – विशेष प्रेरणाः इस उत्कृष्ट प्रतियोगिता की रूपरेखा श्रीमती हीरामणि छाबड़ा की अंतरंग भावना से प्रेरित थी, जिसका उद्देश्य समवसरण के गहन चिंतन द्वारा जीवन को सार्थक बनाना था।

सहयोग एवं आभार – कुशल संचालिकाओं के उत्कृष्ट संचालन, श्रीमान रजनीश जी कला द्वारा किए गए सुंदर मुद्रण कार्य और मंदिर के सभी ट्रस्टीगण के निरंतर प्रोत्साहन ने इस आयोजन को ऐतिहासिक बना दिया। यह आयोजन सभी के लिए ज्ञान, भक्ति और सकारात्मकता का एक अनूठा संगम साबित हुआ।

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है।

संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA

ACCOUNT NO. - 2405000100033312

RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow Pin Code - 226004 (U.P.)

"सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।"

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

ऋषभ कुमार सेठी, कविता जैन,
अंकुर जैन, अंचल जैन,
हरिधान सेठी, अनुज जैन,
नेहा जैन, विरान्स जैन,
राघव जैन, काव्या जैन
तिलक नगर, जयपुर (राज.)
मो. 9414041003

आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो, कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

नरेन्द्र-अंजु काला,
विकास-स्नेहलता, प्रवीण-पूजा
दर्शन-दर्शिका, रिया, वारिधि, मानविक एवं
समस्त काला परिवार
जैन रेडीमेड सेन्टर,
किशनगढ़ रेनवाल जयपुर (राज.)
मो. 8302351051

मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या भूलकर,
हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर,
अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी,
अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Pramod jain
Rashtriya Upadhayaksh & Trusty Bharat
Varshiya Dig. Jain Mahasabha C. Trust
21/359, Dharmpura
Near Shantinath Jain Mandir, Canal Road,
Baraut, Baghpat (U.P.)
Mob. 8077577336

"सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।"

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

प्रकाश चन्द
महेंद्र कुमार पाटोदी
श्री कमल रोडवेज
हुता, बी एच रोड,
भद्रावती-577301 (कर्नाटक)
मो. 9844008587

मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या भूलकर,
हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर,
अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी,
अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

टीकमचंद जैन (अजमेरा)
डिस्ट्रिक्ट एंड सेशन जज Retd
दिसपुर - गुवाहाटी (आसाम)
मो. 8638734706

निज जीवन को हमने यूं आसान कर लिया।
कभी क्षमा मांग ली तो, कभी क्षमा कर दिया।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Shubham Jain
Energy Developers
House No- 419-420-421,
Sector-17 Faridabad-
121004 (Haryana)
Mob. 8826115116

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन
साधु संतों के पावन चरणों में कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन
अभिनंदन क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Mahesh Jain Sethi
Siddhi Vinayak Logistics
C-82 jawahar Colony
Kampoo Lashakar Gwalior
(M.P.) 474001
Mob. 9884191722

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में
कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

राजेन्द्र प्रसाद-इन्दिरा कोठारी
संगठन महामंत्री - श्री भारतवर्षीय
दिगम्बर जैन महासभा, प्रान्तीय अध्यक्ष
श्रुत संवर्धिनी महासभा राजस्थान प्रांत,
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
ट्रस्टी - श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन
महासभा चेरिटेबुल ट्रस्ट, दिल्ली

उत्तम क्षमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई'
"सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।"

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Dr. Pradeep Kumar Jain
C.G.M, Modern Dairies
H.No. 688, Sector 7
Karnal (Haryana)
Mob- 9896063435

सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान दिगम्बर जैन साधु संतों के पावन चरणों में
कोटिशः हार्दिक नमन् वंदन अभिनंदन क्षमा पर्व पर हार्दिक क्षमायाचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

AN ISO 9001 - 2015 : 14001 COMPANY
FCC & CE MARK
Kunthcab
the future is here ...

AJAY JAIN
A-57, JHILMIL INDUSTRIAL AREA
DELHI - 110095
Mob- 9810210433 & 9873748888

क्षमा वीरों का आभूषण है

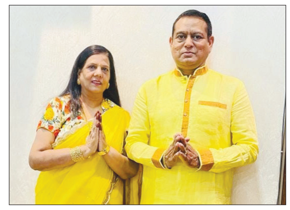

- निर्मल- पुष्पा बिंदायका, कोलकाता

जैन धर्म का मुख्य पर्व पर्यूषण पर्व हमको धर्म के मार्ग पर ले जाकर मोक्ष के मार्ग की ओर अग्रसर करता है, पर्युषण पर हमारे अंतःकरण में दया, क्षमा और मानवता जगाने का कार्य करता है, क्षमा हमारे अहंकार को दूर करके हमको झुकने की प्रेरणा देती है, क्षमा करने और मांगने से अहंकार का विनाश होता है, जिसके पास क्षमा भाव है वह हमेशा सुखी रहता है, उसके कोई शत्रु नहीं होते हैं, क्षमा भाव से जीवन में अच्छे संस्कार बनते हैं अतः क्षमा को जीवन में उतारना ही सच्ची मानवता है तभी अपना जीवन सुख शांति से व्यतीत होगा।

क्षमा से बड़ा कोई धर्म नहीं है

-अर्चना जैन रानी सर्राफ (दुगोरिया), कोटा अध्यक्षाः सुधा सागर छात्रावास, कोटा

जीवन में क्षमा से बड़ा कोई धर्म नहीं है, क्षमा कोई एक शब्द नहीं है बल्कि क्षमा जीवन दर्शन है, मानव जीवन की सबसे पवित्र भावना क्षमा है, जिसने जीवन में एक क्षमा भाव अपना लिया उसके लिए सुख, शांति, प्रेम एवं भाईचारा के सारे रास्ते खुले रहते हैं, यह पर्व वर्ष में कटुता, द्वेषता, जाने अनजाने में हुई गलतियों को, समाप्त जीवन में नई शुरुआत करने का अवसर देता है अतः क्षमा करना और क्षमा मांगना जीवन के महत्वपूर्ण अंग है जिससे जीवन में खुशहाली बनी रहती है।

क्षमा वाणी आत्म शुद्धि का पर्व है

- अनिल कुमार-उषा देवी जैन बनेठा वाले, सांगानेर जयपुर

मनुष्य के जीवन में क्षमा की बड़ी आवश्यकता है, सभी जीव आपस में क्षमा भाव करना सीख लें तो संपूर्ण विश्व में सुख, शांति, समृद्धि का माहौल तैयार हो सकता है। क्षमावाणी पर्व हमारे बैर, कलुषता, दुश्मनी, तमाम प्रकार की दुश्मनी को मिटाकर जीवन में प्रेम, वात्सल्य, आत्मीयता, बढ़ाती है, हमें कषायों को छोड़कर बैर भाव की गांठों को खोलना चाहिए, बुराइयों को समाप्त करना चाहिए तथा बदले की भावना को छोड़कर आपस में प्रेम बढ़ाना चाहिए। क्षमा सभी तरह से हितकारी है, क्षमा करना, क्षमा मांगना महान गुण है, जो मनुष्य के जीवन में सुख शांति लाता है।

मासिक णमोकार महामंत्र पाठ एवं भक्तामर स्तोत्र का भव्य एवं भक्तिमय आयोजन सम्पन्न

गुरुग्राम, पालम विहार। प्रत्येक माह आयोजित होने वाले मासिक णमोकार महामंत्र पाठ की पावन श्रृंखला के अंतर्गत रविवार को श्री 1008 भगवान महावीर दिगम्बर जैन मंदिर (महावीरोदय धर्मस्थल), पालम विहार, गुरुग्राम में 108 बार णमोकार महामंत्र पाठ एवं भक्तामर स्तोत्र पाठ का अत्यंत श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ पुण्यार्जक परिवारों के आत्मीय स्वागत एवं मंगल कामनाओं के साथ हुआ। इस अवसर पर संस्थान के परम संरक्षक श्री गजराज जी गंगवाल एवं श्रीमती हेमलता जी गंगवाल, श्री विकास जी एवं श्रीमती रुचि जी गंगवाल, श्री आकाश जी एवं श्रीमती शीतल जी गंगवाल तथा समस्त गंगवाल परिवार ने सकल जैन समाज के साथ मंगल दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इसके उपरांत 108 बार णमोकार महामंत्र एवं भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक पाठ अत्यंत श्रद्धा, शुद्ध भाव एवं आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ सम्पन्न हुआ। पुण्यार्जक परिवार के सदस्यों एवं समाज के श्रद्धालुजनों ने अत्यंत मधुर, प्रभावशाली एवं भावपूर्ण शैली में णमोकार महामंत्र का जाप किया। उनके उत्कृष्ट उच्चारण एवं भक्तिभाव से सम्पूर्ण मंदिर परिसर आध्यात्मिक चेतना एवं भक्ति की दिव्य ऊर्जा से गुंजायमान हो उठा।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर भगवान श्रीजी की भव्य महाआरती सम्पन्न हुई। पुरुषों, महिलाओं एवं मातृशक्ति ने अत्यंत श्रद्धा, उल्लास एवं भक्तिभाव के साथ आरती में सहभागिता की। भगवान श्रीजी के समक्ष चँवर ढुलाते हुए श्रद्धालुओं का समर्पण, उत्साह एवं भक्ति देखते ही बनती थी। सम्पूर्ण मंदिर परिसर धर्ममय वातावरण एवं भगवान के जयघोषों से गुंजायमान हो उठा। आरती के उपरांत पुण्यार्जक परिवारों की ओर से समस्त समाज के लिए सुरुचिपूर्ण स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई। समाज के सभी छोटे-बड़े, महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं ने प्रेम, आत्मीयता एवं सौहार्द के साथ स्वल्पाहार ग्रहण कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर वर्धमान आध्यात्मिक संस्थान, गुरुग्राम की कार्यकारिणी एवं संस्था के अनेक पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं एवं सफल आयोजन में संस्थान के प्रधान श्री राकेश कुमार जैन, श्री विपिन कुमार जैन, श्री पंकज जैन, श्री गौरव जैन, श्री विमल कुमार जैन, श्री अशोक कुमार जैन, श्री सुभाष जैन, श्री सौरभ जैन, श्री नीरज जैन सहित अन्य समाजबंधुओं ने सक्रिय सहभागिता एवं सहयोग प्रदान किया।

– वर्धमान आध्यात्मिक संस्थान, गुरुग्राम

उत्तम क्षमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई ’
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

श्री राजेश जैन
जी 501, पायनियर पार्क
सेक्टर 61, गुरुग्राम
(हरियाणा) 122001
मो. 9313574712

‘क्षमा वीरस्य भूषणं’
आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

अशोक जैन चूड़ीवाल
बड़पेटा रोड (आसाम)
मो. 9435124862

उत्तम क्षमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई ’
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

राज कुमार टोंग्या-श्रीमती सुनीता टोंग्या
अभिनव जैन, मेघा जैन, नेहा, खुशी, रुही, वंश

Rajkumar Tongya
Shrut Sanvardhini Mahasabha, Dream House, Godrej Building
G. S. Road, Ullu Bari, Guwahati, Assam
Cell : 09864027882

मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तःकरण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखता हूँ।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-
हेमचंद जैन
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं संयोजक
(श्री गोपाल दिग. जैन सिद्धान्त संस्कृत महाविद्यालय मुरैना)
रिषभ विहार, दिल्ली
मो. 9810015678

''सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।''
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

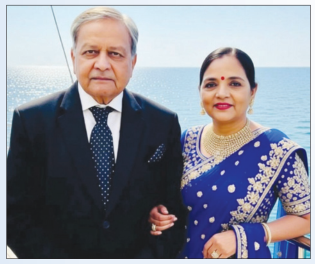

रमेश कुमार-गुणमाला
अभिषेक-रिषिका
आशीष-स्वाति, अर्हम, सर्वज्ञ,
अनिष्का काला,
हैदराबाद
Jawarilal Ramesh Kumar Kala, Hydrabad

‘क्षमा वीरस्य भूषणं’
आत्म शुद्धि के महापर्व पर्यूषण के सानन्द सम्पन्न होने पर गत वर्ष में जाने-अनजाने में, राग-द्वेष पूर्वक, मन वचन और काय से यदि आपका दिल दुखाया हो कोई दुःख पहुँचाया हो तो सच्चे हृदय से क्षमा याचना करते हैं।
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

हंसमुख जैन गांधी
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
राष्ट्रीय मंत्री- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
संपादक
सर्वाधिक लोकप्रिय दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका, मंगवाने हेतु सम्पर्क करें- मो. 9302103513

‘उत्तम क्षमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई ’
मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तः करण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखता हूँ।
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

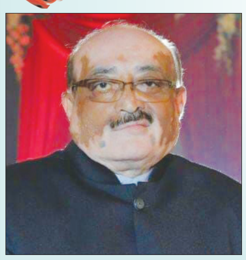

अनिल लुहाड़िया
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिग. जैन महासभा
अध्यक्ष - मुरादाबाद दिग. जैन समाज
जेड-28, मानसरोवर कॉलोनी
उपाध्यक्ष (प्रथम) श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर
रामनगर किला जिला- बरेली
मुरादाबाद (उ. प्र.) 244001 मो. 9837030030

‘क्षमा वीरस्य भूषणं’
मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या भूलकर, हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर, अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी, अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।
-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

गजेन्द्र जैन, कुनकुरी
राष्ट्रीय महामंत्री- श्री भारतवर्षीय खंडेलवाल दिगम्बर जैन महासभा,
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
मो. 09425251222

दिगम्बर जैन समाज के प्रमुख श्री दशलक्षण पर्व समारोह की सानन्द सम्पन्नता पर आत्मशुद्धि के महापर्व क्षमावाणी के अवसर पर विगत वर्ष में हमसे जाने-अनजाने में मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तःकरण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हैं तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखते हैं।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Bandhan
MARRIAGE BUREAU
A Bond of Trust, A Lifetime of Happiness

Our Main Motive
Jain Samaj ke Ladka Ladki
Jain Samaj mein hi jaaye.

We are dedicated to bringing Jain families together within our **values, culture** and **traditions.**

For Jain Samaj Only
Verified Profiles & Trusted Service
Our Priority is Your Family's Happiness

Same Values.
Same Culture.
Stronger Bonds.
Beautiful Relationships.

Contact Us
9892904956 | bhandhan75@gmail.com

MUMBAI • PUNE • INDORE • DELHI

मनुष्य के जीवन में क्षमा का बहुत बड़ा महत्व है

- श्रीमती चित्रा गोधा-धर्मपत्नी राजाबाबू गोधा, फागी

क्षमावाणी पर्व हमें जीवन की नई शुरुआत करने का मौका देती है, क्षमा करना, क्षमा मांगना, मनुष्य का बहुत बड़ा हथियार है, जिसके फलस्वरूप सभी का जीवन निर्मल हो जाता है, क्षमा का अर्थ है सहनशीलता, क्षमा करने से अहंकार का नाश होकर शांति का संदेश मिलता है, भूल होना प्रकृति का स्वभाव है, मान लेना संस्कृति है और सुधार लेना प्रगति है। क्षमा नफरत का निदान है, क्षमा नैतिकता का निर्वाह है, जिसके जीवन में क्षमा भाव है उसका जीवन सार्थक हो जाता है अतः जीवन में क्षमा शीलता का बहुत बड़ा महत्व है।

मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तःकरण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखता हूँ।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

संजीव जैन
मैसर्स - जैन प्लास्टिक
369-ए, मोतीनगर,
ऐशबाग लखनऊ
(उ. प्र.) 226004
मो. 9415017824

मन-वचन-काय से हुई भूलों के लिए अपने अन्तःकरण को निर्मल करते हुए आप सभी से हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ तथा सभी जीवों पर क्षमाभाव रखता हूँ।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

ATPL
ABHINAV TRADEX PVT. LTD.

ABHINAV TRADEX PVT. LTD.
Mfg. of Thermal Paper & Carbonless Paper
Indentors, Importers & Convertors of All Grades of Paper & Board

Indresh Kumar Jain
Director

OFFICE :
5/2389/103, New Mela Ram Market
Chatta Shahji, Chawri Bazar, Delhi-06
M: 7065363080

FACTORY :
23/20, Ambay Garden, Main G.T.
Kamal Road, Libaspur, Delhi-110042

EMAIL : abhinavtradex2001@gmail.com, acctsatpl@gmail.com
WEBSITE : www.abhinavtradex.com

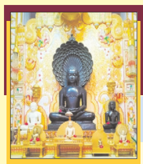
जिनालय वेदी गम्भीरा

श्री दिगम्बर जैन धर्मोदय तीर्थक्षेत्र गम्भीरा त. नैनवा जिला-बून्दी (राज.)

आचार्य 108 वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ एवं समस्त आर्यिका संघ को त्रिकाल नमोस्तु

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

आ. धर्मसागर जी महाराज

आचार्य सुंदर सागर महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका संस्कृति श्री माताजी वन्दामि

कमलेश जैन सोगानी (अध्यक्ष)

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

परम संरक्षक-शैलेन्द्र मारवाड़ा-9414963219, अध्यक्ष-कमलेश जैन सोगानी-9414963007, कोषाध्यक्ष-महावीर सरावगी, मंत्री-विनोद कुमार मारवाड़ा-9214962870, संरक्षक-सुनिल मारवाड़ा-9460134336, एडवाइजर -मोहन मारवाड़ा, पारस जैन मित्तल-पलाई, सुरेन्द्र जैन-पलाई, प्रकाश जैन बड़जात्या 'बाबा' एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य धर्मोदय तीर्थ क्षेत्र पलाई-323801

श्री दिगम्बर खण्डेलवाल सरावगी तेरहपंथ जैन मन्दिर, नैनवां, जिला-बूंदी

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

आचार्य सुंदर सागर महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका संस्कृति श्री माताजी को वन्दामि

(अध्यक्ष)

दिनेश कुमार जैन ठोलिया-9214680545

उपाध्यक्षः महावीर कुमार सरावगी - 9414963129
संयोजकः सूरजमल जैन बैद - 9214824678
कोषाध्यक्षः प्रदीप जैन बजाज -9829500779
कार्यकारिणी सदस्यः राजकुमार कटारिया, अशोक पाटोदी, राजेन्द्र बैद, सुनिल बैद, छोटूलाल जैन शाह

श्री दिगम्बर जैन नेमिनाथ संघियों का जैन मंदिर कार्यकारिणी

उत्तम क्षमा हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काया से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

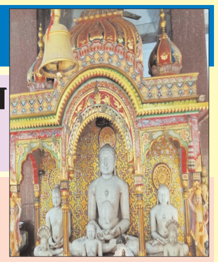

आचार्य सुंदर सागर महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका संस्कृति श्री माताजी वन्दामि

प्रमोद कुमार जैन (अध्यक्ष)

-: नमनकर्ता/शुभाकांक्षी :-

अध्यक्षः प्रमोद कुमार जैन-9414946726, उपाध्यक्षः कमलेश जैन सोगानी, कोषाध्यक्षः श्री पारस कुमार जैन, नाहरगांव वाले, सह-कोषाध्यक्षः श्री ललित कुमार जैन, बाछोला वाले, संरक्षकः प्रकाश जैन बाबा, निर्मल जैन पाटनी, बाबूलाल जैन पाटोदी, मंत्रीः कमल जैन कासलीवाल, सदस्यः वीरेन्द्र जैन, दीपक जैन अजमेरा, राजेन्द्र जैन, रजलावता वाले

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन
आचार्य सुंदर सागर महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका संस्कृति श्री माताजी को वन्दामि

-: नमनकर्ता/शुभाकांक्षी :-

सुरेन्द्र कुमार जैन सिंगल (अध्यक्ष दिगम्बर जैन समाज, गोठडा वाले), पलाई जिला-टोंक (राज.)
श्रीमती रिंकू जैन, नवीन, हर्षित, रियांशी जैन पलाई, टोंक-304024 मो. 8118875379

-: फर्म :-

जैन किराणा मर्चेन्ट, पलाई

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षों में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित - शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

प्रज्ञान सागर जी महाराज एवं प्रसिद्धसागर जी महाराज को त्रिकाल नमोस्तु
आचार्य सुंदर सागर महाराज की शिष्या आर्यिका संस्कृति श्री माताजी को वन्दामि

-: नमनकर्ता/शुभाकांक्षी :-

श्रीमती रतन देवी जैन
दिनेश कुमार-मंजु जैन, सौरभ, ज्योति, शुभम-श्रीमती पायल जैन, एरांशी, दिव्यांसी जैन समिधी वाले, नैनवां

-: प्रतिष्ठान :-

एस. एस. ट्रेडर्स
एस. डी. ओ. बंगले के सामने, नैनवां, मो. 9413088483

नोटः पत्तल, गैस के चूल्हे उचित रेट पर मिलने का एक मात्र स्थान

मनाया रोट तीज पर्व

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

13 सितम्बर। फागी कस्बे सहित परिक्षेत्र के जैन धर्मावलंबी बन्धुओं ने आज रोट तीज का पर्व हर्षोल्लास पूर्वक मनाया, कार्यक्रम में राजस्थान जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने बताया कि फागी परिक्षेत्र के चकवाडा, चोरू, मंडावरी, नारेडा, मेहंदवास, नीमेडा, लसाडिया तथा लदाना सहित कस्बे के आदिनाथ जिनालय, पार्श्वनाथ जिनालय, मुनि सुव्रतनाथ जिनालय, त्रिमूर्ति मंदिर, पार्श्वनाथ चैत्यालय, चंद्रप्रभु नसियां तथा चंद्रपुरी दिगम्बर जैन मंदिर सहित सभी जिनालयों में श्रद्धालुओं ने श्री जी के समक्ष रोट, घृत, खीर, बूरा एवं रायता अर्पित कर सुख समृद्धि की कामना की, इसी कड़ी में महिला मंडल की रेखा झंडा एवं शोभा झंडा ने बताया कि यह पर्व भाद्रपद शुक्ला तृतीया को हर वर्ष मनाया जाता है, इस दिन श्रद्धालु एक ही प्रकार के अनाज से रोट बनाकर खाते हैं तथा एकासन व्रत करते हैं, इस दिन चौबीस तीर्थंकरों की पूजा कर संयम का संकल्प लिया जाता है, इस दिन महिलाओं द्वारा छहों रसों का त्याग करके अन्तर्राय रहित एकासन व्रत किया जाता है, कार्यक्रम में समाज की मुन्ना अजमेरा एवं चित्रा गोधा ने बताया कि रोट तीज जैसे व्रतों और पर्वों के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में संयम, उपवास एवं त्याग को अपनाकर आत्म कल्याण हेतु अपने कर्मों की निर्जरा करता है, कार्यक्रम में आर्यिका श्रुतमति माताजी ने बताया कि यह व्रत तीन, बारह और चौबीस वर्ष करना चाहिए, इससे लक्ष्मी अटल रहती है और को कुप्रथाओं का त्याग करके शील सहित धर्म-ध्यान में लीन रहते हुए चारों प्रकार का दान करना चाहिए।

उत्तम क्षमा

आत्मशुद्धि के महापर्व पर्यूषण के पुनीत अवसर पर गत वर्ष में हुए ज्ञात-अज्ञात अविनय, राग-द्वेष मनोमालिन्य के लिए क्षमा याचना
क्षमा प्रार्थी/शुभाकांक्षी

आचार्य सुंदर सागर महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका संस्कृति श्री माताजी वन्दामि

जियो और जीने दो का मार्ग बताने वाले भगवान महावीर थे

-: शुभाकांक्षी एवं नमनकर्ता :-

कमल कुमार जैन मारवाड़ा
(अध्यक्ष-बीसपंथ समाज नैनवां, महावीर जिनालय शांतिवीर धर्मस्थल)
मो. 9214408656

श्री ज्ञानचंद जैन हरसोला (मंत्री) मो. 9928516039
श्री कमल कुमार जैन (कोषाध्यक्ष) मो. 9414963136

श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सांखना, जिला-टोंक (राजस्थान)

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन

-: क्षमा प्रार्थी/शुभाकांक्षी :-

आचार्य सुंदर सागर महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका संस्कृति श्री माताजी को वन्दामि

"आचार्य इन्द्रनंदी जी महाराज समस्त ससंघ को त्रिकाल नमोस्तु"

अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द जी सोनी सांखना मो. 9414558485	मंत्री प्यारचन्द जैन, छान मो. 9829108025	कोषाध्यक्ष मनीष जैन बज देवड़ावास मो. 9929382623

➡ यह क्षेत्र दिन दुगनी रात चौगनी तरक्की की ओर बढ़ रहा है और यह अध्यक्ष प्रकाश जी सोनी एवं कार्यकारिणी के प्रयास का फल है।

आयोजकः श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सांखना (टोंक) राज.

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन

आचार्य सुंदर सागर महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका संस्कृति श्री माताजी को वन्दामि

महावीर कुमार जैन सरावगी
जैन गजट संवाददाता, नैनवां
श्रीमती गुणमाला, अविनाश, दिव्या, नितिन, चारू जैन, परी जैन, अर्हम जैन, मिनी जैन आदि समस्त परिवारजन

निवासः सुरेश नगर, मकान नं. 16/17, दुर्गापुरा जैन मन्दिर के पास, जयपुर मो. 9414963129

जैन समाज के सभी विज्ञापन, समाचार छपाने के लिए सम्पर्क करें नैनवां - 9414963129

'उत्तम क्षमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई '

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

निर्मला जैन

अनिल कुमार-माधुरी जैन, सुनील कुमार-शालिनी जैन
आदित्य, क्रतिका, विराज, दर्शी एवं समस्त दगड़ा परिवार
कलवाडा महिन्द्रा वल्ड सिटी जयपुर (राज.) मो. 9983675581

अभिषेक संपन्न

श्री 1008 भगवान महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, महावीरोदय धर्मस्थल, पालम विहार, गुरुग्राम में दिनांक 05 सितम्बर 2026 को अत्यंत पावन, मंगलमय एवं भव्य मंजन एवं अभिषेक संपन्न हुआ। मंदिर जी में जैन समाज के श्रद्धालु परिवारों की युवा पीढ़ी और छोटे-छोटे बच्चों ने भारी उत्साह और श्रद्धा के साथ सहभागिता की, इस अवसर पर भगवान की सभी शुद्ध पवित्र प्रतिमाओं का श्रद्धापूर्वक मंजन एवं अभिषेक किया गया। लगभग तीन से चार घंटे तक चले इस अनुष्ठान में मंदिर जी की बेदियों की साफ-सफाई से लेकर प्रतिमाओं के मंजन, अलंकार एवं अन्य सभी धार्मिक व्यवस्थाओं को पूरी पवित्रता और मर्यादा के साथ पूरा किया गया।

आठवीं पुण्यतिथि - भावभीनी श्रद्धांजलि

कर्मठ, धर्मनिष्ठ, समाजसेवी, सुसंस्कारित एवं हमारे आदर्श
जिनका संपूर्ण कर्मशील जीवन वन्दनीय है। जिनके ऊंचे और सच्चे आदर्श आज भी हमारा जीवन पथ
आलोकित कर रहे हैं उन्हें आदर्शो का अनुकरण करते हुए हम आपको भावपूर्ण श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

जन्म:
21 फरवरी 1950
आष्टीकला (राज.)

स्वर्गवास:
25 सितम्बर 2018
मुम्बई (महा.)

स्व. भागचन्द जैन पाटनी

(सुपुत्र स्व. मांगीलाल जी पाटनी-स्व. बिदामि देवी पाटनी)
आपकी स्मृतियां सदैव हमारे मानस पटल पर अंकित रहेंगी.....

-: श्रद्धावनत :-

विद्या देवी पाटनी (धर्मपत्नी)
विमला पाटनी, चन्द्रकला पाटनी (भ्राता-वधु)
संतोष - किरण पाटनी (भ्राता-भ्राता वधु)
प्रियंका पाटनी (पुत्रवधु), विकास - प्रगति पाटनी (पुत्र-पुत्रवधु)
उत्सव, कुशाग्र (पौत्र), ज्यान्सी, विधि (पौत्री)
सुनील-सुमन, कल्पना, विजय-श्रद्धा, नीरज-नीलयान्सा (भतीजा-भतीजावधु)
एकता-विकास झांझरी, मुम्बई (पुत्री-दामाद)
एवं समस्त पाटनी परिवार

फर्म: एम. आर. एण्ड कम्पनी रांची
मो. 9334722110

एम. आर. साड़ी इम्पोरियम, सूरत
मो.: 9825137520

अन्य शाखायें: रायपुर, कोलकाता, बनारस

नवीं पुण्य तिथि

जन्म
10 मई, 1957
दांता रामगढ़
जिला-सीकर, राज.

महाप्रयाण
25 सितम्बर, 2017
लखनऊ

10/05/1957 - 25/09/2017

हमारे प्रेरणास्त्रोत, धर्मनिष्ठ, मुनिभक्त, परम उदार एवं सरल स्वभावी, व्यवहार कुशल

स्व. श्री ज्ञानचंद जी जैन बाकलीवाल

(दांता रामगढ़ जिला सीकर (राज.) निवासी - लखनऊ प्रवासी)

आपकी अनुकरणीय, ओजस्वी, उत्कृष्ट, धार्मिक, सामाजिक, व्यापारिक एवं पारिवारिक कर्त्तव्यबद्धता, सरलता, उदारता हम सभी का सदैव पथ प्रदर्शित करती रहेगी।
"आपकी छवि विस्मृत हो ना पायेगी, आपका व्यवहार आपकी बातें सदैव याद आयेगी"

दिनांक 25 सितम्बर, 2026 को नवीं पुण्य तिथि पर हम आपको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

-: श्रद्धासुमन अर्पितकर्ता :-

श्रीमती गिनिया देवी जैन (धर्मपत्नी)
विकास - तृप्ति, विशाल - नेहा, अंकित-पूनम (पुत्र-पुत्रवधु)
गर्व, रेयांश जैन (पौत्र), अक्षिता जैन, हियान्वी जैन (पौत्री)

-: प्रतिष्ठान :-

मैसर्स ज्ञान जी ट्रेडिंग कम्पनी
ए. वी. एम. फूड एन्ड बेवरेज

आवास: गुलमर्ग अपार्टमेन्ट, फ्लैट नं. सी-403, नियर ऐशबाग रेलवे स्टेशन, मोतीनगर, लखनऊ-4 (उ.प्र.)

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. बेटे का समय कैसा चल रहा है, वह अभी नौकरी करता है - अभिमन्यू जैन, रोहणी

उत्तर - अभिमन्यू जी, बेटे की कुंडली में बुध की भद्रा योग की दशा चल रही है, वह बहुत जल्द अपना व्यापार करेगा। सवा 5 रत्ती का पन्ना रत्न बुधवार को सीधे हाथ की सबसे छोटी उंगली में चांदी में धारण करवायें, लाभ होगा।

प्रश्न 2. शादी का योग कब है - पल्लवी, दिल्ली

उत्तर - पल्लवी जी, कुंडली में स्थित ग्रहण दोष शादी में रुकावट पैदा कर रहा है। विधि-विधान से ग्रहण दोष की शान्ति करायें। शादी तुरन्त होगी।

प्रश्न 3. आजकल मेरे साथ कुछ भी ठीक नहीं चल रहा है। किसी के साथ भी अच्छा करने की कोशिश करता हूँ, मगर उसका नुकसान हो जाता है - दिलीप दोषी, कोलकाता (प. बंगाल)

उत्तर - कुडंली में चल रही चाण्डाल दोष की दशा के कारण ऐसा होता है। श्री आदिनाथ जी का चालीसा पढ़ें तथा मोरपंख साथ रखें।

प्रश्न 4. क्या मेरा जन्म मूलों में हुआ है? अगर हां तो क्या शान्ति करानी चाहिये? - राहुल, मेरठ

उत्तर - राहुल जी, आपका जन्म मूल गण्डमूल नक्षत्र में नहीं है इसलिये शान्ति की आवश्यकता नहीं है।

गुरुजी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 8826755078

मन से, वचन से, कर्म से, अभिमान में या फूलकर,
हमने दुखाया हो कभी, दिल आपका यदि भूलकर,
अथवा किये अपराध हों, गत वर्ष में जो कुछ कभी,
अपनी सरलता से उन्हें, करना कृपया क्षमा सभी।।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

ज्ञानचन्द्र पाटनी
दुर्ग
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन
(तीर्थ संरक्षिणी) महासभा
मोबा. 9893182255

स्वर्गीय कुसुम जी संघी - विनम्र श्रद्धांजलि

जयपुर निवासी श्रीमती कुसुम संघी धर्मपत्नी श्री उमरावमल जी संघी का असामयिक निधन दिनांक 13 सितम्बर 2026 को जयपुर में हुआ। मेरे पूजनीया भुवाजी के देहावसान की खबर सुनकर मुझे अत्यन्त मानसिक पीड़ा हुई। रेवासा निवासी स्व. लक्ष्मीनारायण छाबड़ा एवं स्व. जोरावर देवी की सुपुत्री कुसुम का शुभ विवाह दिनांक 13 मई 1968 को जयपुर निवासी श्री नथमल जी संघी एवं श्रीमती सौभाग्य देवी के सुपुत्र श्री उमरावमल जी संघी के साथ हुआ। श्रीमती कुसुम जी अत्यन्त धार्मिक, सहज, सरल, विनम्र, मृदुभाषी एवं सेवाभावी व्यक्तित्व की धनी थीं। उनका स्वभाव अत्यन्त स्नेहपूर्ण, आत्मीय एवं मिलनसार था। परिवार के प्रति अपने उत्तरदायित्व का कुशलता पूर्वक निर्वहन करते हुये अपने परिवार को धर्म, संस्कार, प्रेम और सेवा की भावना से सींचते हुये एक आदर्श गृहणी एवं धर्मपरायण महिला के रूप में अपना जीवन व्यतीत किया।

कुसुम जी संघी अपने पीछे पति-श्री उमरावमल संघी, पुत्र-श्री नवीन संघी एवं पुत्र वधु श्रीमती दीपाली, पुत्री श्रीमती निलिमा एवं दामाद श्री विजय कोठारी (USA) पौत्र नमित एवं पौत्रवधु दिशिका, पौत्र भव्य, पौत्री नेहल एवं पौत्री दामाद तराश, दोहिता जीत एवं नवन, दोहिती आशिका तथा समस्त भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। मैं उनकी विदेही आत्मा को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि उनको अपने चरणों में स्थान दे और परिवारजनों को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति दें। ऊँ शांति !

-प्रमोद कुमार छाबड़ा, गुवाहाटी

'उत्तम क्षमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई '
'सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी ना घबराये।
बैर-पाप-अभिमान छोड़कर, नित्य नये मंगल गायें।"

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

Devendra Jain (Kanungo)
675, Guru Teg Bahadur Nagar,
Jalandhar-144003
(Punjab)
Mob- 9814082221

शोक समाचार

रायपुर। मध्य भारत दिगंबर जैन समाज की धर्मनिष्ठ, देव, शास्त्र, गुरु को समर्पित सुश्राविका श्रीमती देउ बाइ गोधा (धर्म सहायिका - स्व. श्री जगदीश चंद जी गोधा) का सोमवार 14.09.2026 को देह परिवर्तन (निधन) हो गया। एक तरफ संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्या सागर जी महाराज के सुशिष्य 108 मुनि श्री आगम सागर जी महाराज के संघ के आहार चर्या की तैयारी और अचानक शायद ईश्वर को और कुछ मंजूर था, प्रातः 3.30 बजे इस नश्वर काया को त्याग कर श्री जी के चरणों में जा विराजीं।

विदित हो कि परम मुनि भक्त, समाज श्रेष्ठी स्व. श्री जगदीश चंद जी गोधा 17.01.2002 को नित्य पूजन पश्चात् 108 चिन्मय सागर जी महाराज के संघ की आहार चर्या हेतु कमंडल में शुद्धि का जल डालते समय देव, शास्त्र, गुरु और संपूर्ण समाज के समक्ष मालवीय रोड मंदिर परिसर में ही देव गति को प्राप्त हुए थे। देउ बाइ गोधा संसार से विदा होते हुए भी अपने नेत्रों से दो लोगों को नयन ज्योत प्रदान कर गइं।

- विजय गोधा

Dolphin Waterproofing
For Your New & Old Construction
आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें, सीलन, लीकेज व गर्मी से राहत एवं बिजली के बिल मे भारी बचत करें।
छत व दीवारों का बिना तोडफोड के सीलन का निवारण
Rajendra Jain
Dr. Fixit Authorised Project Applicator
80036-14691
116/183 Agarwal Farm opp. D Mart Mansoravar Jaipur

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबाइल - 08290950000
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000

महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985

कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड,
ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा,
5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर
कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर प्रतिवर्ष अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

पर्यूषण पर्व में जैन पर्वों के दौरान अभक्ष्य पदार्थों, मांस विक्रय केंद्र एवं बूचड़खाने बंद रखने के आदेश पर जैन समाज ने जताया आभार

15 सितम्बर। जैन समाज के पवित्र पर्व पर्युषण एवं दशलक्षण पर्व के दौरान अभक्ष्य पदार्थों, मांसाहार की बिक्री पर रोक लगाने की मांग को लेकर अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान, प्रांत-राजस्थान ने राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा को तथा राज्य मंत्री झाबर सिंह खर्रा को पत्र के माध्यम से संवत्सरी पर्व (15 सितंबर 2026), अनंत चतुर्दशी (25 सितंबर 2026) एवं क्षमावाणी पर्व (27 सितंबर 2026) के अवसर पर प्रदेशभर में मांस विक्रय केंद्र, बूचड़खाने तथा सभी अभक्ष्य पदार्थोंअंडा-मछली-मांस विक्रय केंद्र बंद रखने की जैन समाज की मांग को स्वायत्त शासन विभाग द्वारा आदेश दिनांक 09/09/26 जारी करने पर समाज ने राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया है। कार्यक्रम में संस्थान के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री संजय जैन बड़जात्या कामवन के अनुसार कामां के पूर्व प्रधान रविंद्र जैन जुरहरा व संस्थान के प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला तथा धर्म जागृति संस्थान के प्रवक्ता राजाबाबू गोधा ने 15 सितंबर को संवत्सरी, 25 सितंबर को अनंत चतुर्दशी तथा इस बार 27 सितंबर को क्षमावाणी पर्व के अवसर पर भी सभी संबंधित मांस विक्रय केंद्र, पशु वध प्रतिष्ठान, बूचड़खाने तथा अंडा-मछली विक्रय केंद्र बंद रखने के स्पष्ट आदेश जारी किए जाने की सरकार की सराहना की है।

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काया से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

स्वर्गीय श्री केसरमल जी एवं स्व. श्रीमती पाना देवी पांड्या जैन के परिवारजन खोरा बिसल वाले

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री निर्मल कुमार जैन (पाण्ड्या)
➡ पूर्व सरपंच ➡ अध्यक्ष-जैन सोशल ग्रुप सिद्धा ➡ पूर्व उपाध्यक्ष-आमेर सरपंच परिषद् ➡ पूर्व अध्यक्ष - श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर झोटवाड़ा ➡ मुख्य समन्वयक-श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर झोटवाड़ा ➡ महासचिव -विद्याधर नगर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी ➡ उपाध्यक्ष- ब्लॉक कांग्रेस कमेटी झोटवाड़ा

श्रीमती तारा देवी जैन

➡ पूर्व सरपंच-खोरा बिसल ➡ पूर्व सदस्य-पंचायत समिति खोरा बिसल ➡ उपाध्यक्ष-श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन महिला मंडल, झोटवाड़ा, अमित पाण्ड्या-श्रीमती रीना जैन (पुत्र-पुत्रवधु) ➡ उपाध्यक्ष-श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर झोटवाड़ा नवयुवक मंडल, वाणी एवं मात्रा (पौत्री) कुमारी पूजा (पुत्री) ➡ अध्यक्ष-बालिका मंडल दिगम्बर जैन मंदिर झोटवाड़ा

आवासः प्लाट नं. 49, अवधपुरी कॉलोनी, कांटा चौराहा, झोटवाड़ा, जयपुर-302012 (राज.) मो. 9461413288, 8559966528, 9887244679

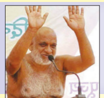

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षो में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

अरूण शाह श्रीमती-ज्योति शाह

(भारतीय जीवन बीमा विकास अधिकारी, जयपुर, अध्यक्ष-श्री दिगम्बर जैन मंदिर महारानी फार्म गायत्री नगर, जयपुर, सदस्य-संस्कृत महाविद्याय, जयपुर, सदस्य-महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद्, जयपुर), आलोक शाह-प्रमिला शाह, मेजर अर्जित शाह (पुत्र), विरल शाह (पुत्र), आयुषी - अनिमेष जी सेठी (बेटी-दामाद), दीशिता (दोहिती) व समस्त शाह परिवार, जयपुर

आवासः सुधा जीवन, 299-गायत्री नगर ए, महारानी फार्म, दुर्गापुरा-302016, 9829059365

क्षमावाणी पर्व पर विगत वर्षो में हुई भूलों के लिये आप सभी से हार्दिक क्षमा याचना सहित

शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी

पारस जैन-श्रीमती राधा जैन

राहुल-नेहा जैन, राशु- रिचा जैन, रोहित आरती जैन सहित समस्त परिवारजन आगरा वाले, सिद्धार्थ नगर, जयपुर (राज.)

Radhika Jewelscraft (P) Ltd.
C-58, Ayodhya Enclave, Ground Floor, Mahaveer Marg, C-Scheme, Jaipur-302001
E-Mail : radhikajewels@yahoo.co.in
www.radhikajewels.in
Contect : (o) 0141-2364545
M : +91-9214014119

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

श्रीमती तारामणी जैन धर्मपत्नी स्व. बाबूलाल जी जैन
अक्षय जैन (मोदी)-रीना जैन, कृतिका-शुभम जी (पुत्री-दामाद), स्पर्श जैन (पुत्र)
एवं समस्त मोदी परिवार

1. अध्यक्षः श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर, मधुबन कॉलोनी, जयपुर (राज.) 2. पूर्व सदस्यः राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी 3. पूर्व महामंत्रीः राजस्थान प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग 4. पूर्व अध्यक्षः जैन सोशल ग्रुप वीनस

आवासः बी-24-ए, मधुबन कॉलोनी, किसान मार्ग टोंक फाटक, जयपुर-302015 मो. 9829256913

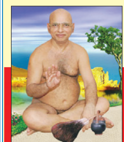

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

हमारे द्वारा जाने अनजाने में मन वचन और काया से आपको दुख पहुंचाया हो तो पर्यूषण महापर्व पर हम आपसे क्षमा याचना करते हैं।

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

धर्मचंद पहाड़िया

➡ राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
➡ राष्ट्रीय प्रमुख तीर्थ रक्षक गुल्लक योजना
➡ श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा

कार्यालयः श्री मेंशन, 22 गोदाम, जयपुर
फोनः 0141-2218282 मो. 9829054646

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन

: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

श्रीमती आशा जैन धर्मपत्नी स्व. सुकुमार जैन, सुरेश कुमार-सुशीला जैन, तेज प्रकाश-तिलका, विकास-सुप्रिया, धवल-खुशबू, कुणाल, अतिशय, अमोल व काश्वी सहित समस्त सोनी परिवार उदयपुर वाले, जयपुर (राज.)

निवासः सी-49, खादी कॉलोनी, बजाज नगर, जयपुर - 302015
36, तारानगर विस्तार जगतपुरा, जयपुर मो. 9252750400

आत्मशुद्धि के महापर्व पर्यूषण के पुनीत अवसर पर गत् वर्ष में हुए ज्ञात-अज्ञात अविनय, राग-द्वेष मनोमालिन्य के लिए क्षमा याचना

-: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

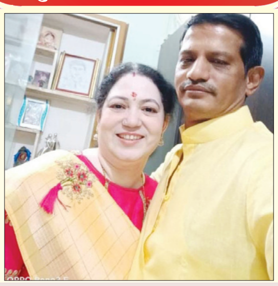

श्री सुनील पहाड़िया-श्रीमती नीना पहाड़िया

अभिनव पहाड़िया (पुत्र), रोमिका-सारंग काला चंदलाई वाले, अर्पिता-अंकित पाटोदी (नावा वाले), सोनीपत (बेटी दामाद), सुजय, राजवी, सुयश और मौलिक (दोहिता-दोहिती) सहित समस्त पहाड़िया परिवार जयपुर (राज.)

निवासः 149, गणेश नगर, Jalsa Banquate के पीछे, राधा निकुंज, जयपुर-302020 मो. 9314995657

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन

-: क्षमाप्रार्थी :-

श्रीमती ललिता देवी चांदवाड़ धर्मपत्नी स्व. श्री बृजेश कुमार चांदवाड़, वरूण-श्रीमती सोनिया, विनीत-रश्मि (पुत्र-वधु), वंश, रूहिका चांदवाड़ (पौत्र-पौत्री), श्वेता-मनीष जी जैन, (बेटी-दामाद), भव्या, भावित सहित समस्त चांदवाड़ परिवार

प्रतिष्ठानः चांदवाड़ फाइनेन्स ब्रोकर, 769, बोरडी का रास्ता, किशन पोल बाजार, जयपुर (राज.) मो. 9314037392, 9828021195

निवासः ए-86, सिद्धार्थ नगर, टोंक रोड, जयपुर-302017 (राज.)

क्षमावाणी के शुभ अवसर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में विराजमान साधु सन्तों के पावन चरणों में नमन

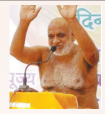

: शुभाकांक्षी एवं क्षमा प्रार्थी :-

कैलाशचन्द्र एवं श्रीमती स्नेहलता बैनाड़ा

ज्ञान चंद, सुनिल-अनिला, (भाई-बहू), अमित-प्रीति, (पुत्र-पुत्रवधू) भव्य, सानवी (पौत्र, पोत्री) सहित समस्त बैनाडा परिवार सांगानेर

पताः 52, चित्रकूट कॉलोनी, एयरपोर्ट सर्किल, सांगानेर, थाना जयपुर (राज.)

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा
राणा प्रताप बाग, दिल्ली में लगभग 2011 वर्ग गज में बनेगा
दिल्ली में बहुपयोगी सर्वसुविधायुक्त
प्रस्तावित प्रथम
दिगम्बर जैन भवन

महासभा

समाज के प्रतिष्ठित, धर्मनिष्ठ एवं दानवीर इस पुण्य ऐतिहासिक कार्य में ट्रस्टी बनकर सहभागी बनें

शिरोमणी ट्रस्टी ₹ 1 करोड़
डायमंड ट्रस्टी ₹ 51 लाख
गोल्डन ट्रस्टी ₹ 21 लाख
सिल्वर ट्रस्टी ₹ 11 लाख
ट्रस्टी ₹ 1 लाख 11 हजार

परस्परोपग्रहो जीवानाम्
परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्पूर्ण भारतवर्ष से केवल 1008 ट्रस्टी बनाए जाएंगे, जिनमें से अभी 400 ट्रस्टियों का चयन किया जा चुका है।

संपर्क सूत्र : 9810308841-9312210588

भवन की प्रमुख सुविधाएँ
- एयरपोर्ट से दूरी – 25 किलोमीटर / 45 मिनट
- नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से दूरी – 6 किलोमीटर / 15 मिनट
- स्टार सुविधाओं सहित ए.सी. हॉल, कमरे एवं भोजनशाला
- पारिवारिक कार्यक्रमों हेतु सगाई, जन्मदिन अन्य उत्सव
- ध्यान कक्ष एवं प्रवचन हॉल
- लिफ्ट की सुविधा | 24×7 पावर बैकअप
- शुद्ध जैन भोजन उपलब्ध (केवल दिन में)
- राणा प्रताप बाग मेट्रो स्टेशन के सामने स्थित

"जैन भवन हेतु प्रदत्त दान, संस्था की पात्रता अनुसार लागू कर 80G एवं CSR प्रावधानों के अंतर्गत लाभ हेतु मान्य होगा।"

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट

गजराज जैन गंगवाल	प्रकाश जैन बड़जात्या चेन्नई	पवन जैन गोधा	राजकुमार सेठी	शरद राज कासलीवाल	नवीन जैन बाहुबली एन्कलेव
(राष्ट्रीय अध्यक्ष)	(राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष)	(राष्ट्रीय महामंत्री)	(राष्ट्रीय महामन्त्री-तीर्थ)	(राष्ट्रीय महामंत्री-श्रुत)	(दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष)
9810900009	9840213132	7011983128	9339826125	9312210588	9810896979

सन् 1894 से निरंतर धर्म, समाज एवं संस्कृति की सेवा में समर्पित

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन
(धर्म - तीर्थ - श्रुत- महिला- युवा)
महासभा का पावन संकल्प

Arihant

जयपुर शहर के जनकपुरी के श्रद्धालुओं की सहभागिता से भक्तामर अनुष्ठान बना श्रद्धा, वात्सल्य और भक्ति का अनुपम संगम

राजाबाबू गोधा, फागी
संवाददाता (राजस्थान)

जयपुर, 10.09.26। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, मंगल विहार में चल रहे 48 दिवसीय भक्तामर अनुष्ठान के पैंतालीसवें दिन का आयोजन जनकपुरी के श्रद्धालुओं की सहभागिता से अत्यंत श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ, कार्यक्रम में धर्म जागृति संस्थान राजस्थान के अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि श्रमण आचार्य श्री 108 विभव सागर जी महाराज की सुयोग्य शिष्या श्रमणी आर्यिका 105 अर्ह श्री गुरु माँ के पावन सान्निध्य में हुए इस आयोजन में संघस्थ श्रमणी संस्कृत श्री माताजी एवं श्रमणी अरहन श्री माताजी का भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ। अनुष्ठान का शुभारंभ मूलनायक आदिनाथ भगवान के प्रथम अभिषेक एवं गुरु माँ के श्रीमुख से बीजाक्षर युक्त शांतिधारा के साथ हुआ। इसके पश्चात् श्रद्धालुओं ने विधि-विधान पूर्वक पूजन-अर्चन कर भक्तामर स्तोत्र के पाठ के साथ भगवान के चरणों में अपनी श्रद्धा समर्पित की, श्रेष्ठी पदम जैन बिलाला ने बताया कि पुण्यार्जक बँथली वाले पाटनी परिवार के पदम-उषा, अशोक-सजना, कमलेश-दीपा, मनोज्ञ, नितिन, सौरभ, अंकित , आशीष जैन सहित जनकपुरी के श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। आदित बिलाला, प्रकाश गंगवाल, सुनील सेठी, महेश काला, सोभाग अजमेरा, जिनेंद्र जैन, आशीष जैन, राजेश गर्ग सहित अनेक श्रद्धालुओं ने भी धर्मलाभ लिया, गुरु माँ के पावन सान्निध्य में पं. अमन शास्त्री द्वारा विधि-विधान पूर्वक प्राची-मनोज्ञ पाटनी का गर्भ संस्कार कराया गया। भक्तामर के श्लोकों की आध्यात्मिक महिमा का देवियों द्वारा प्रस्तुतीकरण तथा लव-कुश, नारायण, नाग-नागिन आदि पात्रों द्वारा की गई धर्म प्रभावना ने श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया, इस अवसर पर मंदिर समिति के अध्यक्ष अमित गोधा, मनोज जैन, विनय सोगानी, नवीन बिल्टीवाला एवं संजय जैन सहित समिति के पदाधिकारियों ने श्रद्धालुओं का स्वागत किया। रितेश जैन ने गुरु माँ के अनन्य भक्त पदम जैन बिलाला का समाज की ओर से सम्मान करते हुए आभार व्यक्त किया।

पाटनी परिवार के साथ दीपिका बिलाला सहित श्रद्धालुओं को गुरु माँ के रत्नयुक्त प्रासुक जल से पाद-प्रक्षालन एवं जिनवाणी भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरु माँ के आशीर्वाद एवं सान्निध्य में धर्मलाभ पाकर श्रद्धालुओं ने स्वयं को धन्य अनुभव किया। मंगल विहार में जनकपुरी के श्रद्धालुओं की सहभागिता से संपन्न यह भक्तामर अनुष्ठान श्रद्धा, भक्ति, वात्सल्य एवं धर्म प्रभावना का अनुपम संगम बन गया।

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
....
....
....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।